RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 मई 2025
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मई 2025
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 63 अंक : 03
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 88
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

सुविचार

सुविचार

हुक्मिगच्छीय श्री जगनाथ

राम चमकते भानु समाना

मनुष्य, वृद्ध माता-पिता से अलग हो जाता है। कैलेंडर से तारीख का कागज रोज हटा दिया जाता है, क्योंकि उसकी उसे जरूरत नहीं रही। तुम यदि बने रहना चाहते हो तो तुम्हें जरूरत का अंग बने रहना होगा।

जो पानी प्यास न बुझाए वो किस काम का?

दूसरों के सहयोग की अपेक्षा हमें कमजोर बनाती है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आगमवाणी

- चन्द्रकवेध्यक (66)

बहुयं पि सुयमहीयं
किं काही विणयविप्पहीणस्स?
अंधस्स जह पलित्ता
दीवसयसहस्सकोडी वि।।

जिस प्रकार लाखों-करोड़ों जलते हुए दीपक भी अंधे के लिए निरर्थक हैं, उसी प्रकार विनय रहित व्यक्ति का बहुत अधिक शास्त्रज्ञानी होने का भी क्या प्रयोजन? अर्थात् विनय रहित का शास्त्रज्ञानी होना भी निरर्थक है।

Just as thousands upon thousands lighted lamp are useless for the blind, so the great scriptural learning is useless for the person without humility.

- गच्छाचार (52)

गुरुणो छंदणुवित्ति,
सुविणीए जियपरीसहे धीरे।
ण वि थद्धे, ण वि लुद्धे,
ण वि गारविए विहगसीले।।

सुविनीत शिष्य गुरुजनों की आज्ञा का विनयपूर्वक पालन करता है तथा धैर्यपूर्वक परीषहों को जीतता है। वह न तो अभिमान करता है और न लोभ करता है। न गर्व करता है और न ही विवाद करता है।

The humble disciple humbly obeys the commands of his guru and patiently overcomes the hardships. He is not proud or greedy, haughty or argumentative.

- गच्छाचार (53)

खंते दंते गुत्ते मुत्ते
वेरग्गमग्गमल्लीणे।
दसविहसामायारी-
आवस्सग-संजमुज्जुत्ते।।

सुविनीत शिष्य क्षमाशील, इंद्रियों को जीतने वाला, स्व-पर की रक्षा करने वाला होता है और वैराग्य मार्ग में लीन रहता है। वह दस प्रकार की समाचारी का पालन करता है तथा आवश्यक क्रियाओं में संयमपूर्वक लगा रहता है।

The humble disciple is forgiving, sense-restrained, protective and detached. He abides by the ten types of monastic routines and observes six essential daily activities regularly.

- उत्तराध्ययन (1/7)

तम्हा विणयमेसिज्जा
सीलं पडिलभेज्जओ।
बुद्धपुत्त नियागट्ठी न
निक्कसिज्झइ कण्हुई।।

भद्र पुरुष विनय का आचरण करे, जिससे कि उसे शील की प्राप्ति हो। प्रबुद्ध आचार्य का ऐसा शिष्य कहीं भी अपमानित नहीं होता।

In order to gain righteousness one must behave humbly. Such a humble disciple of an enlightened guru is not driven out from anywhere.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

हुशिउचौ श्री जगनाना ©
राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

09 धर्म-विचार
- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

16 विश्वशांति का मूल
- आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा.

17 पर्यावरण सुरक्षा
- आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

21 धर्म में पुरुषार्थ की आवश्यकता
- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

27 आध्यात्मिक आरोग्यम्
- संकलित

31 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला
- कंचन कांकरिया

33 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र
- सरिता बैंगानी

विविध

59 गुरुचरण विहार समाचार
- महेश नाहटा

संस्कार सौरभ

36 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी
- संकलित

40 कैसे लाएँ सकारात्मक विचार
- दिलीप गांधी

42 तप का बहुआयामी महत्व
- डॉ. दिलीप धींग

44 व्यस्त जीवन में सरल धर्म साधना
- ईशिता बंब

46 सकारात्मक सोच
- संदीप गाँधी (रुचील)

47 खुशियों का खजाना है...
- पदमचंद गांधी

51 अनुप्रेक्षा : स्वाध्याय आराधना...
- डॉ. बी. रमेश गादिया (जैन)

53 करणी सागर रो पाणी पी...
- कमला देवी सांड

54 सम्यक् तप : एक उत्कृष्ट मंगल
- गणेशलाल डूंगरवाल

57 सकारात्मकता : आनंदमय...
- डॉ. इंद्रा जैन

भक्ति रस

52 आत्म-तुला
- संध्या धाड़ीवाल

56 निष्काम भक्ति
- ललित कटारिया

जब सत्ता तुच्छ स्वार्थों को साधने में संलग्न हो जाती है तब उससे महत्वपूर्ण साध्यों की अपेक्षा करना व्यर्थ है। सत्ता वह सार्थक होती है जो सबके हित को साधने में तत्पर रहती है। सत्ता का लाभ किसी व्यक्ति या समुदाय तक सीमित नहीं होना चाहिए। उसका लाभ अंतिम पंक्ति तक पहुँचना चाहिए।

सत्ता का गर्व करना नासमझी है। सत्ता का कोई पता नहीं वह आज है, कल किसके हाथों चली जाए। सत्ता प्राप्ति के बाद भी अपनी सात्विकता को गुम नहीं होने देना चाहिए। यदि दोनों में से किसी एक को चुनना हो तो सात्विकता को ही चुनना।

सत्ता का उपयोग सम्पत्ति बटोरने के लिए नहीं होना चाहिए। उसका सही उपयोग सेवा है। यदि सत्ता मिली है तो जन-जन की सेवा में उसका उपयोग करो। ऐसा करना बहती गंगा में हाथ धोने के समान है।

सत्ता को पकड़ने का प्रयत्न मत करना। तुम्हारा व्यवहार ऐसा हो कि सत्ता घूम-फिर कर तुम्हारे ही पास आए। तुम यदि उसे ठुकराओ तब भी वह तुम्हें ही चाहे। तुम उसकी चाह मत करना। तुम चाहने लगोगे तो वह दूर भागने लगेगी।

सत्ता यदि प्राप्त हो तो सावधान रहना जरूरी है। सत्ता वह दलदल है जिसमें लोग फँस जाया करते हैं। सत्ता में घुसना जानते हो तो उससे निकलने का गुर भी आना चाहिए। सत्ता में फँसकर स्व-सत्ता विस्मृत न हो जाए।

सत्ता के लिए सत्व का होना जरूरी है। यदि सत्व नहीं होगा तो सत्ता हावी हो जाएगी। सत्वशील व्यक्ति सत्ता को अपने पर हावी नहीं होने देता। सत्ता जब व्यक्ति पर हावी हो जाती है तो वह उसे बावला बना देती है।

सत्ता के सौन्दर्य को देखो तो उसकी कुरूपता को भी देखना। ऐसा न हो कि केवल उसके सौन्दर्य में ही मुग्ध रह जाओ। सत्ता का जितना सौन्दर्य है, उसकी कुरूपता उतनी ही बदतर है।

कार्तिक शुक्ल 3, शनिवार, 14-11-2015 — साभार- ब्रह्माक्षर

चिंतन पराग

सत्ता-सप्तक

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

When power gets pre-occupied with serving selfish ends, it is futile to expect it to attain any significant goals. That power is worthwhile which is intent on securing the weal of all. The profits of power should not be limited to an individual or a community. It must reach the last mile.

Arrogance of power is folly. There is no knowing when power will desert you and slip away into another pair of hands. Even after securing power, let not your piety evanesce. If you would choose one of the two, opt for piety.

Power may not be used to amass wealth. Its rightful use is service. If you have come into power, employ it in the service of the public at large. It will be the equivalent of washing your hands in the flowing waters of the Ganga.

Do not strive to clutch at power. Your conduct should be such that power comes round to you again. Even if you spurn it, it will love you. You may not hanker after it though. Should you fall for it, it will flee from you.

If you get power, it is necessary to be cautious. Power is the quagmire in which people get stuck. If you can inveigle your way to power, you must know the trick of easing yourself out of it. Entrapped by power, do not lose sight of the power of self.

To wield power, it is necessary to have 'satva' (say, wisdom and purity). If 'satva' is wanting, power will domineer. One endowed with 'satva' will not allow power to dominate over him. When power predominates, it makes the person crazy.

When you perceive the beauty of power, look at its ugly side too. Take care lest you should be bewitched by its beauty. No matter how fascinating power might be, its ugliness is more awful.

Saturday, 14-11-2015 **Courtesy- Brahmakshar**

Chintan Parag

THE SEPTET OF POWER

- Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

सुनहरी कलम से...

वैचारिक युद्ध से भी कर्म बंध संभव

भारत देश के संविधान में धर्म निरपेक्षता को प्रधानता दी गई है, लेकिन धर्म निरपेक्षता से भी अधिक तो हमारा देश अहिंसा प्रधान देश है। भगवान महावीर का उपदेश **'जीओ और जीने दो'** मात्र प्रचार तक ही सीमित न रहकर हमारे आचार एवं विचार में इकसार हो चुका है।

संपूर्ण वैश्विक परिस्थितियों की बात करें तो आज विश्व के कई देश एक-दूसरे से परस्पर संघर्ष में उलझकर युद्ध की स्थिति में पहुँच चुके हैं और ऐसे युद्ध का परिणाम भयंकर हिंसा एवं नाश के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। हाल ही में रूस व यूक्रेन तथा इजरायल व फिलीस्तीन के बीच चल रहा युद्ध अभी तक शांत नहीं हुआ है। इन दोनों युद्धों में बड़े पैमाने पर आधुनिकतम हथियारों का उपयोग किया गया, जिनसे कई शहरों का नामो-निशान तक मिट गया और भारी जनहानि हुई।

ये विचार लिखे जाते समय हमारा अहिंसक देश भी ऐसे ही एक युद्ध के लिए मजबूर हो गया। न चाहते हुए भी आत्मरक्षा, देश की संप्रभुता एवं धर्म की रक्षा के लिए हथियार उठाना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि अहिंसा की आड़ में अत्याचार एवं अन्याय सहन कर लेना अहिंसा नहीं, कायरता ही कहलाती है।

इतिहास पढ़ा जाए तो पता चलता है कि ऐसे कई राजा हुए हैं, जो भगवान महावीर के उपासक थे, फिर भी उन्होंने कई युद्ध लड़े। ऐसे राजाओं में एक राजा ऐसा भी था, जो युद्ध में जाने से पहले अपनी सेना की तलवारों एवं अन्य अस्त्र-शस्त्रों को पूंजनी से पूँज लिया करता था, ताकि उन पर रहे छोटे-छोटे जीवों की घात न हो।

जिन तलवारों पर रहे छोटे-छोटे जीवों की रक्षा के लिए उन्हें पूँजा जाता था, उन्हीं तलवारों से युद्ध में मनुष्य जैसे पंचेंद्रिय जीवों को मार दिया जाता था। विचार आता है कि छोटे जीवों की यह यतना बड़े जीवों की घात के समक्ष क्या कही जाएगी?

यह सच्ची यतना है, वास्तविक यतना है, जिसमें जीवरक्षा के भाव हैं। उन छोटे जीवों की घात अनावश्यक हिंसा है, जबकि शत्रु सेना की घात युद्ध में कर्तव्य दृष्टि से आवश्यक हो जाती है। वैसे भी युद्ध को एकांत गलत या अनुचित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कुछ परिस्थितियों में युद्ध अनिवार्य हो जाता है। हालाँकि युद्ध किसी स्थिति का पूर्ण समाधान नहीं होता।

आज भारत-पाकिस्तान के बीच ऐसी ही युद्ध की स्थिति बनी हुई है, जिसमें जल, थल, वायु, तीनों तरह की सेनाएँ युद्धरत हैं। देश का हर नागरिक युद्ध में शामिल नहीं होता, लेकिन सबके मन में अपने देश की विजय के भाव एवं कल्पना अवश्य रहती है। मन के ऐसे भावों के बीच हमें कुछ विवेक रखना चाहिए, जिससे हम व्यर्थ के कर्मबंध से बचे रह सकें।

कर्म का बंध मन, वचन, काया के योग से होता है। युद्ध करने वाले कर रहे हैं, उनके मन में शत्रु सेना के प्रति निजी वैरभाव होना जरूरी नहीं है। कर्तव्य पालन, अपने देश की रक्षा का उद्देश्य मुख्य होता है। अत: उनके कर्मबंध होना निश्चित नहीं कहा जा सकता। लेकिन हम घर बैठे ही युद्ध के समाचार पढ़-सुनकर ही अनुमोदना कर देते हैं। हमारी सेना द्वारा किए गए हमले में शत्रु सेना की हानि, उनकी घात की अनुमोदना करके हम प्रसन्न हो जाते हैं और कभी हमारी सेना द्वारा कमजोर प्रदर्शन की खबर से हमारे मन में ऐसे भी विचार आ जाते हैं कि अब तो समय आ गया है कि हमें जोरदार हमला कर देना चाहिए। दुश्मन देश एवं उसकी सेना का नामो-निशान मिटा देना चाहिए। ऐसी कई तरह की कल्पनाएँ हमारे मन में आ जाती हैं। एक तरह से ऐसे समय में हम घर बैठे-बैठे ही एक मानसिक या वैचारिक युद्ध कर रहे होते हैं और ऐसा वैचारिक युद्ध हमारे लिए कर्मबंध का कारण बन सकता है। इस तरह हिंसक विचारों के बीच बँधे हुए कर्म हमें कहाँ ले जाएँगे, कह नहीं सकते। इसलिए ऐसे समय में हमें बड़ा विवेकशील रहना चाहिए।

हर देशप्रेमी के लिए अपने देश की विजय एवं हित का सपना संजोना स्वाभाविक है, लेकिन अपने हित के भाव के बीच अन्य के अहित के विचार नहीं आने चाहिए। हमारे द्वारा ऐसे विचार करने मात्र से कुछ हो नहीं जाएगा। हमारी सेना जो कह रही है, उसी के अनुसार परिणाम होंगे, लेकिन ऐसे विचारों से हमारा कर्मबंध होगा ही। अत: ऐसी स्थिति में अगर हम तटस्थ बने रहेंगे तो कर्मबंध से बचे रह सकते हैं।

प्रसन्नचंद्र राजर्षि, जिन्होंने राजपाट का त्याग करके संयम ग्रहण कर लिया एवं कठोर साधना में लीन हो जाते हैं। ध्यान की अवस्था में ही युद्ध विषयक समाचार सुनकर वे वैचारिक, काल्पनिक युद्ध करने लगते हैं। तन तो स्थिर खड़ा है, साधनारत है, लेकिन मन? वह तो युद्ध में लीन है और शत्रु सेना का संहार करते जा रहा है। ऐसे ही वैचारिक, मानसिक युद्ध से उनकी आत्मा का पतन होते-होते पहली नरक से क्रमश: सातवीं नरक का कर्मबंध कर लेते हैं।

सोचें, उन्होंने अपनी काया से युद्ध किया? नहीं। वचन से युद्ध जैसी चर्चा भी की? नहीं। लेकिन केवल वैचारिक युद्ध से सातवीं नरक तक का बंध कर लिया। यानी यह है मन के विचारों का प्रभाव, जो कहाँ से कहाँ ले जाने वाला बन सकता है। जब उनके मन के विचारों में परिवर्तन आता है तो विचार करने लगते हैं कि मैं तो एक साधु हूँ, राजपाट का तो त्याग कर चुका हूँ, फिर ये युद्ध कि आवश्यकता क्यों? मुझे युद्ध से क्या मतलब? विचार ऊर्ध्वगामी बनते गए और ऐसे विचारों के बीच उसी स्थान पर कुछ ही समय में केवलज्ञान, केवलदर्शन प्राप्त हो गया।

सातवीं नरक एवं केवलज्ञान के बीच कितना अंतर था? मात्र कुछ विचारों का ही तो अंतर था। मन के विचार ही तो सातवीं नरक का कारण बने और मन के विचार ही केवलज्ञान में सहायक बने।

अत: हम इतना विवेक अवश्य रखें कि ऐसी स्थितियों में हमारे विचारों में हिंसा न आए। हमारे विचारों से युद्ध की कार्यवाही या परिणाम में बदलाव नहीं आ सकता, लेकिन हमारे भव-भव में बदलाव अवश्य आ सकता है। अत: अपने वर्तमान भव को हिंसक विचारों से मुक्त रखें और व्यर्थ कर्मबंध से सुरक्षित रहें।

– सह-संपादिका

धर्मदेशना

धर्म विचार

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

आज कुछ लोगों को धर्म अनावश्यक एवं भाररूप प्रतीत होने लगा है। किन्तु यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि उन्होंने धर्म के ठीक स्वरूप को समझा नहीं है। वास्तव में धर्म के बिना जीवन भी नहीं टिक सकता। आज के युवक सुधार करना चाहते हैं, पर धर्म की सहायता के बिना सुधार होना संभव नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र में धर्म की आवश्यकता है।

आज धर्म को भाररूप मानने का एक कारण यह भी है कि लोग धर्म का फल रुपये की भाँति तत्काल और प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं। वे यह दलील देते हैं कि धर्म का फल यदि परलोक में मिलता है तो उससे हमें क्या लाभ? यहाँ जैसे एक रुपये का सवा रुपया किया जा सकता है और उससे आनन्दोपभोग किया जा सकता है, इसी प्रकार का लाभ यदि धर्म से भी मिले तो उसे लाभ कहना चाहिए, अन्यथा वह निरा भार ही है। इस प्रकार धर्म को लोग भारस्वरूप समझते हैं, किन्तु यह विचारने का कष्ट नहीं उठाते कि जीवन में धर्म का उपक्रम किए बिना तो मनुष्य का जीवन ही संस्कारहीन बन जाएगा। किसी मनुष्य से शरीर पर कपास लपेटने के लिए कहा जाए तो वह उसे स्वीकार नहीं करेगा किन्तु उसी कपास से रूई ऑट कर, सूत बनाकर कपड़ा बना दिया जाए और उसे सुन्दर रूप में सिल दिया जाए तो वही कपास शरीर पर धारण किया जा सकता है। इसी प्रकार बालक का जन्म होने पर संस्कार-उपक्रम न किया जाए तो उसका जीवन कच्चे कपास की तरह असंस्कारी ही बना रहेगा। ज्ञानीजन कहते हैं कि राग के समान कोई जुल्मी नहीं है। कितने लोग माता-पिता कहलाकर फूले नहीं समाते, किन्तु राग के वश होकर अपने बालकों को ऐसे संस्कारहीन कर देते हैं कि आगे चलकर वे ही बालक भारस्वरूप जान पड़ते हैं। कच्चे कपास की तो थोड़ी-बहुत कीमत उपजती है किन्तु संस्कारहीन संतान को संसार में कोई टके सेर भी नहीं पूछता। इस प्रकार धर्म का उपक्रम किए बिना जीवन का सुधार नहीं हो सकता। धर्म मानव-जीवन का सार है।

धर्म के नाम पर

जहाँ धर्म के नाम पर खून-खराबा हो, वहाँ यही समझना चाहिए कि धर्म के नाम पर ढ़ोंग प्रचलित है। सच्चा धर्म अहिंसा और सत्य आदि हैं। अहिंसा के कारण कहीं खून-खराबा नहीं हो सकता। इसके पालन में भी कहीं किसी का मतभेद नहीं है। सच तो यही है कि लोगों के हृदय विकार से भरे हुए हैं और जब उन्हें कोई दूसरा आधार नहीं मिलता तब वे धर्म के नाम पर सिर फुटौवल मचाने लगते है। वास्तव में कोई भी धर्म परस्पर लड़ने-झगड़ने या दूसरे को दु:ख देने की आज्ञा नहीं देता। ऐसा होते हुए भी दूसरों को दु:ख देना धर्म संबंधी अज्ञानता को प्रकट करना है। इस प्रकार बुद्धि में

विचित्रता को मिटाने के लिए परमात्मा की शरण में आओ। भगवान सुविधिनाथ की शरण में जाने पर बुद्धि की यह विचित्रता नष्ट हो जाएगी।

धर्म : एक ध्येय

धर्म के संबंध में अनेक महात्माओं ने धर्मग्रन्थों द्वारा अपना-अपना मन्तव्य प्रकट किया है। यही नहीं, जगत् में जो-जो महान पुरुष हुए हैं. उन्होंने भी धर्म का ही उपदेश दिया है और धर्म का ही समर्थन किया है। ये लोकोत्तर पुरुष धर्म के कारण ही लोकोत्तर पुरुष के रूप में प्रसिद्ध हैं।

इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न हुए तीर्थंकरों को हम लोग इसलिए पूजते हैं कि उन्होंने धर्मजागृति की थी। धर्म का पथ निष्कंटक बनाने के लिए उन्होंने अपना अमूल्य जीवन समर्पित कर दिया था। धर्मजागृति के लिए ही उन्होंने राजपाट और कुटुम्ब परिवार का त्याग किया था। धर्मजागृति के लिए ही उन्होंने परीषह-उपसर्ग सहे थे और काम शत्रु पर विजय प्राप्त की थी। तात्पर्य यह है कि जगत् के इतिहास में जितने लोकोत्तर महापुरुष हुए हैं उन्होंने धर्मस्थापना, धर्मप्रचार एवं धर्मजागृति के लिए ही अपना जीवन उत्सर्ग किया है।

धर्मश्रद्धा का कारण

जब मिथ्यात्व का अन्त होता है तभी दर्शन की आराधना हो सकती है। मिथ्यात्व की मौजूदगी में सम्यग्दर्शन की आराधना असंभव है। रोगी को, रोग की मौजूदगी में दिया हुआ पौष्टिक भोजन भी लाभदायक सिद्ध नहीं होता। यही नहीं, प्रत्युत अपथ्य होने के कारण अहितकर होता है। अतएव भोजन को पथ्य एवं हितकर बनाने के लिए सर्वप्रथम शरीर में से रोग को हटाना आवश्यक है। इसी प्रकार जब तक आत्मा में मिथ्यात्व रूपी रोग विद्यमान है तब तक दर्शन की आराधना शक्य नहीं है। जब मिथ्यात्व का कारण मिट जाएगा तभी सम्यग्दर्शन की आराधना हो सकेगी। मिथ्यात्व को हटाना और सम्यग्दर्शन की आराधना करना अपने हाथ की बात है। अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया तथा लोभ न रहने से मिथ्यात्व भी नहीं रह सकता। इस प्रकार इस कषाय को दूर करने से मिथ्यात्व दूर हो जाएगा। विशुद्ध दर्शन की आराधना करने वाले को शक्र भी धर्म से विचलित नहीं कर सकता। यही नहीं, जैसे अग्नि में घी की आहुति देने से अग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित होती है, उसी प्रकार धर्मश्रद्धा से विचलित करने के लिए किये गये समस्त प्रयत्न धर्मदृढ़ता का कारण बन जाते हैं।

धर्म पर दृढ़ता

सच्चा धर्म-श्रद्धालु पुरुष किस प्रकार धर्म पर दृढ़ रहता है, यह जानना हो तो कामदेव श्रावक का चरित्र देखो। कामदेव श्रावक पर पिशाच रूपधारी देव कुपित हुआ। उसने कामदेव को बहुत-से कटुक वचन कहे। पिशाच ने कहा—''हे अप्रार्थित प्रार्थी! तू अपना धर्म त्याग अन्यथा अभी तुझे तलवार से मौत के घाट उतार दूंगा।'' यह सुनकर कामदेव सोचने लगा—''पिशाच मुझे अप्रार्थित प्रार्थी अर्थात् अनिष्ट को इष्ट मानने वाला कहकर सम्बोधित करता है, सो वह अपनी समझ के अनुसार ठीक कह रहा है। यह पिशाच है। धर्म इसे अनिष्ट जान पड़ता है, इसलिए वह ऐसा कहता है। पर मैं धर्म को इच्छनीय, आदरणीय और अनुकरणीय मानता हूँ। मुझे क्यों बुरा मानना चाहिए? धर्म इसे अवांछनीय प्रतीत होता है, इसी कारण इसने ऐसा भयंकर रूप बनाया है। धर्म के अभाव में इसकी दशा कितनी दयनीय है?''

कामदेव श्रावक अठारह करोड़ स्वर्ण-मोहरों का और अस्सी हजार गायों का स्वामी था। फिर भी उसमें ऐसी दृढ़ता एवं सहनशीलता थी। कामदेव अपनी दृढ़ता के कारण पिशाच से जरा भी भयभीत न हुआ। आखिर उसने पिशाच को भी देव रूप बनाकर छोड़ा।

जब तुम्हारे अन्त:करण में ऐसी दृढ़ता उत्पन्न हो तो समझना कि अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ का तुमने नाश कर दिया है और धर्म एवं संवेग तुम्हारे भीतर जीते-जागते विद्यमान हैं। तुम्हें जीवन में धर्म को मूर्त रूप देने का अवसर मिला है तो उसे सफल कर डालो। कल्याण करने का यही अपूर्व अवसर है।

धर्मज्ञान की न्यूनता

आज धर्ममार्ग में ज्ञान की न्यूनता देखी जाती है। तुम्हारे बालक श्रावककुल में जन्मे और उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया, परन्तु धार्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया अर्थात् जीव-अजीव का भेद भी नहीं समझा, तो ज्ञान संबंधी यह कितनी बड़ी कमी है? अगर तुम प्रयत्न करो तो उनका व्यावहारिक ज्ञान ही आध्यात्मिक ज्ञान में परिणत हो सकता है।

कोरे व्यावहारिक ज्ञान से आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता। आत्मा के कल्याण के लिए आध्यात्मिक ज्ञान अपेक्षित है। अतएव अगर तुम अपने बालकों को शांति पहुँचाना चाहते हो, उनके भावी जीवन को शांत, सुखी, संतोषमय और समग्र बनाना चाहते हो तो उनके लिए यथोचित अध्यात्मज्ञान का आयोजन करो। आध्यात्मिक ज्ञान से ही आत्मा अपना कल्याण-साधन कर सकता है; किया है और कर सकेगा। अतएव अपने बालकों के लिए धार्मिक ज्ञान की व्यवस्था करना माता-पिता का परम कर्तव्य है। धार्मिक ज्ञान जीवन की अनिवार्य खुराक बनना चाहिए।

वीरों का धर्म

आज आपको चाहे यह कल्पना न आती हो, मगर सत्य यही है कि यह धर्म वीर क्षत्रियों का है। यह कायरों का धर्म नहीं है। वीर क्षत्रिय मस्तक न झुकाने के लिए बड़े-बड़े संग्राम कर बैठे हैं। उनकी तलवारें म्यान में से बाहर निकल आती हैं। मस्तक न झुकाने के लिए महाराणा प्रताप अठारह वर्ष तक राजधानी छोड़ जंगल जंगल घूमते फिरे। उनकी महारानी पद्मावती को आटा तैयार करने के लिए अपने हाथ से चक्की चलानी पड़ी।

धर्म वीरता से निभता है। हमारे पूर्वज इस धर्म को मानते आए हैं या वंश-परम्परा से वन्दना नमस्कार करते आए हैं, इसलिए हमें भी वन्दना नमस्कार करना पड़ेगा। इस प्रकार की लाचारी से अगर आप धर्म को मानते हैं तो इस भावना को मैं निर्बल भावना कहूंगा। निर्बल भावना एक प्रकार की दीनता है, लाचारी है और अशक्ति का चिह्न है। निर्बल भावना वाला पुरुष धर्म का पालन नहीं कर सकता। धर्म हृदय के प्रेम से पाला जाता है। सच्चा धर्म वही है, जो अन्तरतम से उद्भूत होता है। जिस बाह्य क्रिया के साथ मन का मेल नहीं है, जो सिर्फ परम्परा का पालन करने के लिए की जाती है या प्रतिष्ठा के मोह से की जाती है, वह ठीक फल नहीं दे सकती।

अत्याचार सहना कायरता नहीं

तुम कह सकते हो - चुपचाप गालियाँ सहन कर लेना और मारने वाले अत्याचारी के सामने भोली-भाली गौ बन जाना, उसका मुकाबला न करना, एक प्रकार की कायरता है। क्या हमें कायर बन जाना चाहिए? कायर बन जाने से तो अत्याचारी का हौंसला बढ़ेगा और जगत में अत्याचार का नंगा नाच होने लगेगा। इस प्रकार परोक्ष रूप से हम चुप्पी साधकर अत्याचार की उत्तेजना में सहायक हो जाएंगे।

यह कथन वास्तव में भूल भरा है। सहिष्णुता कायरता का चिह्न नहीं वरन् वीरता का फल है। उत्तेजना का प्रसंग उपस्थित होने पर अन्त:करण की निर्बल वृत्तियों पर विजय प्राप्त करके स्वाभाविक शांति को सुरक्षित रख पाना साधारण व्यक्ति का काम नहीं है। अपने ऊपर संयम का अंकुश रखना विजेताओं का धर्म है। बाढ़ आने पर नदी के प्रवाह में सभी बह सकते हैं, पर अचल-अटल रहने वाले बिरले ही होंगे। इसी प्रकार उत्तेजना की आग में जल मरने वाले संसार में बहुत हैं और उस आग पर शांति का शीतल नीर छिड़कने वाले इने-गिने ही निकलेंगे। ये इने-गिने सत्वशाली पुरुष ही जगत् के पथ-प्रदर्शक होते हैं। इन्हीं पुरुषों के सहारे संसार को स्वर्ग बनाने वाले सद्गुण टिके हैं।

यह कहना कि चुपचाप अत्याचार सहने से अत्याचारी को उत्तेजना मिलती है और अत्याचार बढ़ते हैं- सर्वथा विपरीत धारणा है। अत्याचार से अत्याचार का सामना करने से अत्याचारों की परम्परा चल पड़ती है। जैसे रुधिर की शुद्धि रुधिर से नहीं हो सकती, उसी

प्रकार अत्याचार से अत्याचार का शमन नहीं हो सकता। आग को ईंधन न मिले तो वह जल्दी बुझ सकती है। इसी प्रकार अत्याचार को अत्याचार का ईंधन न मिलने से वह शांत हो जाता है।

साम्प्रदायिक भेदभाव

लोगों में साम्प्रदायिक भेदभाव इतना अधिक घुसा हुआ है कि उसने कदाग्रह का रूप धारण कर लिया है। इससे भक्ति का ह्रास हो रहा है। बहुत-से लोग सम्प्रदाय या पंथ के नाम पर लड़कर खून-खराबा करने में आनन्द मानते हैं। संसार का कोई भी पंथ इस प्रकार के आचरण का विधान नहीं करता। यही नहीं, वरन् एक या दूसरे रूप में सभी पंथ इसका विरोध करते हैं। अगर लोग अपने-अपने सम्प्रदाय की सुशिक्षाओं पर ही ध्यान दें तब भी उन्हें विदित हो जाएगा कि वे अपने सम्प्रदाय की रक्षा के लिए जो व्यवहार दुराभिनिवेश के वश होकर करते है, उससे सम्प्रदाय की रक्षा नहीं होती किन्तु उसका पतन होता है और उसकी जड़ खोखली बनती है। इस प्रकार वे अपने ही सम्प्रदाय के शत्रु बन जाते हैं। ऐसे लोग अपने पंथ की प्रतिष्ठा को कलंकित करते हैं।

धर्म के लिए त्याग

प्रत्येक धर्मसेवक का कर्तव्य होता है और उसे यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि जिस धर्म को उसने गले का हार बनाया है. अपने आत्मा का आभूषण समझा है. जिस धर्म से अनन्त सुख और अक्षय शांति प्राप्त होने का उसे विश्वास है, उस धर्म के लिए किसी भी प्रिय से प्रिय वस्तु को न्योछावर करने से वह पीछे न हटे। जो धर्म को विशेष और सर्वाधिक कहता है मगर धर्म के लिए किसी वस्तु का त्याग करने में संकोच करता है, समझना चाहिए कि उसने धर्म का महत्व नहीं समझा है।

धर्म प्रचार

कई लोग तलवार से धर्म का प्रचार करना चाहते हैं। यही क्यों, बल्कि इतिहास से पता चलता है कि ऐसे अनेक प्रयत्न किये भी गये हैं। कोई-कोई लोभ के जाल में फाँसकर गरीब लोगों को उनका धर्म छुड़ाकर अपने धर्म में दीक्षित करना चाहते हैं। आज भी इस प्रकार के प्रयत्न चालू है और बहुत-से भारतीय लोभ के चंगुल में फँसकर विधर्मी बनते जा रहे हैं। लेकिन श्रावक कभी भूलकर भी इस प्रकार के कुत्सित प्रयास नहीं करता। वह न तो तलवार के जोर से किसी को अपने धर्म में सम्मिलित करता है, न प्रलोभन देकर ही। वह अधर्मी के प्रति करुणाशील बनकर, वत्सलता द्वारा अपने धर्म को प्रकाशित करता है। वह सेवा, दान, परोपकार आदि प्रशस्त आचरण के द्वारा अपने धर्म का उद्योत करता है।

हिंसा अगर अधर्म है तो हिंसक उपायों से किसी को धार्मिक कैसे बनाया जा सकता है? इसी प्रकार लोभ पाप है तो लोभ में फँसाकर दूसरे को धार्मिक नहीं, वरन् पापी बनाया जा सकता है। अतएव श्रावक ऐसे तरीकों को व्यवहार में नहीं लाता।

धर्मनिष्ठ

धार्मिक व्यक्ति सदैव अपनी त्रुटियों पर निगाह रखता है और आत्मा में तनिक-सी त्रुटि नजर आने पर यही कहता है कि मैं अधम हूँ। अगर मैंने पहले बुरे काम न किये होते, अगर मैंने परमात्मा से पूरी लौ लगाई होती तो मुझ में तुच्छ पदार्थों के लिए दु:ख की अनुभूति क्यों होती? निस्सार एवं जड़ पद के लिए क्यों मैं दु:खी होता? उनका वियोग होने पर शोक से संतप्त क्यों होता? इन पदार्थों के चले जाने पर मेरा क्या जाता है? मैं इनके लिए दु:खी क्यों बनूँ? मैं अपने निकाय को भूलकर बाहरी विनश्वर और विपदाजनक राज्य की अभिलाषा क्यों करता? मुझमें ये सब निर्बलता विद्यमान हैं। अतएव प्रकट है कि मैं अधम हूँ।

धर्म और धर्मभ्रम

आप धर्म को जीवों का कल्याण करने वाला प्रकट करके उसकी प्रशंसा करते हैं, मगर यदि धर्म का

इतिहास देखा जाए तो प्रतीत होगा कि धर्म के कारण जो अत्याचार और जुल्म किये गये हैं, वैसे शायद ही अन्य किसी कारण किये गये हों। इतिहास स्पष्ट बतलाता है कि धर्म के कारण बड़े से बड़े अत्याचार और घोर से घोर अन्याय किये गये हैं। ऐसी स्थिति में जिस धर्म के कारण ऐसे अन्याय और अत्याचार किये जाते हैं, उस धर्म की जगत् को क्या आवश्यकता है? कितने लोग दो कदम आगे बढ़कर इन्हीं युक्तियों के आधार से यहाँ तक कहते नहीं हिचकते कि धर्म और ईश्वर का बहिष्कार कर देना चाहिए। उनका यह भी कथन है कि संसार में यदि ईश्वर और धर्म न होता तो अधिक आनन्द-मंगल होता। मगर ईश्वर और धर्म ने तो इतने जुल्म ढाये हैं कि इतिहास के पन्ने रक्त से रंगे हुए हैं। हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, जैन, वैष्णव आदि के बीच धर्म के नाम पर बड़े-बड़े युद्ध लड़े गये हैं और खून-खराबे हुए हैं। धर्म के नाम पर ऐसे-ऐसे अनर्थ हुए सुने जाते हैं कि न पूछिये बात। इंग्लैण्ड में मैरी नाम की एक रानी हो हुई थी। उसमें धर्म का इतना अभिनिवेश था कि कदाचित् कोई ईसाई धर्म के विरुद्ध कुछ बोलता तो वह उसे जिन्दा ही आग में झोंक देने में भी संकोच नहीं करती थी। औरंगजेब ने भी धर्म के नाम पर अमानुषिक अत्याचार किया था। इस प्रकार धर्म के नाम पर अनेक प्रकार के अत्याचार, अन्याय, सितम, जुल्म किये गये हैं। धर्म के कारण ही रामचन्द्र जी को अयोध्या का राज्य त्याग करके वन में भटकना पड़ा था। धर्म के नाम पर ही रामचन्द्र जी ने सीता की अग्नि परीक्षा की थी। धर्म के कारण ही द्रौपदी को वनवास स्वीकार करना पड़ा था। धर्म के कारण ही पाण्डवों को तरह-तरह की तकलीफें झेलनी पड़ी थी। धर्म के कारण ही नल-दमयन्ती को भी असह्य कष्ट सहन करने पड़े थे। इस प्रकार धर्म के कारण सबको कष्ट सहने पड़े हैं।

इस प्रकार धर्म की निन्दा करते हुए लोग कहते हैं कि धर्म से दुनिया को बहुत कष्ट हैं। कुछ लोग इतने में ही संतोष न मानकर धर्म और ईश्वर के बहिष्कार का बीड़ा बड़े जोश के साथ उठा रहे हैं।

जो लोग धर्म और ईश्वर को इस प्रकार त्याज्य समझते हैं उनसे जरा पूछा जाए कि संसार में जो अन्याय, अत्याचार किया गया है उसका वास्तविक कारण क्या धर्म, धर्मांधता है? अगर इस प्रश्न पर शांति के साथ तटस्थभाव से विचार किया जाए तो धर्म और धर्मान्धता का अन्तर स्पष्ट दिखाई देने लगेगा। धर्म के नाम पर प्रकट किये जाने वाले भूतकालीन और वर्तमानकालीन अत्याचार और जुल्म धर्मभ्रम या धर्मान्धता के कारण ही हुए और हो रहे हैं। धर्म तो सदा-सर्वदा सर्वतोभद्र ही है। जहाँ धर्म है वहाँ अन्याय एवं अत्याचार पास ही नहीं फटक सकते। साथ ही जिस धर्म के नाम पर अन्याय एवं अत्याचार होता है वह धर्म ही नहीं है। वह या तो धर्मभ्रम है या धर्मान्धता है। शास्त्र स्पष्ट शब्दों में कहता है-

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।

- दश. 1/1

अर्थात् अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म सदा मंगलमय है, कल्याणकारी है। जो लोग जीवन में धर्म की अनावश्यकता महसूस करते हैं, उन्होंने या तो धर्म का स्वरूप नहीं समझा है या धर्मभ्रम को ही धर्म समझ लिया है।

धर्म और धर्मभ्रम में आकाश-पाताल जितना अन्तर है। गधे को सिंह की चमड़ी पहना दी जाए तो गधा कोई सिंह नहीं बन जाएगा। भले ही सिंह-वेषधारी गधा थोड़े समय के लिए अपने-आप को सिंह के रूप में प्रकट करके खुश हो ले, पर अन्त में तो गधा, गधा सिद्ध हुए बिना रहने का नहीं। इसी प्रकार धर्मभ्रम और धर्मान्धता को भले ही धर्म का चोगा पहना दिया जाए, लेकिन अन्त में धर्मभ्रम का क्षय और धर्म की जय हुए बिना नहीं रह सकती।

धर्म को धर्मभ्रम और धर्मभ्रम को धर्म मान लेने के कारण बड़ी गड़बड़ी मची है। सुवर्णकार मिट्टी में मिले स्वर्ण को ताप के द्वारा मिट्टी से अलग

निकालता है, इसी प्रकार विवेकीजनों को चाहिए कि वे धर्मभ्रम की मिट्टी में मिले हुए धर्म-स्वर्ण को ताप, कश और छेद के द्वारा अलग कर डालें। यह कहने की आवश्यकता ही नहीं कि मिट्टी, मिट्टी है और सोना, सोना है। लेकिन मिट्टी में मिले सोने को सच्चा सुवर्णकार ही अलग कर सकता है। इसी प्रकार धर्म, धर्म है और धर्मभ्रम, धर्मभ्रम है। मगर धर्मभ्रम में मिले धर्म को शोधने का कार्य सच्चे धर्मसंशोधक का है। धर्म जब धर्मभ्रम से पृथक् कर दिया जाएगा तभी वह अपने उज्ज्वल रूप में दिखलाई देगा और तभी उसकी सच्ची कीमत आँकी जा सकेगी।

जीवन में धर्म का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, यहाँ तक कि धर्म के बिना जीवन-व्यवहार भी नहीं चल सकता। जो लोग धर्म की आवश्यकता स्वीकार नहीं करते उन्हें भी जीवन में धर्म का आश्रय लेना ही पड़ता है क्योंकि धर्म का आश्रय लिए बिना जीवन-व्यवहार निभ भी नहीं सकता है। उदाहरणार्थ पाँच और पाँच दस होते हैं, यह सत्य है और सत्य धर्म है। जिन्हें धर्म आवश्यक मालूम नहीं होता उन्हें यह सत्य भी अस्वीकार करना होगा। मगर क्या इसे स्वीकार किये बिना काम चल सकता है? मान लीजिए, आपको जोर की भूख लगी है। आपकी माता ने भोजन करने के लिए कहा। आप धर्म-विरोधी होने के कारण कहेंगे नहीं, मुझे भूख नहीं लगी है। तो कब तक जीवन निभ सकेगा? धर्म के अभाव में एक श्वास लेना भी कठिन है। ऐसा होने पर भी धर्म की निन्दा की जाती है, उसका एक कारण है- धर्म के नाम पर ठगाई।

बहुत-से लोग धर्म के नाम पर दूसरों को ठगते हैं। इसी कारण धर्मनिन्दकों को धर्म की निन्दा करने का मौका मिलता है। अतएव हम साधु-आर्याओं को सदैव इस बात का खयाल रखना चाहिए कि हमारे किसी भी व्यवहार के कारण धर्म की निन्दा न होने पाए। साधु-साध्वियों के साथ ही आप श्रावकों को भी अपने कर्तव्य का विचार करना चाहिए। धार्मिक कहलाते हुए भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में पर-धन या पर-नारी का अपहरण करना धर्म की निन्दा कराने के समान है।

अगर आप धर्म की निन्दा नहीं कराना चाहते तो एक भी कार्य ऐसा मत करो जिससे धर्म की निन्दा होती हो। धर्म की निन्दा या प्रशंसा धर्मपालकों के धर्मपालन पर निर्भर करती है। हम और तुम अर्थात् साधु और श्रावक अगर दृढ़तापूर्वक अपने-अपने धर्म का पालन करें तो धर्मनिंदकों पर भी उसका असर हुए बिना नहीं रह सकता। एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह भी धर्म का महात्म्य समझेंगे और धर्म की निन्दा करने के बदले प्रशंसा करने लगेंगे।

पहले यह दलील दी गई है कि धर्म की बदौलत सिर पर संकट आते हैं। इसका संक्षेप में यही उत्तर दिया जा सकता है कि कष्ट तो धर्म की कसौटी है। हम में वास्तव में धर्म है या नहीं इस बात की परीक्षा कष्ट आने पर ही होती है। धर्म के कारण जिन्होंने कष्ट उठाए हैं, उनसे पूछो कि धर्म के विषय में वे क्या कहते हैं? कदाचित् सीता से पूछा जाता रामचन्द्र जी ने तुम्हें अग्नि में प्रवेश करने के लिए विवश किया, तो अब रामचन्द्र जी तुम्हें प्रिय है या नहीं? तो सीता इस प्रश्न का क्या उत्तर देती? सीता कहती रामचन्द्रजी ने मेरी अग्निपरीक्षा करके मेरे धर्म की कसौटी की है। धर्म के प्रताप से मैं अग्नि को शांत करूँ, धर्म की निन्दा दूर करके धर्म की महिमा का विस्तार करूँ- यही तो मेरे धर्म की सच्ची कसौटी है?

कहा जाता है कि धर्म के कारण ही रामचन्द्र जी को राज्य त्याग कर वनवास करना पड़ा था। मगर जिस धर्म के पालन के लिए रामचन्द्र जी को राज्य छोडना पड़ा था, वह धर्म उन्हें प्रिय लगा था या अप्रिय? अगर रामचन्द्रजी को धर्म प्रिय लगा था तो दूसरों को राम के नाम पर धर्म की निन्दा करने का क्या अधिकार है।

नल-दमयंती और पांडवों वगैरह के विषय में भी यही बात कही जा सकती है। नल-दमयंती और पांडव आदि, जिन्होंने कष्ट भोगे थे, जब धर्म को बुरा नहीं कहते तो फिर उनका नाम लेकर धर्म की निंदा करने का किसी गैर को क्या अधिकार है? नल-दमयंती और

पांडव वगैरह कष्टों को जब धर्म की कसौटी समझते थे, तो फिर इन्हीं का नाम लेकर धर्म को बदनाम करना कहाँ तक उचित है? सत्य तो यह है कि धर्म किसी भी समय निन्दनीय नहीं गिना गया है। धर्म सदासर्वदा सर्वतोभद्र है। अतएव धर्मभ्रम या धर्मान्धिता को आगे लाकर धर्म की निन्दा करना किसी भी प्रकार समुचित नहीं है।

धर्म का संबंध सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र के साथ है। जहाँ इनमें से एक भी नहीं है, वहाँ धर्मतत्व भी नहीं है। जहाँ यह रत्नत्रय है, वहीं सच्चा धर्म है। धर्मभ्रम या धर्मान्धता तो स्पष्टत: धर्माभास है – अधर्म है। प्रजा को हैरान करना, पर–धन और पर–स्त्री का अपहरण करना तो साफ अधर्म है, फिर भले ही वह धर्म के नाम पर ही क्यों न प्रसिद्ध किया जाए?

धर्म तो इस विचार में है कि मैं स्वयं तो असत्य बोलूँगा ही नहीं, अगर कोई दूसरा मुझसे असत्य बोलेगा तो भी मैं असत्य नहीं बोलूँगा। मैं स्वयं तो किसी की चीज का अपहरण करूँगा ही नहीं, अगर मेरी वस्तु का कोई अपहरण करेगा तो भी मैं यह विचार तक नहीं करूँगा कि मैं उसकी किसी वस्तु का अपहरण करूँ, उसका कुछ बिगाड़ करूँ। मैं किसी पर क्रोध भी नहीं करूँगा। मैं थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से नहीं, प्रेम से दूँगा। जिसके अन्त:करण में धर्म का वास होगा, वह इस प्रकार का विचार करेगा। जो लोग धर्म के नाम पर थप्पड़ का बदला थप्पड़ से देते हैं अथवा पर–धन और पर–स्त्री के अपहरण की चिन्ता में दिन–रात डूबे रहते हैं वे ही लोग धर्म की निन्दा करते हैं।

दूसरों की बात जाने दीजिए सिर्फ आप अपनी आत्मा से प्रश्न कीजिए कि आप प्रशंसा करते हैं या निन्दा? अगर आप धर्म की बात करना चाहते हैं तो विचार कीजिए कि आपको कैसा व्यवहार करना चाहिए? आप भूलकर भी कभी ऐसा व्यवहार मत कीजिए जिससे धर्म की निन्दा हो। इस प्रकार का विचार करके सद्व्यवहार कीजिए। धर्म पर दृढ श्रद्धा रखने का परिणाम यह होता है कि साता वेदनीय कर्म के उदय से प्राप्त होने वाले सुख के प्रति वैराग्य उत्पन्न होता है और हृदय में यह भावना प्रबल होने लगती है कि मैं अपने सुख के लिए किसी और को दु:ख नहीं पहुँचा सकता। मेरा धर्म ही दूसरों को सुख पहुँचाना है। इस तरह विचार करके धर्मश्रद्धालु व्यक्ति भोगों से विरक्त रहेगा और दूसरों के सुख के लिए स्वयं कष्ट सहन करेगा।

भर्तृहरि ने कहा है कि दृढ़धर्मी सत्पुरुष पराये हित के लिए स्वयं कष्ट सहन करते हैं। लोग धर्म–धर्म चिल्लाते हैं, मगर धर्म के इस मौखिक उच्चार से धर्म नहीं आ जाता। जीवन में धर्म मूर्तस्थरूप तभी धारण करता है जब अपने सुख का बलिदान करके दूसरों को सुख दिया जाता है और दूसरों को दु:ख से बचाने के लिए सातावेदनीय के उदय से प्राप्त होने वाले सुखों का भी परित्याग कर दिया जाता है।

धार्मिक दृष्टि से दूसरों से पैसा लेना अच्छा है या दूसरों को पैसा देना अच्छा है? यद्यपि इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा जाएगा कि पैसा देना अच्छा है, लेना नहीं। इस उत्तर को व्यवहार में सक्रिय रूप दिया जाता है या नहीं, यह विचारणीय है। व्यवहार में तो हाय पैसा, हाय पैसा की ध्वनि ही सर्वत्र सुनाई पड़ती है। फिर भले ही दूसरों का कुछ भी हो, वे चाहे जीयें या मरें। जब इस प्रवृत्ति में परिवर्तन किया जाए, दूसरों के सुख में सुख मानने की भावना उद्भूत हो और अपने सुख के लिए दूसरों को दु:ख देने की भावना बदल जाए तब समझना चाहिए कि धर्मश्रद्धा का फल हमें प्राप्त हो गया है।

आज तो धर्म के विषय में यही समझा जाता है कि जिससे अष्टसिद्धि और नवनिधि प्राप्त हो, वही धर्म है। अष्टसिद्धि और नवनिधि का मिलना ही धर्म का फल है। किंतु शास्त्रकार जो बात बतलाते हैं वह इससे विपरीत है। शास्त्रकारों का कथन यह है कि धर्मश्रद्धा का फल सात वेदनीय कर्मों के उदय से प्राप्त होने वाले सुखों से विरक्त होना है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-26
(जवाहर ज्योति विचारसार)

धर्मदेशना

विश्वशांति का मूल

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री गणेशलाल जी म.सा.

ममत्व से जागता है राग और द्वेष। अपनी संपत्ति के प्रति राग बढ़ेगा और उसकी रक्षा की जाएगी। राग जितना गाढ़ा होता जाएगा उस संपत्ति की वृद्धि व रक्षा में वह उचित-अनुचित, कार्य-अकार्य सब कुछ बेहिचक करने लग जाएगा। इसके साथ ही दूसरों की संपत्ति से अपने मन में द्वेष जागेगा और उस संपत्ति के साथ प्रति विनाश की बात सोचेगा। इन राग और द्वेष की वृत्तियों के साथ मान, माया, लोभ, ईर्ष्या, अन्याय की कई बुराइयाँ मानव-मन में प्रवेश करती जाएँगी तथा इन बुराइयों की फैलावट से दुनिया का स्वरूप 'त्राहिमाम्-त्राहिमाम्' हो जाता है। उसका अनुभव मैं समझता हूँ कि वर्तमान व्यवस्था में आपको हो रहा होगा।

आज के साम्यवाद, समाजवाद, अपरिग्रह सिद्धांत के ही रूपांतर हैं। यदि अपरिग्रह का क्रियात्मक रूप जैनी भी अपने जीवन में उतारें तो वे अपने जीवन में तो आनंद का अनुभव करेंगे ही साथ ही सारी दुनिया में एक नई रोशनी, नया आदर्श भी उपस्थित करेंगे। अपरिग्रह का सिद्धांत साम्यवाद व समाजवाद के लक्ष्यों की पूर्ति कर देगा, किंतु उनकी बुराइयों को भी चारित्र एवं संयम की आधारशिला पर नागरिकों को खड़ा करके पनपने नहीं देगा।

पर्यावरण सुरक्षा

धर्मदेशना

सर्व जीव सुरक्षा

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

भगवान महावीर ने सारे संसार को अहिंसामय जीवन का अनुपम सन्देश दिया है कि 'जीओ और जीने दो।' इसका अभिप्राय यह है कि आप इस विधि से जीओ कि दूसरे सभी प्राणी भी अपनी अपनी विधि से जी सकें। **पहली बात यह है कि आपका जीना उन सबके जीने में किसी भी प्रकार से बाधक नहीं बनना चाहिए। दूसरी बात यह है कि आप अपने जीने को त्यागमय बनाओ और अन्य सभी प्राणियों के जीने को सुखदायक बनाने में अपना सम्पूर्ण योगदान करो।**

इस सन्देश का आधारगत सिद्धान्त है आत्मीय समानता की भावना, सभी आत्माओं में अपने आत्म-स्वरूप को देखने की निष्ठा। इससे सभी आत्माओं को अपनी आत्मा के समान समझने की मनोवृत्ति का विकास होता है। सामाजिक सद्भाव एवं सहयोग की ऐसी मनोवृत्ति ही मूलाधार है। यह आत्म-समता की भावना अपने साथी मनुष्यों के प्रति सहकार तथा अन्य प्राणियों के प्रति करुणा के रूप में प्रस्फुटित होती है और हार्दिक वृत्तियों को कोमल बनाती है।

हृदय की कोमल वृत्ति ही जीवदया की ओर झुकती है तथा सर्व जीवरक्षा की सहृदय भावना से अनुप्राणित होती है। ऐसा सहृदय व्यक्ति यह अनुभव करता है कि किसी भी अन्य प्राणी को दुःख न हो और जहाँ भी दुःख दिखाई दे, वहाँ वह उस दुःख का निवारण करने के काम में प्रयत्नशील हो जाए। अपने जीवन में वह सर्व जीवरक्षा को अपना उद्देश्य बना लेता है और जहाँ-जहाँ जीवों की हिंसा हो रही हो, उसे रोकने तथा प्राणियों के प्राणों को सुरक्षित तथा निर्भय बनाने की दिशा में वह कर्मनिष्ठ बन जाता है।

'जीने दो' का वह इतना ही अर्थ नहीं लेता कि वह उनके जीने में अपनी ओर से कोई बाधा नहीं डाले, बल्कि वह उसका व्यापक अर्थ लेता है कि प्राणियों को जीने में दूसरों के द्वारा जो भी बाधाएँ आ रही हों, उनके निवारण का भी वह प्रयत्न करे। सर्व जीव संरक्षण का पुण्य कार्य अवश्य ही कठिन और त्यागमय होता है और इस कारण परम सराहनीय भी होता है।

पर्यावरण : सुरक्षा का कवच

पहले यह जान लें कि पर्यावरण क्या होता है ? पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से घिरा हुआ आवरण। इस बाह्य वातावरण में भूमि, जल, वनस्पति और वायु के तत्वों से मिली हुई ऐसी परतें बनी हुई होती हैं, जो मनुष्यों की ही नहीं, अन्य सभी प्रकार के प्राणियों की जीवन रक्षा करती हैं। वे तत्व सम्पूर्ण वायुमण्डल को सभी के सुखपूर्वक जीने में सहायक बनाये रखते हैं। एक प्रकार से पर्यावरण को मनुष्यों सहित सभी प्रकार के जीवों की सुरक्षा का एक कवच कह सकते हैं, जो यदि शुद्ध बना रहता है तो कई तरह की सुरक्षा प्रणालियों को सक्रिय बनाए रखता है। यही पर्यावरण यदि प्रदूषित हो जाता है या बना दिया जाता है तो सूक्ष्म जीवों की महान् हिंसा के साथ मनुष्यों एवं पशु पक्षियों के लिए भी परम कष्टदायक बन जाता है। आम दृष्टि से पर्यावरण के शुद्ध होने का अर्थ किया जाता है कि हरे-भरे जंगल बने रहें और कोई वृक्षों का विनाश न करे। नदियों या अन्य जल स्थानों का जल स्वच्छ एवं सेवन योग्य हो, उसमें मल प्रवाह न किया जाए। वायु के प्राकृतिक प्रवाह में धुआँ-धूल के रूप में गन्दगी न बहाई जाए तथा सबके स्वस्थ श्वसन हेतु उसका शुद्ध रूप यथावत रखा जाए।

शुद्ध पर्यावरण के माध्यम से एक ओर तो पृथ्वी, वनस्पति, जल, वायु आदि के सूक्ष्म जीव स्वत: सुरक्षित रहते हैं तो दूसरी ओर मनुष्य तथा उसके साथ रहने वाले अथवा वन प्रान्तर में मुक्त विचरण करने वाले पशु-पक्षी व अन्य प्राणी शुद्ध पर्यावरण की विद्यमानता से स्वस्थ रहते हैं। इस प्रकार उनके प्राणों की भी रक्षा होती है। इस दृष्टि से पर्यावरण की शुद्धता को बनाए रखने की जो वृत्ति होनी चाहिए, वह दयापूर्ण कोमल हृदय से ही फूट सकती है और सर्वहित को सर्वोपरि रख सकती है।

पर्यावरण-प्रदूषण कैसे?

पर्यावरण की शुद्धता का प्रदूषण कैसे होता है- उसके कारणों को जाने बिना प्रदूषण निवारण के उपाय फलीभूत नहीं हो सकते हैं। पर्यावरण का प्रदूषण दो प्रकार से होता है- एक तो **स्वयं प्रकृति द्वारा** और दूसरा **मनुष्यों के द्वारा**।

प्रकृति द्वारा विभिन्न प्रकार के पर्यावरणों की शुद्धता को जो क्षति पहुँचती है, उनकी पूर्ति स्वयं प्रकृति करती है। इतना ही नहीं, मनुष्य द्वारा सामान्य रूप से फैलने वाले प्रदूषणों का परिष्कार भी प्रकृति करती है। उदाहरण के लिए किसी अंधड़ या दावानल से सघन वन का कोई भाग नष्ट हो जाता है तो वर्षा फिर नए वृक्षों को पल्लवित करती है और वन की सघनता को फिर से बनाती है। वनों की सघनता बनाए रखने का सुप्रभाव वर्षा और कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति पर पड़ता है, जिसका मुख्य लाभ मनुष्य ही लेता है। इसी प्रकार वायु प्रवाह में जो भिन्न-भिन्न कण और कीटाणु आदि फैल जाते हैं, उनकी शुद्धि वर्षा की धाराओं से हो जाती है, और शुद्ध बनी वायु पुन: श्वासधारियों की सहायक बनती है। जल-धाराओं का प्रदूषण भी वर्षा के वेग में दूर हो जाता है। प्रकृति अपने स्तर पर पर्यावरण निर्माण, उसकी शुद्धता की रक्षा तथा प्रदूषण निवारण का कार्य यथाविधि करती रहती है।

किन्तु यह मनुष्य है जो प्रकृति के काम में बाधक ही नहीं बनता है बल्कि प्रकृति के काम को बुरी तरह से बिगाड़ता भी रहता है और अपने व अन्य प्राणियों के स्वस्थ जीवन के लिए संकट उत्पन्न करता रहता है। पर्यावरण प्रदूषण में मनुष्य का बहुत बड़ा हाथ है और उसने अपनी अनियंत्रित प्रवृत्तियों से पर्यावरण को सीमा से बाहर प्रदूषित बना दिया है कि अब उसका पूर्णत: संशोधन संभव नहीं दिखाई दे रहा है। संकट को देखते हुए अब वह प्रदूषण-निवारण के काम में सक्रिय तो बना है, लेकिन सभी प्रकार के प्रदूषण की व्यापकता आज भयावह हो उठी है।

मनुष्य ने हरे-भरे जंगलों को बेरहमी से काटकर तथा वनस्पति काय के जीवों की अपार हिंसा करके भूमि का प्रदूषण बढ़ाया है। आश्चर्य तो यह है कि जंगलों

की यह बेरहम कटाई निर्वाह हेतु ईंधन के लिए नहीं, बड़े-बड़े मुनाफाखोरों द्वारा अपनी अवैध आय के लिए की जाती है और इस प्रवृत्ति के विरुद्ध न जाने क्यों सरकार कड़ा रुख नहीं अपनाती है? एक वृक्ष काटना भी महापाप का कारण होता है, वहाँ पर अनगिनत वृक्षों की कटाई कितनी हिंसक बन गई है? जंगल, वृक्षों और पेड़-पौधों के विनाश से कई हानियाँ हो रही हैं। अनेक पशु-पक्षियों की भी हिंसा होती है और उनके आवास, जल-साधन आदि नष्ट हो जाने से वे बुरी तरह से कष्टित हो जाते हैं। वनस्पति के अभाव में स्वयं मनुष्यों का स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगता है क्योंकि मनुष्य जो हवा को प्रदूषित करता है उसे पेड़-पौधे ग्रहण करते हैं तथा वापिस ये पेड़-पौधे जो हवा छोड़ते हैं वह प्राण वायु होती है, जो मनुष्य की जीवन रक्षा करती है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से वायुमंडल में गंदी हवा बढ़ रही है और प्राण वायु की कमी हो रही है। वनस्पति के जीवों की इस हिंसा से पृथ्वीकाय के जीवों की हिंसा हो रही है क्योंकि अधिकाधिक कृषि भूमि अपनी उर्वरा शक्ति खोकर बंजर होती जा रही है। इसका सीधा बुरा प्रभाव मनुष्य एवं अन्य प्राणियों की जीवन रक्षा पर अन्नाभाव के कारण पड़ता है।

जल और वायु का प्रदूषण

मनुष्य अपनी स्वार्थान्धता में जल और वायु को भी बुरी तरह से प्रदूषित करता है। जल के प्रदूषण को जानने के लिए एक गंगा नदी का ही उदाहरण लें। गंगा जल को पवित्र मानते हुए भी पास के बड़े-बड़े शहरों के गन्दे गटर, मनुष्यों व पशुओं के मृत शरीर तथा दूसरा सभी तरह का कचरा गंगा में बहाते हुए मनुष्य कभी संकोच नहीं करता है। सभी उपयोगी नदी-नालों का ऐसा ही बुरा हाल बना हुआ है। इस औद्योगिकरण के जमाने में तो फैक्टरियों से ऐसे रसायन जल प्रवाही में डाले जाते हैं कि वह पानी भयंकर बीमारियां फैलाने वाला बन जाता है। इस प्रदूषण से जल के जीवों तथा अन्य जलचरों की कितनी भारी हिंसा होती है इसका लेखा-जोखा लेने वाले नहीं हैं।

इसी प्रकार वायु का प्रदूषण भी अविचारपूर्वक किया जा रहा है। यह प्रदूषण मुख्यत: कल-कारखानों की वजह से हो रहा है। ऊँची-ऊँची चिमनियों से उड़ने वाला गन्दा धुआँ और धूल इतनी मात्रा में वायु में मिश्रित होते हैं कि वायुमंडल के प्रदूषण का निवारण दुष्कर बनता जा रहा है। इस प्रदूषण से एक ओर तो वायु के जीवों का महाविनाश होता है तो दूसरी ओर प्रदूषित वायु अनेकानेक व्यक्तियों व प्राणियों के श्वासोश्वास में प्रवेश पाकर उनके प्राणों का हनन कर रही है। कारखानों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है और प्रदूषण भी उसी मात्रा में भयंकर बनता जा रहा है किन्तु उसके शुद्धिकरण के उपायों पर क्या काम हो रहा है इसकी जानकारी सर्वसुलभ नहीं है।

प्रदूषण-निवारण

पर्यावरण के प्रदूषणों का निवारण तथा ऐसी स्थायी व्यवस्था जिससे कि प्रदूषण निवारण का काम दु:साध्य या असाध्य न हो, आज की प्रमुख आवश्यकता हो गई है क्योंकि इससे ही सर्व जीवों की हिंसा दूर करने तथा उनकी रक्षा करने का उपाय किया जा सकता है।

यह प्रशासन तंत्र की चुस्ती का सवाल है कि किन्हीं व्यक्तियों की स्वार्थवादिता के कारण हो रहे पर्यावरण के प्रदूषणों को कड़ाई से रोके ताकि उनके कारण हो रही असंख्य अनंत जीवों की हिंसा भी रुक सके और उनके प्राणों का समुचित संरक्षण किया जा सके।

यह धार्मिक आस्था का ही प्रश्न नहीं है बल्कि यह वैज्ञानिक सत्य भी है कि हरे वृक्षों यानी कि सकल वनस्पति में जान है, उनको कटवाना अथवा उनके फल, फूल-पत्तियों को उखाड़ना हिंसा है और हिंसा कभी धर्म नहीं होती। अपने प्राणों की जब हम रक्षा करना चाहते हैं तो क्या उन प्राणियों का रक्षण करना हमारा दायित्व नहीं है?

यह गंभीर रूप से विचारणीय स्थिति है। मनुष्य स्वयं तो जीना चाहता है, परन्तु अशक्त और पराश्रित प्राणियों को जीने देना नहीं चाहता अथवा उनके जीवन-रक्षण के आवश्यक कार्य नहीं करता-क्या यह लज्जाजनक नहीं है?

और यह तो पापमूलक है कि उसकी यतना और सावधानी में कमी होने से इतने जीवों की हिंसा का समारंभ हो रहा है।

पर्यावरण को शुद्ध बनाने व बनाये रखने तथा सभी प्रकार के प्रदूषणों का निवारण करने के लिए अहिंसात्मक उपाय किये जाने चाहिए। जल और वायु को प्रदूषित बनाने वाले अधिकतर वैकल्पिक व्यवस्था के अभाव में वैसी असावधानी बरतते हैं अथवा अपने उद्योगों के विस्तार के अंधेपन में जीव हिंसा और प्रताड़ना के इस पाप कार्य से अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। प्रशासन का कार्य है कि सभी वर्तमान तथ्यों का विश्लेषण किया जाए तथा जीव रक्षा वाली ऐसी पद्धतियों का विकास किया जाए जिनसे प्राणों का हनन और कष्ट न हो।

जीव रक्षा के लिए आप भी सन्नद्ध हों

प्रशासन तंत्र अपना काम करे किन्तु आप भी जीवरक्षा के हित में अपने योग्य प्रयासों से अलग न रहें। आपको भी प्रदूषण मुक्ति के लिए कमर कसकर सन्नद्ध हो जाना चाहिए। आपके लिए कुछ सुझाव दे रहा हूँ जिनसे सम्बन्धित त्याग-प्रत्याख्यान आप यथाशक्ति अवश्य कर सकते हैं।

(1) हरे-भरे वृक्षों व पेड़-पौधों को न तो आप स्वयं काटें, न दूसरों से कटवाएं तथा न ही ऐसी प्राणघातक कटाई की आप अनुमोदना करें।

(2) फल, फूल, पत्तियों को भी निरर्थक प्राण क्षति न पहुँचावे।

(3) पानी का अनावश्यक व्यय भी न करें तथा दुरुपयोग तो कतई न करें, जिससे कि वह हिंसापूर्वक प्रदूषित हो।

(4) भोजन के उपरान्त जूठन छोड़ने का त्याग लेवें क्योंकि यह जूठन जब इकट्ठी होकर सड़ती है तो जीवोत्पत्ति का तथा प्रदूषण का कारण बनती है।

(5) वायुमंडल को प्रदूषित बनाने वाले उद्योग धंधों से बचें तथा जंगल कटवाने आदि के ठेके तो कतई न लें। अपने को प्रदूषण और उसके पश्चात् की अपार हिंसा के भागी न बनावें।

(6) पर्यावरण प्रदूषण मुक्ति के कार्यों में अहिंसात्मक रीति से जितना आप सहयोग दे सकें, आपको सहयोगी बनना चाहिए।

(7) अपने प्रतिदिन के कार्यों में आपको यह सावधानी बरतनी चाहिए कि आप किसी प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण को नहीं बढ़ा रहे हैं।

(8) पन्द्रह कर्मादानों का सर्वथा त्याग करें क्योंकि ये महापाप के भंडार हैं। इनसे सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर की क्षतियों की बहुलता होती है। साथ ही इनसे मनुष्य वध, मानव शोषण, पशुओं की जीवन शक्ति का ह्रास होता है इसलिए ये श्रावक के लिए वर्जनीय हैं। ये सभी महापाप कई बन्धन के कारण रूप होने से इहलोक और परलोक दोनों को बिगाड़ने वाले तथा भवभ्रमण के कारक हैं।

''जीओ और जीने दो'' का मर्म समझें

भगवान महावीर द्वारा उपदेशित अहिंसा की सूक्ष्मता को समझने की जरूरत है, तभी 'जीओ और जीने दो' की उक्ति का मर्म स्पष्ट हो सकेगा। यह ध्यान में रहे कि पंचेन्द्रिय या बड़े जीव तो कई बार अपनी जीवन रक्षा स्वयं भी कर लेते हैं किन्तु छोटे जीवों की रक्षा का भार तो विवेकशील मनुष्य को उठाना होता है। आप देखते हैं कि वायुकाय के जीवों की रक्षा के लिए आपके सन्त-मुनिराज अपने मुख पर मुखवस्त्रिका धारण करते हैं तो यह अहिंसा धर्म की करुणा ही तो है। क्या आपका कर्तव्य नहीं बनता कि आप भी सर्वत्र अहिंसा धर्म की करुणा को अपनावें, यथाशक्ति छोटे बड़े जीवों की रक्षा के उपाय करें तथा सच्चे अहिंसक कहलावें।

आज के हिंसा से संत्रस्त वातावरण में 'जीओ और जीने दो' की उक्ति के मर्म को आत्मसात करने तथा उसे चरितार्थ करने से बड़ा दूसरा कोई कर्तव्य नहीं।

साभार- नानेशवाणी-11 (संस्कार क्रांति)

परस्परोपग्रहोजीवानाम्

धर्म में पुरुषार्थ की आवश्यकता

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

तीर्थंकर देवों का शासन दो रूपों में हमारे सामने आता है। एक रूप है प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासनकाल का और दूसरा रूप है बीच के 22 तीर्थंकरों के शासनकाल का। केशी-गौतम के प्रसंग से स्थिति स्पष्ट होती है। जब केशीश्रमण व गौतम स्वामी, दोनों अपने शिष्य-समुदायों सहित श्रावस्तीपुर नगर में पहुँच गये तब दोनों के शिष्यों ने एक-दूसरे की आचरण पद्धति में अंतर देखा। उनके मन में विचार आया कि 23वें तीर्थंकर प्रभु पार्श्वनाथ एवं 24वें तीर्थंकर भगवान् महावीर, दोनों ही एक मार्ग की प्ररूपणा करने वाले हैं फिर दोनों की आचरण पद्धतियों में इतना अन्तर क्यों है? दूसरे तीर्थंकर से लेकर तेईसवें तीर्थंकर तक के साधुओं के लिए यह नियम नहीं है कि उन्हें श्वेत वस्त्र ही धारण करने चाहिए किन्तु प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के शासन में निश्चित है कि उन्हें श्वेत वस्त्र ही लेना है, रंगीन वस्त्र का ग्रहण निषिद्ध है, किन्तु बीच के 22 तीर्थंकरों के समय 5 वर्णों में से कोई भी वर्ण ग्रहण किया जा सकता था। इसी प्रकार बीच के 22 तीर्थंकरों के समय 4 महाव्रत-रूप धर्म की और प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के समय में 5 महाव्रत-रूप धर्म की प्ररूपणा की गई। बीच के 22 तीर्थंकरों के समय सामायिक चारित्र होता था किन्तु प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के समय में सामायिक चारित्र के बाद छेदोपस्थापनीय चारित्र भी होता है, जबकि बीच के 22 तीर्थंकरों के समय एकमात्र सामायिक चारित्र ही होता था। एकमात्र से तात्पर्य है कि दीक्षा के रूप में जो प्राप्त हो गया वहीं इतिश्री हो गई। अलग से छेदोपस्थापनीय चारित्र की आवश्यकता नहीं थी। सूक्ष्मसंपराय एवं यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति होती है। उन्हें ग्रहण कराने की आवश्यकता नहीं, वे अध्यवसायों के आधार पर प्राप्त होते हैं। परिहार विशुद्ध चारित्र की भी व्यवस्था है कि वह स्वीकार किया जाता है, पर सूक्ष्मसंपराय एवं यथाख्यात चारित्र, कोई भी शिष्य, गुरु के मुखारविन्द से स्वीकार नहीं करता है किन्तु सामायिक एवं छेदोपस्थापनीय को देने का प्रसंग बनता है और दीक्षित होने वाले साधक इन्हें ग्रहण करते हैं। बीच के 22 तीर्थंकरों के समय एक बार दीक्षा दे दी गई, फिर 8वें दिन या 4 या 6 माह के बाद पुन: छेदोपस्थानीय का प्रसंग नहीं बनता था। ऐसे कुछ अंतर जब देखे गये तो दोनों के शिष्यों के मन में संशय उत्पन्न हुआ। तब उन दोनों महान विभूतियों ने विचार किया कि इसका निराकरण होना चाहिए और वे एक स्थान पर मिले। जब गौतम स्वामी पहुँचे तब वहाँ परस्पर वन्दन-व्यवहार की बात नहीं हुई। कभी यह बात सामने आती है कि जब सभी साधु भगवान महावीर के हैं तो फिर अलग-अलग संप्रदाय वाले एक-दूसरे को वंदन क्यों नहीं करते? कुछ मर्यादाएँ होती हैं, समाचारी होती है, उसी के आधार पर वंदन-व्यवहार का प्रसंग उपस्थित होता है। जहाँ समाचारी का एक रूप है वहाँ वन्दन-व्यवहार की स्थितियाँ बनती हैं। कालास्यवेषिपुत्र अणगार स्थविरों के पास पहुँचकर प्रश्न किये। प्रश्न

पूछने से पहले वंदन-नमस्कार नहीं किया किन्तु समाधान हो जाने के बाद वंदन-नमस्कार किया। इसी प्रकार केशीश्रमण ने गौतम स्वामी से अनेक प्रश्न पूछे और जब गौतम स्वामी से उन प्रश्नों का सटीक समाधान हो गया तब केशीश्रमण ने, जो गौतम स्वामी से पूर्व दीक्षित थे, वंदन-नमस्कार किया तब उन्होंने यह विचार नहीं किया कि मैं वंदन कैसे करूँ? उन्होंने कहा—

साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
नमो ते संसयाईय! सव्वसुत्तमहोयही।।

- उत्तराध्ययन (23/85)

हे गौतम! श्रेष्ठ है आपकी प्रज्ञा! आपने मेरा यह संशय भी दूर किया है। हे संशयातीत! हे सर्वश्रुत महोदधि! आपको मेरा नमस्कार है।

जो संशयातीत हैं, जिन्होंने संशय निकाल दिया है वे वंदनीय हैं। ऐसे गौतम स्वामी को केशीश्रमण ने वंदन-नमस्कार किया और चातुर्याम धर्म को छोड़कर पंचयाम धर्म को स्वीकार कर लिया।

अभी श्रमण भगवान महावीर का शासन चल रहा है और भगवान महावीर के शासन में दीक्षित होने वाले के लिए 7 रात-दिन के बाद अर्थात् 8वें दिन छेदोपस्थापनीय चारित्र का प्रसंग उपस्थित होता है। यदि दीक्षा ग्रहण करने वाले में उतनी योग्यता नहीं है तो जरूरी नहीं है कि 8वें दिन ही दिया जाए। उसके पश्चात् मध्यमकाल 4 माह का है, इस स्थिति तक भी योग्यता न आए; यहाँ योग्यता से तात्पर्य है कि श्रमण प्रतिक्रमण सूत्रपूर्वक छः निकाय जीवों का ज्ञान हो एवं 5 समिति, 3 गुप्ति का प्रयोग उसके जीवन में रम चुका हो, तो 4 माह या उसके बाद 6 माह की अंतिम सीमा है। इस रूप में छेदोपस्थापनीय चारित्र का सामान्य नियम है, किन्तु कभी-कभी इसमें रूपान्तरण भी होता है। वह रूपांतरण सांप्रदायिक नहीं, किन्तु शास्त्रीय धरातल पर होता है कि यदि कोई पूज्य बाद में दीक्षा लेने की स्थिति में हो तो उसका प्रावधान भी रहे। जैसे एक मंत्री ने पूर्व में दीक्षा ले ली और सम्राट बाद में दीक्षा लेने की स्थिति में हो। चूँकि सम्राट व्यवहार में बड़े रहे हैं और मंत्री पद की दृष्टि से छोटे हैं तो सम्राट उनके लिए पूज्य हैं और वे कुछ ही दिन में दीक्षा लेने की स्थिति में हैं तो वैसी स्थिति में बड़ी दीक्षा 6 माह तक रोकी जा सकती है, किन्तु इसके बीच में यदि कोई दूसरी दीक्षा हो जाती है तो उसके साथ उस पूर्वदीक्षित की बड़ी दीक्षा भी संपन्न हो सकती है। दीक्षा की तिथि बड़ी दीक्षा से मानी जाने के कारण जो पूज्य बाद में दीक्षित हुए, वे बड़े माने जाते हैं।

आचार्यदेव पूज्य श्री नानालाल जी म.सा. का जब उदयपुर से विहार हुआ और पिपलिया मंडी के वृद्धिचन्द जी को जानकारी मिली कि उनका पुत्र अमरचन्द दीक्षा लेने वाला है तो संतों ने विनोद कर दिया कि अमरचन्द जी दीक्षा लेंगे तो आपको वंदन करना होगा। उनके मन में बात लग गई कि वह दीक्षा ले और उसे मैं वंदन करूँ? बस, पहले घर में रहते हुए भी जिन्हें फुरसत नहीं रहती थी, पर अब उनके भाव बन गये और वे साधु के वस्त्र जो अमरचंदजी के लिए तैयार किये हुए थे, पहन कर आए और गुरुदेव से कहने लगे—''मुझे दीक्षा पचक्खा दो।'' गुरुदेव ने फरमाया—परिवार वालों की आज्ञा के बिना मैं नहीं पचक्खा सकता तो उन्होंने स्वयं दीक्षा पचक्ख ली। उस समय तपस्वीराज (श्री बलभद्रमुनि जी म.सा.) की भी दीक्षा नहीं हुई थी। परिवार वाले पहुँचे कि इन्हें समझाइए। गुरुदेव ने फरमाया—''संत क्या समझाएंगे? प्रत्याख्यान तोड़ दो? यह हम कह नहीं सकते, यह हमारी मर्यादा है और हम आज्ञा के बिना पचक्खा भी नहीं सकते।'' आचार्यदेव ने कहा—''जब कदम बढ़ा ही लिया है तो तुम्हें भी समझना चाहिए।'' उन्होंने कहा—''वृद्धावस्था है।'' तो आचार्यदेव ने कहा—''मैं स्वयं सेवा के लिए तैयार हूँ।'' फिर अमरचंदजी भी दीक्षा लेने की तैयारी में हैं। उन्होंने स्वयं पचक्ख ली थी, बीच में और भी दीक्षाएँ हुईं पर बड़ी दीक्षा सभी की साथ में हुई। इसलिए वय क्रमानुसार छोटे से बड़े हुए।

बंधुओ! दीक्षा लेने का भाव जगना एक बात है और अनुमोदन करना दूसरी बात है। किन्तु कई व्यक्ति

अनुमोदन के लिए भी तैयार नहीं होते, बल्कि रोक लगाते हैं। कितनी अजीब स्थिति है कि संसार में रहते हुए यदि किसी को दुर्व्यसन लग जाए तो उसे तो रोकने या कुछ कहने का साहस नहीं जुटा पाएंगे। कह भी नहीं सकेंगे कि शराब नहीं पीनी है। घर के सदस्य यदि गुटका आदि खाते हैं और जानते हैं कि ये चीजें स्वास्थ्य को खराब करने वाली हैं, पर यह कहने की हिम्मत नहीं होगी कि ये मत खाओ, पर धर्म की बात में रोक लगाएंगे। संसार में फँसाने की दलाली तो कर लेंगे किन्तु धर्म की दलाली नहीं करेंगे। तब बन्धुओ! यह भी समझ लें कि जो जिसकी दलाली करेगा उसे लाभ भी वैसा ही मिलेगा। कोयले की दलाली में हाथ काले ही होंगे और यदि चंदन की दलाली करेगा तो अनजाने ही हाथ सुगंधित हो जाएंगे। यदि कोई रत्नों की, सोने-चांदी की दलाली करेगा और चाहे, ये चीजें घर में न भी ले जाए तो भी वह लाभ कमाएगा। तो आप कहेंगे कैसे? तो इसे समझिये।

आज विज्ञान विकास की जिस अवस्था में पहुँच गया है उसमें पुरानी परम्पराओं की वैज्ञानिकता सिद्ध होने लगी है। आप जानते हैं कि बहनें हाथ में, गले में आभूषण पहनती हैं। वे आभूषण स्वर्ण के क्यों होते हैं? वे आभूषण उनकी शोभा तो बढ़ाते ही हैं, किन्तु विज्ञान यह बात भी सिद्ध करता है कि यदि शरीर पर स्वर्ण हो तो वह पहनने वाले के हृदय की गति बराबर रखता है। गले में यदि स्वर्ण का हार होता है और उसके स्वर्ण से हृदय का स्पर्श होता रहता है तो वह रक्तवाहिनी धमनियों के रक्त को सहज ही ताकत देने वाला बनता है। अत: आभूषण धारण करने वाले की हृदय-गति संतुलित रहती है। आज का विज्ञान भी आयुर्वेद के इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है कि यदि हार्ट का मरीज है और खून उचित मात्रा में सप्लाई नहीं हो रहा है, तो उसे स्वर्ण भस्म देते हैं। इस प्रकार स्वर्ण अन्दर जाता है तो भी लाभ और बाहर उसका स्पर्श मिलता है तो भी लाभ। जो सोने-चांदी की दलाली करते हैं, वे सोने को केवल हाथ में लेकर इधर-उधर ही करते हैं, किन्तु इतने स्पर्श से ही ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। हम ऊर्जा के सिद्धान्त को भी जानते हैं। यदि पात्र में गरम पानी पड़ा है और उस पर हाथ ले जाकर भाप लें तो हाथ कोमल हो जाते हैं। अंगीठी पास में पड़ी हो तो भी आपको गरमी महसूस होती है। वैसे ही स्वर्ण के स्पर्श से ही कई बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। कहा जाता है कि नमक की डली मुट्ठी में बंद कर ले तो मिर्गी का कोप नहीं होता। इसके पीछे क्या तर्क है? वैज्ञानिक भाषा में आप जिसे ऊर्जा कहते हैं उसे तीर्थंकर देवों ने दूसरे नाम से संबोधित किया है। उन्होंने कहा है कि पुद्‌गल का भी प्रभाव आत्मा पर होता है। यह जैन सिद्धान्त का मान्य तत्व है। आप आहार करते हैं तो शरीर पर उसका प्रभाव होता है या नहीं? अन्न की ऊर्जा का शरीर पर प्रभाव पड़ता ही है।

इसी प्रकार पुद्‌गल का प्रभाव चेतना पर पड़ता है। ज्ञानावरणीय कर्म के पुद्‌गल ज्ञानशक्ति को आवृत्त करते हैं, वे पुद्‌गल हैं या चेतन? पुद्‌गल हैं, उनमें ऐसी शक्ति है कि वे हमारी चेतना को आवृत्त कर लेते हैं। दर्शनावरणीय कर्म चेतना की शक्ति को आवृत्त करते हैं और जब क्षयोपशम होता है तब ज्ञान-दर्शन-चारित्र की शक्तियाँ प्रकट होती हैं। आज हम कहते हैं कि हमारे भीतर अनेक शक्तियाँ हैं किन्तु यदि अंतराय का क्षयोपशम हो तो ही हम पुरुषार्थ कर पाते हैं। एक व्यक्ति बहुत जानता है, पर पुरुषार्थ नहीं कर पाता है, तो मानिये कि उसके वीर्यान्तराय का तदनुरूप क्षयोपशम नहीं है। एक व्यक्ति का धर्म के प्रति रुझान बनता है किन्तु धर्म-क्षेत्र में गति नहीं कर पाता तो उसके धर्मान्तराय का तदनुरूप क्षयोपशम नहीं है। यह धर्मान्तराय होता है वीर्यान्तराय के ही अन्तर्गत। पुरुषार्थ तब जगता है जब वीर्यान्तराय का क्षयोपशम होता है। एक व्यक्ति साधु बन जाता है उसके बाद भी उद्यम नहीं जगा पाता, क्योंकि वीर्यान्तराय का यथायोग्य क्षयोपशम नहीं है। एक व्यक्ति ज्ञान में एक कदम नहीं बढ़ पाता, पर पुरुषार्थ बहुत करता है। उसके वीर्यान्तराय का क्षयोपशम प्रबल है तो पुरुषार्थ बहुत करता है, किन्तु ज्ञानावरणीय कर्म के

उदयभाव से ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाता। ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम हो तो ज्ञान की प्राप्ति होती है और वीर्यान्तराय का क्षयोपशम हो तो पुरुषार्थ जाग्रत होता है।

कभी हम सोच लेते हैं कि यह उस कर्म का उदय है, किन्तु कई अन्य बातें भी घुली-मिली होती हैं। ज्ञान के लिए ज्ञानावरणीय के साथ मोहनीय कर्म का भी क्षयोपशम होता है तब उसका अलग रूप बनता है। ज्ञानावरणीय, मोहनीय और अंतराय का क्षयोपशम हो, तब जाकर हमारे में ज्ञानपूर्वक चारित्र भावना प्रबल हो पाती है। पर कोई सोच ले, जब होना होगा, हो जाएगा, पुरुषार्थ नहीं करे तो समझिए कि पुरुषार्थ भी बैठे-बैठे जागृत नहीं होता। आग पड़ी है किन्तु वह अपने आप नहीं सुलगती। पहले राख के नीचे आग को दबा देते थे, पर उसे सुलगाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता था। वैसे ही पुरुषार्थ से हमारे भीतर ज्योति प्रकट होती है। कभी उसके लिए पुरुषार्थ अधिक करना पड़ता है, कभी थोड़े-से पुरुषार्थ से काम चल जाता है। माता मरुदेवी ने पहले पुरुषार्थ खूब कर लिया था। 60 हजार मासखमण कर लिए थे। आज तो 60 हजार उपवास भी मुश्किल पड़ जाएंगे। 60 हजार मासखमण कर लिए एक जिन्दगी में! उससे बहुत कर्मों की निर्जरा करके आत्मा कितनी हल्की हो गई, इसका विवरण-कथा भागों में आता है कि हाथी के हौदे पर बैठे हैं, जा कहाँ रहे हैं? भगवान ऋषभदेव के दर्शन करने। दर्शन हुए या नहीं? बाकी रहे क्या? ऐसे दर्शन किए कि भगवान कभी ओझल ही नहीं होवें। सदा-सदा वही रूप सामने रहे। इधर कर्मों का क्षय हुआ और उधर केवलज्ञान में दर्शन हो गये। पहले पुरुषार्थ बहुत कर लिया था तो अब थोड़े-से पुरुषार्थ से सफलता मिल गई।

भरत चक्रवर्ती आरिसा भवन में हैं, पुरुषार्थ कितना किया? माचिस में थोड़ी-सी सीलन आ गई थी, तूली रगड़ी कि आग प्रकट हो गई। वैसे ही भरत जी को अल्प प्रयास से केवलज्ञान की ज्योति प्राप्त हो गई। भाई कहते हैं आज प्रतिक्रमण याद करते है, कल भूल जाते हैं, किन्तु -

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर पड़त निशान।।

शिला पर निशान हो सकता है तो हमें प्रतिक्रमण कंठस्थ क्यों नहीं हो सकता? शांतक्रांति के अग्रदूत स्व. श्री गणेशाचार्य के पास एक भक्त पहुँचा, कहने लगा—''भावना होती है दीक्षा लूँ, पर प्रतिक्रमण याद नहीं है।'' तो आचार्यश्री ने कहा—''ऐसी क्या बात है, चाहो तो कर सकते हो।'' उसने पहले भी पुरुषार्थ किया था, किन्तु आचार्यश्री के वचन निकले और उसने झेल लिये। आज संत कोई बात कहते हैं और आप विश्वास करके झेल लेते हैं तो फिर वह आपकी हो जाती है। लेकिन झेले ही नहीं तो होगी कैसे? वे भक्त थे ईश्वरचंद जी सुराणा, जिन्होंने वचन झेले, फिर धड़ाधड़ याद कर लिये। पुरुषार्थ जगा लिया। मुनि बन गये। आपने सुना होगा माषतुष मुनि को। संत कहते हैं—''कैसा ठोठीराम है, यहाँ बताया और वहाँ जाकर भूल जाता।'' कई संत कहते हैं—''ओहो! कितना पुरुषार्थ करता है।'' ठोठीराम जब ऐसे शब्द सुनता तो मन को पीड़ा होती, परन्तु सुनता कि पुरुषार्थ करता है तो प्रसन्नता होती कि मेरी प्रशंसा करते हैं। अपनी आलोचना गुरु के पास रखी। गुरु ने कहा—''प्रशंसा में हर्ष नहीं और निन्दा करे तो आपे से बाहर नहीं आना, मन में गमगीन नहीं होना, खेद नहीं करना। समभाव की आराधना करते रहो। इसके लिए एक सूत्र याद कर लो '**मा रुष मा तुष**'।'' वह सूत्र पाकर खुश हुआ किन्तु उसी समय उसे हाजत हो गई। पंचमी गया और सूत्र भूल गया। रास्ते में किसान खल निकाल रहे थे। उनसे पूछा—''क्या कर रहे हो?'' किसान ने कहा—''माष (उड़द) है और तुष (भूसा) को अलग कर रहा हूँ।'' उन मुनि ने सोचा—''अरे! गुरु ने यही तो कहा था- 'माष तुष'।'' गुरु का अभिप्राय था- माष अर्थात् मेरी आत्मा अलग है और तुष अर्थात् शरीर अलग है। कहाँ से कहाँ पहुँच गये! यह थी उनकी प्रज्ञा। चिन्तन चला और किसान के खेत पर ही परिवर्तन हो गया 'मुझे माष से तुष अलग करना है और चिन्तन

करते-करते कैवल्य ज्योति प्रकट कर ली। इसलिए किसी की हँसी नहीं उड़ावें। किस समय किसका नंबर आ जाए पता नहीं। पाटे पर बैठने वाले को लंबा समय लग जाए और जमीन पर बैठने वाला बाजी मार ले। कोई जरूरी नहीं कि पाटे पर बैठने वाला शीघ्र मोक्ष प्राप्त कर ले। वह भले क्षेत्र की दृष्टि से नजदीक हो, पर भावनाओं से नजदीकी न बने तो दूर के दूर ही रहने वाले हैं। आराधना सही नहीं बने तब तक प्रवेश नहीं होगा। चिन्तन करने की आवश्यकता है।

बड़ी दीक्षा के प्रसंग से बहुत-सी बातें कहने में आ चुकी हैं। छेदोपस्थापनीय के रूप में आज महाव्रतों का आरोपण करना है। छह जीव निकाय का उस रूप में उच्चारण वर्जित है, पर यहाँ जो प्रसंग उपस्थित होगा, वह स्वाध्याय का प्रसंग है।

आपने सुना होगा कि किसी जगह संतों का चातुर्मास हुआ और पूछ लिया—''कौन-सा शास्त्र सुनाऊँ?'' श्रावकों ने कहा—''आप ही फरमाएँ आप कौनसा शास्त्र सुनाएँगे।'' संत ने कहा—''उत्तराध्ययन?'' श्रावकों ने कहा—''यह तो सुनते ही रहे हैं।'' संतों ने कहा''उपासकदशांग सूत्र?'' श्रावकों ने कहा''यह भी सुना हुआ है।'' तब संतों ने कहा''भगवती सूत्र?'' श्रावकों ने कहा''हाँ, यह चलाओ।'' संत ने सोचा''ये सुनना चाहते हैं, पर पहले इनके हालात तो जान लूँ।'' पूछ लिया—''पंचेन्द्रिय कौन?''

श्रावक—''पंचेन्द्रिय हाथी है। हाथी के चार पैर और एक सूंड़ होती हैं।''

संत—''चतुरिन्द्रिय कौन?''

श्रावक—''चतुरिन्द्रिय तो ऊँट है क्योंकि उसकी गर्दन ऊँची रहती है।''

संत—''तेइन्द्रिय कौन?''

श्रावक—''घोड़ा तेइन्द्रिय है, तीन पैरों पर खड़ा रहता है।''

संत—''अच्छा, बेइन्द्रिय कौन है?''

श्रावक—''मैं और मेरी घरवाली।''

संत—''और एकेन्द्रिय?''

श्रावक—''एकेन्द्रिय में आप हैं, आपके न कोई आगे है और न कोई पीछे है।''

संत समझ गये। सोचा, यह है इनका शास्त्रीय ज्ञान और चाहते हैं भगवती सूत्र सुनाऊँ! ऐसे ही एक संत ने गाँव में पूछ लिया—''आपने व्याख्यान तो बहुत सुने हैं, बताओ पाँच महाव्रत कौन-से हैं?'' उन्होंने उत्तर दिया—''ओघा, मुँहपत्ती, चादर, चोलपट्टा और झोली।''

आप जानते हैं पाँच महाव्रत कौन-से हैं और किस रूप में हैं। किन्तु वहाँ उन संत ने कहा—''भाई तुमने हाथ पकड़ लिया है।'' और उन्होंने गाँव वालों की बात की पुष्टि इस प्रकार कर दी –

(1) ओघा : अहिंसा का प्रतीक है, रात्रि में पूंज कर चलना, एक कदम भी बिना पूंजे नहीं रखना चाहिए। इसलिए यह अहिंसा का प्रतीक पहला महाव्रत हो गया।

(2) मुँहपत्ती : बिना विचारे जो कहे, सो पीछे पछताय...। बिना सोचे बोलना नहीं। एक लफ्ज निकले वह भी निरर्थक नहीं। योद्धा युद्ध-भूमि में तीर चलाता है। एक तीर भी खाली चला गया तो मानों प्राण चले गये। एक तीर से सैंकड़ों को परास्त कर सकता है, पर एक भी विफल हो गया तो वह निहत्था बना देता है। एक भी लफ्ज बाहर निकले तो हिये की तराजू पर तोल कर निकालें। सोच लें कि बाहर आने पर क्या रूप बनेगा, उसी रूप में प्रयोग हो।

(3) चादर : धन-रुपये अपने पास पॉकेट में रखे जाते हैं। पर चादर ऐसी कि जिसमें कोई पॉकेट नहीं। पॉकेट नहीं तो फिर रखें कहाँ? तो रखे ही नहीं, ले ही नहीं। यह अचौर्य का प्रतीक है। बिना दिये कोई चीज ग्रहण न करे। चाहे खाने-पीने की चीज हो या पढ़ने-लिखने की चीज हो, बिना आज्ञा नहीं लेना। और तो क्या, यदि स्वधर्मी का सामान है तो भी अनुमति लेकर प्रयोग करना। एक भी सामान के बिना अनुज्ञा हाथ नहीं लगाना। देव अदत्त, गुरु अदत्त,...। देव की आज्ञा की चोरी देव अदत्त है। तीर्थंकर देवों की आज्ञा के विपरीत करे तो वह तीर्थंकर देवों की

अनुज्ञा की चोरी है। बिना अनुज्ञा लिए मकान में नहीं ठहरना, क्योंकि वहाँ तुम्हारा स्वामित्व नहीं है। और तो और इतनी बारीकी से बताया है कि यदि वह सुई लेने जाए और कह दे चादर सिलनी है, तो वह चादर ही सिल सकता है अन्य चोल-पट्टे आदि की सिलाई नहीं कर सकता क्योंकि वह चादर का बोलकर आया है।

(4) चोलपट्टा : सर्व प्रकार से जगत् की सभी स्त्रियों को माता-बहन के रूप में देखें। किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखें। मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य व्रत में एकाकारिता बने। कोई कह दे कि महाराज मेरे लड़का नहीं है, कुछ मंत्र बता दो। नहीं बताना। चोलपट्टे का तात्पर्य है - लंगोट के पक्के।

(5) झोली : न कोई ताला, न कोई चाबी। इसलिए कहा झोली। पैसा हो तो तिजोरी की आवश्यकता है। यह झोली अपरिग्रह का प्रतीक है।

'साधु बड़ा सावधान, रात रखे न पाव धान।' कल की चिन्ता नहीं। मौसम बिगड़ा हुआ है तो लाकर रख लो, कल काम आ जाएगा, ऐसा भी वह नहीं सोचता। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह व्रत के सैद्धान्तिक पक्षों की यह अत्यन्त व्यावहारिक विवेचना हुई। इसे यों भी समझ सकते हैं।

ज्योतिर्धर जवाहराचार्य से किसी भाई ने कहा— ''महाराज! आजकल घी बड़ा महंगा हो गया है।'' आज महंगा है कि सस्ता? आप कहेगें घी खाने वाले जानें, हमें तो डॉक्टर ने मना कर दिया है। आचार्यश्री ने कहा— ''महंगा आपके लिए होगा, साधु के लिए तो कुछ महंगा नहीं है।'' जिन्हें उपभोग की कोई लालसा नहीं उनके लिए महंगा-सस्ता का क्या मतलब? फिर यह भौतिकवादी चिन्तन भी है। आप का अर्थशास्त्र मांग और पूर्ति की कसौटी पर सब-कुछ कसता है और उनके बीच कोई सूत्र ढूंढता है। ऐसा सूत्र तो सामान्यतम आवश्यकता पर भी लागू होता है। इसी आधार पर मैं कह दूँ घी के बजाय आज पानी महंगा हो गया है। ऐसा है भी। मैंने एक दिन विचार करते हुए संतों से कहा था कि थोड़ा पुरुषार्थ करना पड़ेगा, परीषह सहन करना पड़ेगा। जिन घरों में धोवन-पानी उपलब्ध न हो और वे भावना भावें कि म.सा. गोचरी कर लो, तो टाल देना चाहिए। धोवन नहीं है तो फिर गोचरी के लिए अभी अवसर कहाँ है? धोवन नहीं है तो रोटी का क्या करें? धोवन होगा तब देखेंगे। फिर देखो स्थिति सुधर जाएगी। कई लोग त्याग रखते हैं कि कच्चा पानी नहीं पीयेंगे। पर क्या करते हैं? लौंग पीस कर डाल देते हैं, त्रिफला डाल देते हें। ऐसा पानी **'धोवन'** नहीं है। यह परम्परा शुद्ध नहीं है। जो धोने से बनता है वह **'धोवन'** है क्योंकि धोने से पूरे पानी में आलोड़न होता है, पूरे पानी का स्पर्श हो जाता है अत: वहाँ पूर्णतया निर्जीव होने की संभावना रहती है। इस प्रकार आप स्वयं पीते हैं तो कभी सहज रूप में संतों को भी प्रतिलाभित करने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

साभार- श्री राम उवाच-7 (आत्मकल्याण का मार्ग)

आत्मा का लक्षण चैतन्य रूप है। उसकी प्राप्ति हेतु गमन करने वाली आत्मा ही है, कोई इतर तत्व नहीं। इनके अतिरिक्त आत्मा शब्द की और व्याख्याएँ भी प्रस्तुत की जा सकती हैं, यथा- जो सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की शक्तियों से सत्ता रूप में संपन्न है, वह आत्मा है अथवा उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य लक्षण संपन्न उपयोग गुण वाली त्रिकालाबाधित आत्मा है। आत्मा सत् रूप होने से उसमें त्रिकालाबाधितता घटित होती है क्योंकि प्रत्येक सत् तत्व में उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य रूप तीनों अवस्थाएँ विद्यमान रहती है। आत्मा में ये तीनों अवस्थाएँ इस प्रकार घटित होती हैं कि आत्मा का स्वयं का मौलिक स्वरूप सदैव अवस्थित रहने से उसमें ध्रुवता और पर्याय परिवर्तन की दृष्टि से उत्पत्ति और विनाश घटित होता है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

ज्ञान सार

आध्यात्मिक आरोग्यम्

विवाद विग्रह से पराङ्मुखता

– संकलित

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम **'आध्यात्मिक आरोग्यम्'** ब्यावर की पुण्यधरा पर सन् 2021 को ज्ञान पंचमी के दिन प्रदान किया गया था। यह आयाम धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य से प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतारकर अपने जीवन को आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

नाव हमारी भँवर में,
कब आवेगी भाई।
सबसे मिलकर चालिए,
गुरु वचन सुखदाई।।

15-16 अप्रैल 2025 अंक से आगे...

12 अक्टूबर 2022 के प्रवचन में गुरुदेव फरमाते हैं कि अपनों से विवाद नहीं करना। वाद का अर्थ चर्चा होता है और जब उसमें विकार आ जाता है तो वह विवाद का रूप ले लेता है। उत्तराध्ययन सूत्र के पाप श्रमण अध्ययन में कहा गया है कि जो विवाद की उदीरणा करता है उसे पाप श्रमण कहते हैं।

विवायं य उदीरेइ... पाव-समणे त्ति वुच्चई

दशाश्रुतस्कंध में कहा गया है कि संघ में विवाद पैदा करने वाला महामोह कर्म का बंध करता है।

दशवैकालिक में कहा गया है कि साधु को कलह का त्याग करना चाहिए।

शास्त्रों में कहा गया है कि यदि कभी कलह हो जाए तो मुँह की अमी निगलने से पहले क्षमा याचना करे। न हो सके तो पानी पीने से पहले करे। तब भी न हो सके तो गोचरी जाने से पहले करे। यदि तब भी न हो सके तो सायंकालीन प्रतिक्रमण में कर ले। तब भी न हो सके तो पक्खी कर ले। तब भी न हो सके तो चौमासी को करे। और तब भी न हो सके तो संवत्सरी को करे। जो उस दिन भी चूक जाए उसकी समकित सुरक्षित नहीं रहती।

ध्यान रहे, विवाद से कलह होता है और कलह से झगड़ा। झगड़े से हाथापाई होती है और हाथापाई से हिंसा। सर्वविदित है कि हिंसा से साधुत्व संकट में आ जाता है। इसलिए शास्त्रकारों का उपदेश है कि साधु को अल्प झंझटवाला, अल्प कलहवाला, अल्प तू-तू, मैं-मैं वाला होना चाहिए।

'ठाणं' में कहा गया है कि मुनि सोचे कि मैं ऐसा कौन-सा कार्य करूँ, जिससे मेरे चतुर्विध संघ में कलह न होवे। वे अल्प झंझट और अल्प तू-तू, मैं-मैं वाले बनें।

समकित के पाँच लक्षणों में पहला लक्षण शम को कहा गया है। इसका अर्थ होता है समभाव रखना। शत्रु हो या मित्र, सब पर समभाव रहना चाहिए। साधु के 10 यति धर्मों में पहला धर्म 'क्षमा' को कहा गया है। इसका अर्थ होता है,

क्रोध नहीं करना। क्रोध इसलिए नहीं करना क्योंकि क्रोध में व्यक्ति अपना विवेक खो बैठता है। उसमें हित-अहित का पता नही चलता। क्रोधी व्यक्ति यह भूल जाता है कि किसको संभालना चाहिए और किसको नहीं। मुनि जम्बूविजय जी कहा करते थे कि अपने फर्स्ट ओरा वाले लोगों को कभी दुखी नहीं करना चाहिए। यह बात उन्होंने भारत के सबसे अमीर अडाणी ग्रुप को कही, जो उनके परम भक्तों में से एक है। जब व्यक्ति को क्रोध आता है तब वह अंधा हो जाता है और अपने फर्स्ट ओरा वाले लोगों से भी विवाद कर बैठता है।

शास्त्रकार महर्षि हर पल क्षमा धारण करने का उपदेश देते हैं। श्री आचारांग सूत्र में क्रोध त्यागने का उपदेश दिया गया है। श्री सूत्रकृतांग में इसे अध्यात्म दोष कहा गया है।

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा

श्री ठाणांग सूत्र में अनन्तानुबंधी आदि क्रोध के प्रकार बताए गए हैं।

श्री समवायांग सूत्र में क्रोध को पाप प्रकृति बताया गया है।

श्री भगवती सूत्र में क्रोध को कटु फल देने वाला बताया गया है।

श्री ज्ञाता सूत्र में क्रोध त्यागने का उपदेश दिया गया है।

श्री उपासकदशांग में भगवान क्रोध की निंदा करते हैं।

श्री निरयावलिका सूत्र पंचक में तो वाद-विवाद की व्याख्या है कि कैसे कोणिक राजा अपनी पत्नी के कहने पर एक हार और हाथी के लिए अपने भाई हल और विहल से महासंग्राम कर बैठता है। इसका नाम महाशिला कंटक और रथ मूसल संग्राम था। यह महासंग्राम महाभारत के युद्ध से भी बड़ा था। इसमें 10 दिनों में करीब 1 करोड़ 80 लाख लोग मरे। इसका वर्णन जैन शास्त्रों में है। कोणिक राजा को कई लोग समझाते हैं। 12 व्रतधारी श्रावक चेटक राजा ने भी समझाया। चेटक, कोणिक के नाना भी थे। किसी के समझाने का उस पर कोई असर नहीं हुआ। वह तो वाद-विवाद में अंधा बना हुआ था। किसी भी सूरत में मानने को तैयार नहीं था। वह अपने नाना की अवहेलना कर देता है और 10 दिन में अपने 10 भाइयों को बलि चढ़ा देता है।

गोशालक अपने गुरु तीर्थंकर भगवान से वाद-विवाद कर लेता है। जमाली अपने ससुर जी से वाद-विवाद कर लेता है। कमठ का वाद-विवाद तो नौ भवों तक चलता है। वाद-विवाद बढ़ते-बढ़ते वैरानुबंध का रूप ले लेता है और वह हर भव में अपना भयंकर परिणाम देता है। चंडकौशिक का पूर्व भव वाद-विवाद नहीं करने की प्रेरणा देता है। वाद-विवाद के कारण ही सारे यादव कुमार आपस में लड़ कर मर गए। वाद-विवाद के कारण ही शिशुपाल का वध हुआ। गीता में भी श्री कृष्ण क्रोध नहीं करने की प्रेरणा देते हैं। उपनिषद् भी क्षमा को श्रेष्ठ बताते हैं। पश्चिम में फोरगिवनेस शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ क्षमा होता है। जीसस क्राइस्ट अपने को सूली पर चढ़ाने वालों से भी वाद-विवाद नहीं करते। इस प्रकार सभी धर्म और धर्म उपदेशक वाद-विवाद नहीं करने की प्रेरणा देते हैं फिर भी हम वाद-विवाद में पड़े रहते हैं। एक छोटे से विवाद के कारण फर्स्ट वर्ल्ड वार हुआ, जिससे करीब 70-80 लाख लोग मारे गये। वाद-विवाद ने करोड़ों, अरबों लोगों को अपनी ज्वाला में भस्म कर दिया है।

इतिहास साक्षी है कि वाद-विवाद के कारण कितने युद्ध हुए हैं। कितनी लड़ाइयाँ हुई हैं। वाद-विवाद के कारण न जाने कितनी हत्याएँ हो चुकी हैं। ऐसी-ऐसी बातों पर विवाद हो जाता है जिसे सुनकर हँसी आएगी। एक शादीशुदा जोड़े ने अपनी शादी के 20 मिनट बाद ही तलाक ले लिया। पति ने उसका कारण बताया कि पत्नी ने मेरे हस्ताक्षर से बड़ा अपना हस्ताक्षर कर दिया। बड़े-बड़े विवाद हमेशा छोटी बातों से शुरू होते हैं। छोटी सी बात कब बड़ी हो कर वाद-विवाद का रूप ले लेती है, कहा नहीं जा सकता। विवाद के बहुत सारे कारण होते हैं। व्यक्ति कभी क्रोध के कारण विवाद करता है तो कभी मान के वश। कभी लोभ के वश तो कभी ईर्ष्या और कभी पद-प्रतिष्ठा के लिए विवाद हो जाता है।

वाद-विवाद से साधुओं की संस्था भी नहीं बच

पाती है। साधुओं के बीच भी दरार पैदा हो जाती है। साधु के पास कोई सम्पत्ति नहीं है पर अहंकार उसे झुकने नहीं देता। परिणामस्वरूप वह अपने परम उपकारी गुरुदेव का भी अविनय कर बैठता है। साध्वियाँ गुरुणी का...

एक खुशहाल संघ में द्वेष की चिनगारी भड़कने लगती है। भाई-बहन अलग हो जाते हैं। भाई-भाई एक दूसरे का मुँह नहीं देखते। माँ-बेटे, पिता-पुत्री में क्या नहीं होता। अपने को सही साबित करने के लिए न मालूम कितने झूठ बोले जाते हैं। इन भावों में यदि आयुष्य का बंध हो जाएगा तो सोचो क्या होगा! अगला भव???

साधुओं को लानी तो गोचरी ही है! चलना तो पैदल ही है! रहना तो गर्मी में ही है! सहना तो परीषह ही है! संघ से अलग होकर कौन-सी रोल्स रॉयस मिल जाती है! कहाँ अमेरिका का वीजा मिलता है! एक चीज छोड़कर और कुछ भी तो नहीं मिलती। जो चीज मिलती है वह है चिर असमाधि।

जैसे अग्नि सभी चीजों का भक्षण कर लेती है, वैसे ही वाद-विवाद सभी गुणों का भक्षण कर लेता है।

जैसे दिवाकर सर्व भोगी है, वैसे ही वाद-विवाद सब सद्‌गुणों का भोग कर लेता है।

जैसे सागर में खारापन है, वैसे ही विवाद में खारापन है।

जैसे साँप में जहर है, वैसे ही विवाद में जहर है।

जैसे बिच्छु में डंक है, वैसे ही विवाद में डंक है।

जैसे मगरमच्छ डरावना है, वैसे ही विवाद डरावना है।

जैसे शेर खूँखार है, वैसे ही विवाद खूँखार है।

जैसे उल्लू को सूरज नहीं दिखता, वैसे ही विवाद को सद्‌गुण नहीं दिखते।

जैसे दूध में नीबू का रस पड़ते ही दूध फट जाता है, वैसे ही विवाद मन में आते ही मन फट जाता है।

जैसे स्वयंभूरमण समुद्र अनंत है, वैसे ही विवाद की परंपरा अनंत है।

जैसे आकाश अनंत है, वैसे ही विवाद के दुष्परिणाम भी अनंत हैं।

जैसे भरतपुरी लोटा बिन पेंदे का होता है, वैसे ही विवादी पुरुष बिन पेंदे का होता है।

जैसे बिजली अपना-पराया देखे बिना सब को झटका देती है, वैसे ही विवादग्रस्त पुरुष सबको झटके देते हैं।

विवाद ने अनेक जीवन बर्बाद कर दिए। कितने मन मलिन कर दिए। अनगिनत दिलों को तोड़ दिया। अनगिनत आँखों में आँसू दिए।

विवाद मन में खटास पैदा करने वाला है।

मिठास का नाश करने वाला है।

अपनों में दूरी पैदा करने वाला है।

विवाद क्रूर बनाने वाला है।

विवाद लज्जा का नाश करने वाला है।

विवाद भयंकर से भयंकर दुष्कृत्य करने वाला है।

गुरुदेव फरमाते हैं कि वाद-विवाद मत करो। ये छोटा-सा जीवन है। एक मिनट क्रोध में होने पर आप 60 सेकंड की खुशी का नाश कर देते हो। एक घंटे क्रोध करते हो तो 3600 सेकंड। एक दिन में 86400 सेकंड। एक साल में 31536000 सेकंड। पीढ़ियाँ खत्म हो जाती हैं पर लड़ाई नहीं खत्म होती। कोर्ट में सालों-साल मुकदमा चलता रहता है। तारीख पर तारीख पड़ती रहती है। दोनों पक्षों के पैसे लगते रहते हैं। जेब खाली होती रहती है। केस करने वाला मर जाता है पर केस जिंदा रहता है। न मालूम कितने घरों की ये दास्तान है।

विवाद ऐसा राक्षस है जो सब को खा जाता है।

यह ऐसी बाढ़ है जिसमें सब डूब जाते हैं।

ऐसी खाई है जिसमें सब गिर जाते हैं।

इतना पढ़ने के बाद भी क्या आपके मन में विवाद करने की इच्छा है?

एक बार एक सभा में एक सन्त ने पूछा कि बताइए विवाद क्यों है?

...तो किसी ने कहा, कोई बात नहीं मानता है इसलिए।

किसी ने कहा, मन लायक काम नहीं होता है इसलिए।

किसी ने कहा कि कोई हमें नहीं पूछता है इसलिए।

किसी ने कहा, विचार नहीं मिलते हैं इसलिए।

किसी ने जनरेशन गैप कहा तो किसी ने कुछ और...

सबकी बात सुनने के बाद उन्होंने कहा की आपकी बात भी सही हो सकती है पर आप मेरी भी सुनो। प्रश्न है कि विवाद क्यों होता है? संत कहते हैं कि विवाद करने से होता है। लड़ाई करने से होती है। तू-तू, मैं-मैं करने से होता है। झगड़ा करने से होता है। हम विवाद नहीं करते तो विवाद नहीं होता है। झगड़ा नहीं करते हैं तो नहीं होता है। तू-तू, मैं-मैं नहीं करते तो नहीं होता है।

आपने कहा कि कोई बात नहीं मानता। ध्यान देंगे तो पता चलेगा कि बात नहीं मानने वाले अधिकांश लोग हमारे करीबी ही होते हैं। जो हमें बहुत प्यारे हैं या बहुत प्यार करते हैं वे कुछ भी करते हैं हमें गुस्सा नहीं आता। आता भी है तो लम्बा नहीं खिंचता किंतु वही चीज जब दूसरे करते हैं तो बात बिगड़ जाती है।

इसका मतलब यह हुआ कि जहाँ अपनेपन का भाव नहीं है, वहाँ वाद-विवाद की संभावना बढ़ जाती है और जहाँ अपनापन होता है, वहाँ वाद-विवाद गायब हो जाता है। इससे पता चलता है कि हम वाद-विवाद करेंगे तो होगा, नहीं करेंगे तो नहीं होगा। हम अपने आप से वादा करें कि कभी वाद-विवाद नहीं करेंगे। बात को हम बढ़ाते हैं तो बढ़ जाती है। बात को खींचते हैं तो खिंच जाती है। आग लगाने से आग लगती है। आग में घी डालने से वह भड़कती है। हम तो पहले से ही बारूद लिए बैठे रहते हैं। दूसरा जैसे ही चिनगारी लगाता है, बारूद में विस्फोट हो जाता है।

एक प्रश्न है कि माचिस की तीली जलाने पर क्या होगा?

जवाब आया, आग लग जाएगी।

फिर प्रश्न पूछा कि यदि गिलास में पानी हो तब तीली जलाएंगे तो क्या आग लगेगी?

फिर जवाब आया, नहीं-नहीं, वो तो बुझ जाएगी।

बस यही बात है। हमारे अंदर विवाद होता है तो बाहर भी विवाद निकलता है।

भगवान महावीर स्वामी पर तेजोलेश्या फेंकी गयी फिर भी वे शांत रहे। उन्होंने कोई विवाद नहीं किया। विवाद इसलिए नहीं किया क्योंकि उनके अंदर विवाद था ही नहीं। उन्हें साँप ने काटा तो दूध की धारा निकली क्योंकि उनके अंदर क्षमा का दूध भरा हुआ था। कहते हैं कि काँटे उनको देखकर उल्टे हो जाते थे। वे आदमी ही ऐसे थे कि कोई काँटा उनको चुभ ही नहीं सकता। कोई कैसा भी शूल बिछाए वह उसे चुभने ही नहीं देते। उनके शरीर से कभी बदबू नहीं आती थी। आएगी कहाँ से! अंदर होगी तो आएगी न! थी ही नहीं तो आएगी कहाँ से। उन्होंने कभी विवाद किया ही नहीं। एक हम हैं जो फूलों को भी चुभों लें। महावीर जैसे आदमी को काँटे भी नहीं चुभते और हम फूलों से भी लहुलुहान हो जाते हैं।

शास्त्र में कहा गया है कि कुशिष्य गुरु की शिक्षा को भी उल्टे रूप में लेता है। वह सोचता है कि गुरु मुझे दास समझते हैं, मुझसे द्वेष करते हैं पर विनीत शिष्य थप्पड़ और डंडा पड़ने पर भी विनय भाव बनाए रखता है।

विवाद करना एक आदत है। आदती व्यक्ति को तो मुद्दा चाहिए। वह यहाँ क्यों बैठ गया, यहाँ क्यों नहीं बैठा? उसने मुझसे बात क्यों की? उसने मुझसे बात क्यों नहीं की? उसने उससे बात क्यों की? उसने उससे बात क्यों नहीं की? एक व्यक्ति ने तो आशीर्वाद देने पर भी विवाद कर लिया कि मेरे सिर पर हाथ क्यों रख दिया? कुछ लोग इस पर विवाद कर लेते हैं कि उसने मुझे देखा ही नहीं और देखने पर भी यह कह कर विवाद कर लेंगे कि मुझे घूर रहा है?

कई लोगों की विवाद करने के मामले में पी.एचडी. होती है। कई तो विवादों के इंजीनियर होते हैं और कई एम.बी.ए.। जिस आदमी का जन्म ही विवाद करने के लिए हुआ हो वह तो किसी से भी विवाद कर लेगा। खाने-पीने को लेकर विवाद, पहनने को लेकर विवाद, बर्तनों को लेकर विवाद, कपड़ों के लिए विवाद, जेठानी का विवाद, बेटे का विवाद, बेटी का विवाद, गुरु का विवाद, शिष्य का विवाद, गुरुभाई का विवाद, ठंडा है तो विवाद, गर्म है तो विवाद, लोग आ जाएं तो विवाद, नहीं आएं तो विवाद, पैसा है तो विवाद, पैसा न हो तो विवाद। विवाद करना एक मनोवृत्ति है। 95 फीसदी विषय नहीं विवादास्पद होता, आदमी विवादास्पद होता है।

साभार- आध्यात्मिक आरोग्यम्

ज्ञान सार

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 अप्रैल 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 173 उपशांत कषाय वीतराग दर्शन आर्य के भेदों की विवक्षा प्रथम समयवर्ती आदि से क्यों की गई है?

उत्तर यह दर्शन आर्यत्व 11वें जीवस्थानवर्ती जीव में होता है। इसमें परिणाम अवस्थित होते हैं। अतः चाहे प्रथम समयवर्ती हो चाहे चरम समयवर्ती हो, विशुद्धि समान रहती है किन्तु चरम समय के पश्चात् इनकी विशुद्धि में अवश्य हानि होती है और ये नीचे जीवस्थान में चले जाते हैं।

प्रश्न 174 क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं - छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

ज्ञातव्य बिन्दु - क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्यत्व 12वें जीवस्थानवर्ती जीव में होता है। इनके प्रतिसमय अनंत गुणा विशुद्धि बढ़ती जाती है फलस्वरूप छद्मस्थ अपने दर्शन आर्यत्व के शिखर पर होता है। इनकी आत्मा पर श्रद्धा का रस इतना विस्तार पा लेता है कि उसके सामने स्वयंभूरमण समुद्र भी छोटा दिखता है।

प्रश्न 175 छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं - स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

प्रश्न 176 स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं -

(1) प्रथम समय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और

(2) अप्रथम समय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

अथवा

(1) चरम समय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और

(2) अचरम समय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

प्रश्न 177 बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं -

(1) प्रथम समय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और

(2) अप्रथम समय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

अथवा

(1) चरम समय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और

(2) अचरम समय बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

प्रश्न 178 बुद्धबोधित किसे कहते हैं?

उत्तर आचार्य आदि के द्वारा प्रतिबोध (प्रत्यक्ष ज्ञान के विषय को) पाकर जो सिद्ध होते हैं, वे बुद्धबोधित कहलाते हैं। बुद्ध अर्थात् बोध, ज्ञान।

प्रश्न 179 केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं – सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

प्रश्न 180 सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितने भेद हैं?

उत्तर सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं –

प्रथम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अप्रथम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

अथवा

चरम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अचरम समय सयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

प्रश्न 181 अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के कितनेभेद हैं?

उत्तर अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद हैं –

प्रथम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अप्रथम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

अथवा

चरम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य और अचरम समय अयोगिकेवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य।

आचरणीय बिंदु – जिनवचन में शंका नहीं, परदर्शन की आकांक्षा नहीं, धर्मफल में संदेह नहीं, परपाखंडी का परिचय नहीं – ऐसा होना चाहिए हमारा दर्शन।

चारित्र आर्य

प्रश्न 182 चारित्र आर्य किसे कहते हैं तथा इसके कितने भेद हैं?

उत्तर चारित्र का सम्यक् रूप से पालन करने वाले चारित्र आर्य कहलाते हैं। इसके दो भेद हैं। यथा –

(1) **सराग चारित्र आर्य –** इनके चारित्र में राग आदि कषाय का सद्भाव होता है। 6 से 10 जीवस्थानवर्ती सराग चारित्र आर्य वाले होते हैं।

(2) **वीतराग चारित्र आर्य –** इनके चारित्र में राग आदि कषाय का अभाव होता है। 11 से 14 जीवस्थानवर्ती वीतराग चारित्र आर्य होते हैं।

–क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

तेरहवाँ अध्ययन : चित्तसंभूइज्जं अज्झयणं

15-16 अप्रैल 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

दो जीवों, पिछले तीन भवों में साथ-साथ रहने का कथन कर दिया गया है। चौथे भव में दोनों पुनः चाण्डाल कुल में युगल पुत्र रूप में उत्पन्न हुए, उनका नाम चित्त-सम्भूत रखा गया। नीच कुल में उत्पन्न होने के कारण वे लोगों द्वारा घृणित एवं तिरस्कृत किये जाते इसलिए वे अपने जीवन से अत्यंत दुःखी थे। स्थविरों से मुक्ति मार्ग का उपदेश सुनकर दोनों ने प्रव्रज्या ग्रहण कर ली और घोर तप एवं पवित्र चारित्र धर्म का पालन करते हुए कर्मों को क्षीण करते जा रहे थे। तपोबल से वे कई लब्धियों के धारक बन गये थे, फिर -

एक दिन ग्रामानुग्राम विहार करते हुए दोनों मुनि हस्तिनापुर पहुँचे। मास खमण के पारणे के दिन सम्भूतमुनि नगर में भिक्षाचर्या के निमित्त भ्रमण करते हुए राजमार्ग पर आए तब नमुचि मंत्री ने उन्हें पहचान लिया। उसे संदेह हुआ कि 'मुनि ने मेरा पुराना वृत्तान्त प्रकट कर दिया तो मेरी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाएगी। अतः मुनि को नगर से निकलवाने के लिए नमुचि ने प्रजा को इनके विरुद्ध भड़काकर अपने दूतों द्वारा मुष्टि और लाठी से पिटवाया। कुछ देर मुनि शांत रहे किन्तु फिर अपमान से दुःखित हुए सम्भूत मुनि का क्रोध जागृत हुआ और रोष में आकर उन्होंने तेजोलेश्या छोड़ दी जिसके कारण पूरे नगर में धुएँ के कारण अंधकार फैल गया। सभी घबराकर अपने अपराध की क्षमा मांगकर मुनि को शांत करने लगे। सनत्कुमार चक्रवर्ती भी घटना स्थल पर पहुँचे और मुनि से क्षमा मांगी और प्रार्थना की— ''हे महात्मन् ! आप अपना कोप शांत करें और नगरवासियों को जीवनदान दें''। चित्त मुनि भी वहाँ आए और उन्होंने सम्भूत मुनि के क्रोध को उपशांत करने एवं तेजोलेश्या को समेटने को प्रिय वचनों से समझाया।

इस प्रकार हितकारी उपदेश से सम्भूतमुनि का क्रोध शांत हुआ। उन्होंने तेजोलेश्या समेटी, अन्धकार मिटा। सनत्कुमार चक्रवर्ती भी प्रवासियों के साथ नगर में चले गये। इतने में चित्त और सम्भूत मुनि ने विचार किया कि 'हम काय संलेखना कर चुके हैं अतः अब यावज्जीवन अनशन करना चाहिए'। दोनों मुनियों ने अनशन ग्रहण किया।

''नमुचि मंत्री ने ही यह करवाया है''—ऐसा जानकर सनत्कुमार चक्रवर्ती ने उसे रस्सी द्वारा बाँध कर मुनियों के पास ले जाने का आदेश दिया। जब मुनियों ने उसकी दयनीय दशा देखी तो उन्होंने नमुचि को बंधनमुक्त करवा दिया क्योंकि मुनिराज स्वभावतः करुणामयी और दयालु हुआ करते हैं। जब चक्रवर्ती ने यह बात सुनी तो वह भी मुनिराज को वंदन करने लिए अपने पूरे अन्तःपुर के साथ आए और भक्ति भाव से ओत-प्रोत होकर उन मुनिराज के चरणों में अपना सिर झुकाया। चक्रवर्ती की रानी सुनंदा ने भी भक्ति भाव से सम्भूतमुनि के चरणों में सिर झुकाया। रानी के कोमल

केश-स्पर्श से मुनि को सुखद अनुभव हुआ। मुनि ने मन ही मन निदान का विचार करना प्रारंभ किया था। चित्त मुनि ने उनके हार्दिक अभिप्राय को जान लिया और सम्भूतिमुनि को प्रतिबोधित करते हुए इस प्रकार कहा— ''भाई ! इस खोटे अध्यवसाय से अपनी रक्षा करो। तुम अपनी आत्मा के प्रति कर्तव्य पथ को भूलकर दु:खी बनने के लिए अग्रसर हो रहे हो, यह सब संसार के सुख बाहर से ही रम्य हैं तथा इस अनंत संसार में ये परिभ्रमण के मूल कारण हैं। भूल कर भी अपने धर्म अनुष्ठान का निदान मत करना'' किन्तु उस प्रतिबोध का सम्भूत मुनि पर कुछ असर नहीं हुआ और उन्होंने निदान कर लिया— ''यदि मेरी तपस्या का कुछ फल हो तो भविष्य में मैं चक्रवर्ती बनूं''। दोनों मुनियों का अनशन पूर्ण हुआ, दोनों सौधर्म देवलोक **(पाँचवें भव)** में देव रूप में उत्पन्न हुए।

ब्रह्मदत्त और चित्त का पृथक् नगर में जन्म

पाँच भवों तक साथ-साथ रहने वाले छठे भव में दोनों ने पृथक्-पृथक् नगर और कुल में जन्म लिया। छठे भव का वर्णन श्री उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर स्वामी ने सारभूत सूत्र रूप में इस प्रकार फरमाया है –

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु हत्थिण-पुरम्मि।
चुलणीए बंभदत्तो, उववण्णो पउमगुम्माओ।।1।।
कंपिल्ले संभूओ, चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि।
सेट्ठि-कुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ।।2।।

भावार्थ – पूर्व भव में हस्तिनापुर में सम्भूत मुनि जाति से अत्यंत तिरस्कृत हुए एवं निश्चय से चक्रवर्ती बनने का निदान किया था इसलिए वे 'पद्मगुल्म' नामक देव विमान से च्यवन करके चुलनी रानी की कुक्षी से पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए। पुत्र का नाम 'ब्रह्मदत्त' रखा गया। कालान्तर में उन्होंने सौधर्म देवलोक में चक्रवर्ती पद को प्राप्त किया।

इस तरह सम्भूत का जीव (ब्रह्मदत्त) कांपिल्य नगर में उत्पन्न हुआ तथा उनके पूर्वभव का भाई चित्त पुरिमताल नगर में एक बहुधन एवं परिवार से संपन्न श्रेष्ठि के कुल में पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ। (पुत्र का नाम 'गुणसार' रखा गया और वे जिनमार्गानुसारी शुभचन्द्र आचार्य के पास श्रुत चारित्र रूप धर्म का उपदेश सुनकर मुनि दीक्षित हो गये थे)

हत्थिण-पुरम्मि – हस्तिनापुर में – वर्तमान में यह मेरठ से बाइस मील उत्तर-पूर्व में स्थित है।

पउमगुम्माओ – पद्मगुल्म – सौधर्म देवलोक अर्थात् पहले देवलोक में 32 लाख विमान हैं। उनमें से एक विमान का नाम 'पद्मगुल्म' है।

कंपिल्ले – कांपिल्य नगर – वर्तमान में यह उत्तर प्रदेश में गंगा नदी के समीप कंपिल गाँव के नाम से जाना जाता है।

एक बार ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के समक्ष नट मण्डली आई। जब नाटक प्रारंभ हुआ तब नृत्य को देखते एवं मधुर गीत को सुनते हुए चक्रवर्ती को मन में अनुभूति हुई कि ''मैंने ऐसा नाटक पहले कहीं देखा है। मेरे द्वारा यह सब कार्य कहाँ हुआ है''? चिंतन में लीन होने पर उनको जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। उसके प्रभाव से चक्रवर्ती को अपने पूर्व के पाँच भवों का स्मरण हुआ। सौधर्म लोक का दृश्य आँखों के सामने आया। पूर्वजन्म की स्मृतियाँ करते-करते चक्रवर्ती मूर्च्छित हो गये। शीतल उपचार से उन्हें स्वस्थ किया गया। उन्हें पिछले पाँच भव के सगे भाई की याद आने लगी और उनसे मिलने के लिए आतुर एवं बेचैन हो उठे। वह कहाँ है ? कैसे उसका पता लगाएँ ? जातिस्मरण के प्रभाव से अपने पूर्व पाँच भवों के भाई का विचार करते हुए उन्होंने उनकी खोज करने के निमित्त से एक श्लोक के दो चरण रचे, उसका पहला चरण इस प्रकार था –

''आस्व दासौ मृगौ हंसौ, मातंगावमरी तथा.....''

चक्रवर्ती ने सर्वत्र घोषणा करवा दी कि 'जो इस अर्ध श्लोक को पूरा करेगा उसको राजा अपना आधा राज्य भेंट (प्रदान) करेंगे'। जन-जन के मुख पर इस श्लोक की चर्चा चल पड़ी थी।

सब लोगों ने खूब प्रयत्न किया परन्तु सभी असफल रहे। चक्रवर्ती के पूर्वभव के भाई चित्त, जिन्होंने किसी श्रेष्ठि (सेठ) के यहाँ जन्म लिया था, उन्होंने भी जातिस्मरणज्ञान से अपने पूर्वभव को जाना और उन्होंने संसार से विरक्त होकर दीक्षा अंगीकार कर ली। एक समय गुणसार मुनि (चित्त) चर्या करते हुए काम्पिल्य नगर के बाहर ठहरे हुए थे। तब वहीं किसी अरहट चलाने वाले द्वारा जोर-जोर से बोले जाने वाला अर्ध श्लोक उनके कानों में पड़ा। सुनते ही उन्होंने आगे के चरण को पूरा कर दिया –

"एशा नौं षष्ठिका जातिः अन्योऽन्याभ्यां विमुक्तयोः"

अरहट चलाने वाले ने श्लोक पूर्ति सुना तो वह हर्ष से उछल पड़ा। उसने आगे के चरण को एक पत्ते पर लिखा और आधा राज्य पाने की खुशी में चक्रवर्ती के पास पहुँचा और एक ही साँस में पूरा श्लोक उन्हें सुना दिया। सुनते ही चक्रवर्ती स्नेहवश मूर्च्छित हो गये। सामंतों ने अरहट चलाने वाले को राजा की इस स्थिति का कारण जानकर उसे पकड़ लिया। तब घबराकर अरहट चलाने वाला कहा— "मैंने इस श्लोक की पूर्ति नहीं की है। वन में एक मुनिराज आए हुए हैं, उन्होंने ही इस श्लोक की पूर्ति की है। मैंने तो पूर्ण हुए इस श्लोक को सिर्फ यहाँ आकर सुनाया है इसलिए आप लोग मुझे छोड़ दीजिए"। जब चक्रवर्ती की मूर्च्छा दूर हुई तो उन्होंने सारी जानकारी प्राप्त की। उस अरहट चलाने वाले को बहुत सारा धन देकर संतुष्ट कर विदा किया। चक्रवर्ती नंगे पाँव दौड़कर अपने अन्त:पुर से मुनिराज के दर्शन के लिए उस उद्यान में पहुँचे। चक्रवर्ती ने भक्तिभाव से मुनिराज को वन्दन किया और सविनय उनके सामने जाकर बैठ गये। मुनि ने धर्म देशना देना प्रारंभ किया। कहा— "यह संसार असार है, क्षणभंगुर है, शरद्कालीन मेघों के समान है। यौवन बिजली के समान चंचल है। लक्ष्मी जल की बिन्दु के समान है। इन सबका अन्त अनिवार्य है।" इस प्रकार संसार की असारता वर्णित करते हुए यह भी बतलाया कि मोक्षमार्ग क्या है और वह जीव को कैसे प्राप्त होता है? मुनिराज की इस धर्म देशना को सुनकर सभा के समस्त जन वैराग्य भाव से भावित हुए। परन्तु ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के हृदय में मुनि की देशना का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ।

– क्रमशः

श्री उदित मुनि जी म.सा. का चौविहार संथारा सहित पंडितमरण

रतलाम। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संत श्री उदित मुनि जी म.सा. का चौविहार संथारा सहित दिनांक 6 मई 2025 को पंडितमरण हो गया। आपश्री जी को शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. के मुखारविंद से चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए गए। डोलयात्रा में अपार जनमेदिनी की उपस्थिति जय-जयकारों के साथ आपश्री जी के गुणानुवाद करती हुई संथारा की अनुमोदना कर रही थी। (विस्तृत समाचार आगामी अंक में)

– श्रमणोपासक टीम

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

थाँदला और मंदसौर

15-16 अप्रैल 2025 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चरित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. ने 1962 से 1971 तक के चातुर्मास सोजत में साध्वी श्री बड़ी आनन्द कुमारी जी म.सा. की सेवा में ही व्यतीत किये। इन चातुर्मासों में आपका शास्त्रीय अध्ययन काफी समृद्ध हो चुका था। आपका लक्ष्य हमेशा अपनी गुरु श्रद्धेय साध्वी श्री आनन्द कुमारी जी म.सा. की आज्ञा को शिरोधार्य करना रहता था। आप आज्ञा-पालन में ही आनन्द मानती थी। उस समय कष्टों की कोई कल्पना आपके मन में ही नहीं रहती थी। आपको साध्वी श्री बड़ी आनन्द कुमारी जी म.सा. की ओर से मूलीबाई आर्या व केशर जी आर्या को साथ लेकर थांदला की ओर विहार करने की आज्ञा हुई। आपका दिल तो अपनी श्रद्धेय मातृतुल्य महासती जी की सेवा छोड़ने का नहीं था, पर आपका सिद्धान्त था- *'आज्ञा गुरुणामविचारणीया'* गुरु की आज्ञा होने पर कोई विचार नहीं करना चाहिए। अब आपका अपनी जन्मभूमि सोजत से विहार हो रहा था। सोजत के लोगों के मुँह पर केवल एक ही वाक्य था— ''महासती जी फिर कब पधारेंगी? अभी और विराजती तो अच्छा रहता।'' सबके मन साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. के विहार से भावुक थे, परंतु गुरुणी जी की आज्ञा के सामने संघ की भावुकता का कोई मूल्य नहीं था। आपके सांसारिक परिवार एवं संघ के लोगों ने बहुत दूर तक विहार सेवा का लाभ लिया।

सोजत से विहार कर आपश्री का मार्गवर्ती क्षेत्रों को पावन करते हुए उदयपुर में पदार्पण हुआ। उदयपुर में उस समय काफी धर्मोदय हो रहा था। प्रातः स्मरणीय चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. अपने मुनि मंडल सहित वहाँ विराजित थे। साथ ही साध्वीवर्याएँ 13 ठाणा से विराजित थीं। आपश्री आदि ठाणा के पधारने से कुल 16 ठाणा हो गए। पूज्यश्री की अनुपम प्रतिभा ने साध्वी श्री छोटी आनंद कुमारी जी म.सा. में एक विलक्षण तेज पाया और आपके शानदार व्यक्तित्व की छाप भी उन पर पड़ी। उन्हें आप जैसी धैर्यशालिनी महासती को देखकर बड़ा संतोष हुआ। जोधपुर की ओर आपके विहार की घटना को कर्णगोचर करके तो आचार्यश्री जी ने आपश्री को साधुवाद प्रदान किया।

उदयपुर में पूज्यश्री की सेवा में थोड़े दिन रहकर आपने जावरा की ओर विहार किया। जावरा तो आपके चरणस्पर्श से पहले ही पवित्र हो चुका था। फिर भी वयोवृद्ध साध्वियों को सम्हालना एवं उनकी सेवा का लाभ लेना था। अत: वहाँ पर रहकर आपने आँवले लिये,

पर पथ्य का पूर्णत: पालन न हो सका। कारण, आप शरीर की इतनी परवाह नहीं करती थी। जैसा मिल जाता वैसा आहार कर लेती। इसलिए वहाँ ज्येष्ठ मास तक विराजीं। वहाँ से विहार करके छोटे-छोटे ग्रामों में धर्मोद्योत करती हुई आपश्री आषाढ़ तक 'रावटी' पधारीं।

थाँदला की जनता को आपके आगमन का समाचार मिल चुका था। वहाँ के लोग आपके शुभागमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। थाँदला वही स्थल है जहाँ की रत्नगर्भा भूमि में आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. जैसे दिव्य रत्न पैदा हुए हैं।

थाँदला वालों ने झब्बालाल जी नामक एक श्रावक को आपकी अगवानी हेतु भेजा। वे रावटी में आपकी सेवा में उपस्थित हो गए। रावटी में ठहरने के लिए काफी आग्रह था, पर आपको थाँदला पधारना था। बीच में ही कैसे ज्यादा दिन बिताती? अत: विहार हो गया। रास्ते में एक छोटा-सा गाँव आया, जहाँ आपश्री लगभग दस बजे पहुंचीं। भिक्षाचरी में थोड़ा-बहुत आहार-पानी मिला, उसे लेकर एक बजे विहार कर दिया। दोपहर का समय था। आपश्री थोड़ी ही दूर चले थे कि पाँव जलने लगे। ऊपर से सूर्य ताप उष्णता फेंक रहा था, नीचे कंकरीली जमीन से पैर छिल रहे थे। साथ में भयंकर अंधड़ भी ऐसा चला कि चलना भी कठिन हो गया। हवा इतनी तेज कि कपड़े सम्हालना भी दूभर हो गया। इस पर वर्षा की झड़ी लग गई। मालवे में बरसात आती है तो कंजूस के धन की तरह रोती-रोती नहीं आती, वह तो एकदम मूसलाधार बरसती है, जिससे जल-थल एक हो जाता है। आगे तीन कोस चलना था, तब जाकर कहीं ठहरने का स्थान मिलता। पर बीच में ही गर्मी, बरसात आंधी आदि के मेल से सघन अंधकार हो गया। ठहरने के लिए रास्ते में कोई गाँव नजर नहीं आ रहा है। चारों तरफ पहाड़ियाँ और सघन झाड़ियों ने अंधेरा बढ़ाने में और सहायता कर दी। उस समय का दृश्य बड़ा भयावना हो रहा था। बड़ी विकट समस्या थी। ठहरने के लिए स्थान की तलाश थी, पर वह नहीं मिल रहा था। रास्ते में कई सरकारी मकान भी मिले, पर वहाँ ठहरने कौन देता? कष्ट आते हैं तो एक साथ ही आकर हमला बोलते हैं। सरकारी मकान पर कोई एक-आधा चौकीदार मिला। वह कहने लगा—"आप लोग यहाँ नहीं ठहर सकतीं। यहाँ रात में कभी-कभी सिंहादि हिंसक प्राणी आते हैं। उजाड़ के कारण जगह बड़ी खतरनाक है। इसी कारण सरकारी तौर से यहाँ किसी को ठहराने की सख्त मनाही है।"

इन पहाड़ी स्थलों में चोर लुटेरों का भी काफी उपद्रव रहता है। परन्तु झब्बालाल जी ने बुद्धिमानी से एक भील के लड़के को साथ में ले लिया ताकि कहीं लुटने का डर न हो। ऐसे भयंकर जंगल में यदि भीलों का एक छोटा-सा बच्चा तीर लेकर साथ चले तो कोई सताता नहीं।

हाँ, तो साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. अपनी शिष्याओं सहित अपना मार्ग तय कर रही थीं। उन्हें सिवाय भगवान की आज्ञा के और कोई भय नहीं है। भगवान की आज्ञा का कहीं उल्लंघन न हो जाए, यह डर तो उन्हें हर समय रहता है। संध्या का समय हो आया। रास्ते में दूर तक काँटे बिछे पड़े थे। पूरी सावधानी से चलने पर भी पैर काँटों से छिद गये। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. के पैरों में तो शूल ने घुस कर रक्त का आस्वादन कर ही लिया। बड़ी वेदना हो रही थी, जिस कारण चला भी नहीं जा रहा था। फिर भी आपके मन में इन कठिनाइयों के प्रति कोई ग्लानि नहीं थी। आप साहसपूर्वक चल रही थीं। अंधकार में रास्ते का पता नहीं चल रहा था, पर बीच में ही जंगल में कहाँ डेरा डालें। आखिर तो कहीं ठिकाना मिलेगा ही।

घोर अंधकार ने एक विपत्ति और बुलाई। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. का पैर तारों में उलझ गया और आप धड़ाम से गिर गईं। आपके काफी चोटें आईं। आपकी संगिनी लकड़ी भी अंधेरे में कहाँ जाकर

गिरी, पता ही नहीं चला। इस कठोर विहार में आपके धैर्य की पग-पग पर परीक्षा हो रही थी। एक के बाद एक आपत्ति और कठिनाई अपना दल-बदल लेकर सामने अड़ती ही जा रही थी। परंतु साध्वी आनंद कुमारी जी म.सा. हताश नहीं हुई। काफी संकट का सामना करना पड़ा, तब जाकर तीन घड़ी रात के बाद भैरोंगढ़ स्टेशन के दर्शन हुए। वहाँ पर भी ठहरने का ऐसा स्थान मिला, जहाँ पशु भी बड़ी मुश्किल से ठहर सकते थे। भिक्षु जीवन में अच्छी और बुरी जगह का कोई प्रश्न ही नहीं। आपश्री को तो रातभर ठहरना था। अच्छी जगह हुई तो क्या और बुरी हुई तो क्या? उन्हें तो उत्तराध्ययन सूत्र का वह मूलमंत्र *'किमेगराइं करिस्सइं एवं तत्थऽहियासए'* अपनाना था।

कपड़े पानी से लथपथ हो गए थे। भैरोंगढ़ स्टेशन छोटा-सा स्टेशन था। वहीं एक ओर ठहरने को स्थान मिला। दुर्भाग्य से वहाँ भी इधर-उधर गोंद बिखरा हुआ था। उसकी डलियाँ सारे कपड़ों में चिपक गई। बड़ी कठिनाई से उनको कपड़ों से अलग किया। शूल का काँटा तो मानता ही न था। वह तो रातभर आपके कोमल चरणों की शय्या पाकर सोया रहना चाहता था। सुबह होते ही उसे भी किसी तरह से विदा किया। जैसे-तैसे रात काटी। नींद तो पूरी आती ही कैसे? यहाँ पर मीराँ बाई का वह गीत याद आ रहा है –

हेरी मैं तो दर्द दीवानी, मेरो दर्द न जाने कोय।
शूली ऊपर सेज हमारी सोणो किस विध होय।।

यही हालत आपकी भी हो रही थी। आपने तो महावीर प्रभु का बताया हुआ तलवार की धार अथवा शूली की नोक से बढ़कर तीक्ष्ण मार्ग अपना रखा था। आपको नींद कैसे आती? यहाँ तो *'सुत्ताऽमुणिणो मुणिणो सया जागरंति'* का आदर्श चमक रहा था। आप धर्म-प्रचार का अदम्य उत्साह रखने वाली थीं। साथ ही आपकी शिष्या-मण्डली भी शान्त भाव से आपके पद-चिह्नों पर चल रही थी। संकटों में भी किसी के मुख पर म्लानता, कोई भय नहीं था। धर्म प्रचार करने वाले महापुरुषों को दु:ख भी सुख ही मालूम होता है।

सुबह सूर्योदय होते ही विहार हुआ। रातभर की थकावट एवं दिल में परेशानी भी काफी थी। फिर भी साधु-जीवन का मार्ग है, विहार तो करना ही था। वहाँ से विहार कर पेटलावद पधारे। वहाँ दो दिन के प्रवास के पश्चात् थाँदला की ओर विहार किया। थाँदला के लोग आपके आगमन के समाचार सुनकर हर्षित हो उठे। वे समझने लगे, महासती जी क्या पहुँची, हमारे लिए तो साक्षात् भगवती ही पधार गई हैं। आपका शरीर स्वभावत: सुन्दर था। यौवन और ब्रह्मचर्य के प्रताप से इसमें अद्‌भुत तेज और लावण्य की आभा चमक रही थी। तपस्या ने आपकी शारीरिक सम्पत्ति का प्रभाव बढ़ा दिया। आप में गजब की आकर्षण शक्ति बढ़ गई। गौरवर्ण, विशाल और दीप्तिमान लोचन, उन्नत और चमकता हुआ भाल, सौम्य मुखमण्डल! साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने जिस सिंहगति से थाँदला में प्रवेश किया कि लोग आश्चर्य करने लगे। उस समय ऐसा मालूम हो रहा था मानो सूर्य का समस्त तेज छीन कर कोई राजकुमारी दीक्षित हुई हो।

अद्‌भुत शरीर-सौभाग्य के साथ अमृत जैसी मिठास थी और विचारों से मौलिकता भी भरपूर थी। आपके चातुर्मास के लिए थाँदला संघ का आग्रह कई दिनों से चल ही रहा था। आखिरकार विक्रम संवत् 1972 का चातुर्मास थाँदला में ही होकर रहा। चातुर्मास के चार माह बड़े ही आनंद में बीते। जैन-अजैन जनता आपके दर्शनों के लिए ऐसी उमड़ती थी जैसे किसी देवी को जात लगा रहे हों।

वहीं पर पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की संप्रदाय के तत्कालीन आचार्य पूज्य श्री नन्दलाल जी म.सा. के शिष्य मुनि श्री किशनलाल जी म.सा. एवं श्री ताराचन्द जी म.सा. आदि ठाणा-7 विराजे हुए थे। उनके साथ साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. का बड़ा सद्व्यवहार रहा।

परस्पर प्रेमपूर्वक वार्तालाप और सहज व्यवहार देखकर संघ के लोग आपके प्रति अत्यन्त आकर्षित हो गए थे।

आपकी सरलता का उन सन्तों पर काफी प्रभाव पड़ा। उन्होंने भी आपकी प्रशंसा की। चातुर्मास काल में दोपहर के समय आप धर्मकथा (चौपाई) सुनाती थीं। आपके विषय-प्रतिपादन की शैली रोचक, सरल और अत्यन्त भावपूर्ण थी। कहानी कहने का ढंग बहुत ही निराला था। जनता सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाती। उस समय आपके व्याख्यानों में जैन-अजैन लोगों की काफी उपस्थिति रहती थी। लोग आपके इतने भक्त हो गए थे कि आप जहाँ गोचरी जातीं वहाँ आपको देखकर लोगों का प्रेम उमड़ पड़ता और भिक्षा लेने के लिए काफी आग्रह करते। तीन सुनार भाई तो इतने भक्त हो गए थे कि जब आप थाँदला से विहार करने लगीं तो उनकी आँखों से आँसू छल-छला आए। उन्हें ऐसा लगा मानो आज हमारी सम्पत्ति लुट रही हो।

थाँदला से मन्दसौर की ओर विहार हुआ। रास्ते में जो भी परीषह आते उन्हें आप समभाव से सहन करतीं। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. कठिनाइयों से घबराने वाली नहीं थीं। उनका जीवन कठिनाइयों से जूझने के लिए बना था, पीछे हटने के लिए नहीं। ज्यों-ज्यों कठिनाइयाँ आती आपका साहस और अधिक बढ़ता जाता।

आपश्री जी थाँदला से काफी आगे बढ़ गई थीं। संध्या समय सूर्यास्त होने से कुछ देर पूर्व आपश्री पटेलों के गाँव में पहुंची। गाँव के मुखिया से मकान की आज्ञा लेकर सभी साध्वियाँ वहाँ विराजीं। घर का स्वामी साध्वियों की चर्या देखकर बड़ा ही प्रभावित हुआ। उसने कहा— ''महाराज भोजन तैयार है, घर पर पधारिये। यदि वहाँ पधारना न चाहें तो मैं यहाँ ले आऊँ?'' साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ग्रामीण भाई की सरलता देखकर प्रसन्न होती हुई बोलीं—''भाई! हम जैन साध्वियाँ हैं। सूर्यास्त पश्चात् भोजन नहीं करतीं और दिन रहते हुए भी किसी गृहस्थ का लाया हुआ भोजन नहीं करतीं तथा न ही किसी का निमंत्रण स्वीकार कर सकती हैं। दिन रहते भी अपने लिए भोजन-पानी हम स्वयं ही भिक्षा के माध्यम से लाती हैं। अब तो थोड़ा-सा दिन बचा है, अब भोजन लाकर भी हम कब ग्रहण करेंगी?''

गाँव का भद्र पटेल महासती जी की यह बात सुनकर चकित हो गया। आज तक जिन साधु-साध्वियों से उसका वास्ता पड़ा था, उनसे विलक्षण ही यह त्याग-वैराग्य देखने को मिला। वह और अधिक भावुकता की धारा में बहकर कहने लगा—''महाराज! हम तो अब भोजन करेंगे और आप यों ही बैठी रहेंगी। यह हमसे देखा नहीं जाता। आप हमारे हाथ का बनाया हुआ न जीमें तो हम आपको भोजन बनाने की सामग्री दे दें। आप झटपट बना लीजिए।''

साध्वीश्री जी ने वात्सल्यभाव से फरमाया—''भाई, तुम्हारी भक्ति बहुत अच्छी है। हम जैन साधु-साध्वियाँ अग्नि का स्पर्श नहीं करतीं। दिन काफी होता तो तुम्हारे यहाँ से आहार लेने में कोई हर्ज नहीं था। हमें अब किसी तरह की तकलीफ नहीं है। सब तरह का आनंद है।''

उस भाई ने सोचा कि शायद दिन छिपने के बाद साध्वी जी रोटी नहीं लेती होंगी। अत: सोचा—''पर दूध लेने में क्या हर्ज होगा?'' वह झटपट जाकर दूध गर्म करवाता है और वापिस आकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है— ''महाराज कुछ तो कृपा कीजिए। भोजन नहीं लेते तो दूध तो ले लीजिए। ताजा गर्म दूध तैयार है। पधारिये।''

साध्वीश्री जी जैन साध्वी की चर्या का विस्तार से वर्णन करते हुए कहती हैं—''भाई! तुम समझे नहीं। हम भोजन में दूध को भी गिनती हैं। दिन छिपने के बाद किसी तरह का भोजन तो दूर रहा, पानी तक भी नहीं लेतीं।''

साभार- धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

- क्रमश:

संस्कार सौरभ

कैसे लाएँ सकारात्मक विचार

- दिलीप गांधी, बेंगलुरु

जो सोचते हैं, वही बनते हैं,
वे ही जग में कुछ कर जाते हैं।
सकारात्मक सोच का हो अगर संग,
तो पतझड़ में भी फूल खिल जाते हैं।।

मनुष्य का मन एक विशाल महासागर की तरह है, जिसमें विचारों की लहरें निरंतर उठती रहती हैं। ये विचार सकारात्मक भी हो सकते हैं और नकारात्मक भी। हमारे जीवन की दिशा, निर्णय और व्यवहार इन्हीं विचारों पर निर्भर करते हैं। आज के तेज और तनावपूर्ण जीवन में जहाँ समस्याएँ और चुनौतियाँ निरंतर सामने आती हैं, वहीं सकारात्मक विचारों का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह न केवल मानसिक शांति देता है, बल्कि सफलता की ओर भी ले जाता है। सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति कैसे करें? उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

सकारात्मकता के प्रभाव

सकारात्मक सोच का अर्थ है जीवन की हर परिस्थिति को आशा और आत्मविश्वास के साथ देखना। यह वह दृष्टिकोण है जिससे व्यक्ति समस्याओं में भी अवसर खोज लेता है और असफलताओं में भी सीखने का मार्ग देखता है। इसका अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति वास्तविकता से मुँह मोड़ ले, बल्कि यह कि वह किसी भी स्थिति को सकारात्मक ऊर्जा और समाधान के भाव से देखे। सकारात्मक सोच तनाव, चिंता और अवसाद को दूर करती है। यह मन को शांत और संतुलित रखती है।

संबंधों में सुधार :

जब व्यक्ति सकारात्मक होता है, तो वह दूसरों के प्रति भी सहयोगी, सहानुभूतिशील और मैत्रीपूर्ण होता है। इससे पारिवारिक और सामाजिक रिश्ते मजबूत होते हैं।

सफलता की कुंजी :

आत्मविश्वास और प्रेरणा से भरी सोच व्यक्ति को कठिनाइयों से लड़ने की ताकत देती है और लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित करती है।

शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव :

वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि सकारात्मक सोच रखने वाले लोगों में रोगों की संभावना कम होती है और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है।

सकारात्मक विचार कैसे लाएँ :

स्वयं को जानें और आत्म-विश्लेषण करें। सबसे पहले अपने मन को समझना आवश्यक है। दिन के अंत में आत्मविश्लेषण करें कि आपने क्या सोचा, कैसा अनुभव किया और उन विचारों का आपकी मन:स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा।

सकारात्मक संगति अपनाएँ :

हम जिनके साथ रहते हैं, उनका प्रभाव हमारे विचारों पर पड़ता है। इसलिए सकारात्मक, प्रेरणादायक और खुशमिजाज लोगों की संगति करें। नकारात्मक सोच वाले लोगों से यथासंभव दूरी बनाए रखें। अच्छे साहित्य और प्रेरक पुस्तकों का अध्ययन करें। महान व्यक्तित्वों की आत्मकथाएँ, प्रेरणादायक कहानियाँ और धार्मिक ग्रंथ सकारात्मकता के भंडार हैं। इन्हें पढ़ना हमारे विचारों को निर्मल और ऊर्जावान बनाता है।

ध्यान और योग का अभ्यास करें :

ध्यान और योग न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मन को भी शुद्ध और शांत करते हैं। नियमित ध्यान से नकारात्मक विचार स्वत: कम हो जाते हैं और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

आभार प्रकट करें :

हर दिन उन चीजों के लिए धन्यवाद दें जो आपके पास हैं। आभार की भावना से मन में संतोष और सकारात्मकता जन्म लेती है। असफलताओं को सीखने का अवसर मानें। जीवन में कठिनाइयाँ और असफलताएँ आती ही हैं, लेकिन उन्हें समस्या नहीं बल्कि अनुभव और सुधार के अवसर के रूप में देखें। इससे मनोबल बना रहता है और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

स्वस्थ दिनचर्या और पर्याप्त नींद :

अनियमित जीवनशैली भी मानसिक विकारों को जन्म देती है। समय पर सोना, उचित खानपान और नियमित व्यायाम मन को प्रसन्न और विचारों को सकारात्मक बनाए रखता है। सकारात्मक बोलचाल और व्यवहार अपनाएं। **'जैसा सोचोगे, वैसा बनोगे'** यह बात उतनी ही सच है जितनी कि **'जैसा बोलोगे, वैसा सोचोगे'**। इसलिए हमेशा सकारात्मक भाषा का प्रयोग करें। दूसरों की प्रशंसा करें, प्रोत्साहन दें और खुद भी अच्छे शब्द बोलें।

नकारात्मकता से कैसे बचें?

न्यूज और सोशल मीडिया का सीमित उपयोग :

नकारात्मक खबरें और सोशल मीडिया पर फैल रही निराशाजनक सामग्री मन को अशांत करती हैं। इनसे उचित दूरी बनाए रखें और केवल उपयोगी सामग्री का ही चयन करें। सिर्फ देखकर अपनी राय न बनाएँ, विवेक का उपयोग करें एवं हर पहलु से प्रत्येक सामग्री के बारे में सोचें।

अपेक्षाओं को नियंत्रित करें :

अत्यधिक अपेक्षा अकसर निराशा का कारण बनती हैं। इसलिए जितना संभव हो, यथार्थवादी अपेक्षा रखें और हर परिस्थिति को स्वीकार करने का अभ्यास करें।

माफ करना सीखें :

नफरत और क्रोध हमारे भीतर नकारात्मकता भरते हैं। दूसरों की गलतियों को क्षमा करने से मन हल्का होता है और सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, डॉ. अब्दुल कलाम जैसे महान व्यक्तित्वों ने जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी कभी अपनी सकारात्मक सोच नहीं छोड़ी।

सकारात्मक सोच कोई जन्मजात गुण नहीं है, यह एक अभ्यास है। निरंतर प्रयास, आत्मनियंत्रण और उचित मार्गदर्शन से इसे अपनाया जा सकता है। जीवन की राह में चाहे कितनी भी बाधाएँ क्यों न हों, यदि हमारे विचार सकारात्मक हैं तो हम हर स्थिति में सफल और संतुष्ट रह सकते हैं। इसलिए कहा गया है– **'सोच बदलो, जीवन बदल जाएगा'**। हमें अपने विचारों को सजगता से चुनना होगा, क्योंकि अंततः वे ही हमारा भविष्य बनाते हैं।

तप का बहुआयामी महत्व

- डॉ. दिलीप धींग, बंबोरा
(पूर्व निदेशक,
अंतरराष्ट्रीय प्राकृत केंद्र)

संस्कार सौरभ

भारतीय संस्कृति तप-त्याग प्रधान संस्कृति है। ऋषि-मुनियों और मनीषियों ने तप के सम्बन्ध में व्यापक और सूक्ष्म चिन्तन किया है। तप जीवन को पावन करने की कला व साधना है। तपस्वियों के तप के परिणाम स्वरूप ही भारत ज्ञान-विज्ञान में इतना आगे बढ़ा कि ''विश्व गुरु'' कहलाने लगा। तप से कर्म-निर्जरा होती है। तप के प्रभाव से जीवन में अनेक अद्भुत और उपयोगी ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। भला बिना तपे-खपे क्या पाया जा सकता है?

अग्नि-स्नान किये बिना घड़ा पानी भरने योग्य नहीं बनता है। स्वर्ण तपने पर ही निखरता है। सूरज तपता है इसलिए संसार को उजाला और ऊर्जा देता है। मक्खन भी तपने पर ही शुद्ध होता है एवं मक्खन की शुद्धि के लिए पात्र को भी तपना पड़ता है। उसी प्रकार आत्मा और चित्त को निर्मल बनाने के लिए शरीर को भी तपना या तपाना पड़ता है। तप, आत्मा को शुद्ध करने का स्नान है।

आज के भौतिक, भोगवाद और उपभोक्तावाद के स्पर्धात्मक दौर में मनुष्य मशीन की तरह हो गया है। मनुष्य शरीर को सब कुछ मानकर, सिर्फ शरीर के स्तर पर जी कर जीवन के वास्तविक अर्थ और उद्देश्य से दूर होता जा रहा है। जबकि शरीर अलग है और जिसके सहारे शरीर टिका हुआ है, वह जीवात्मा अलग है। जीव और अजीव के, देह और आत्मा के इस भेद-विज्ञान को भली-भाँति समझकर आत्मा के लिए और आत्म-तत्व की प्राप्ति के लिए जीवन को तपाना तप है। तप करने के साथ मन के विकारों, कषायों और बुराइयों का त्याग भी परमावश्यक है।

'इच्छा निरोधस्तपः'

अर्थात् इच्छाओं को रोकना और कम करना तप है। मन एवं इन्द्रियों को नियन्त्रित किये बगैर किया जाने वाला तप महज ताप होता है, जो तरह-तरह के सन्ताप और परिताप पैदा करता है।

तप के अनेक प्रकारों में से उपवास की लोकप्रियता और महत्ता से कोई अपरिचित नहीं है। उपवास का अर्थ है– आत्मा के समीप रहना। भोजन शरीर की खुराक है तो उपवास आत्मा की। उपवास का आध्यात्मिक महत्व तो है ही; पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, शारीरिक, चिकित्सकीय आदि सन्दर्भों में भी उपवास का महत्व अनभिज्ञ नहीं है। उपवास से शारीरिक स्वास्थ्य, बौद्धिक निर्मलता, मानसिक शान्ति और संकल्प शक्ति में वृद्धि होती है। उपवास के अनेक सफल चिकित्सकीय प्रयोग हुए और हो रहे हैं। अनेक दु:साध्य व असाध्य रोग उपवास से नियन्त्रित और समूल नष्ट हो जाते हैं। यह तथ्य गौरतलब है कि दुनिया में भुखमरी से नहीं, बल्कि अधिक खाने से ज्यादा लोग मरते हैं। भूख से कम खाना भी एक तप है, जिसे ऊनोदरी तप भी कहा जाता है, और स्वर्णिम स्वास्थ्य-सूत्र भी। किसी निश्चित समयावधि तक आहार का पूर्णत: या आंशिक त्याग करना दृढ़ मनोबल वाले व्यक्ति का कार्य है। तपस्या करने वाला अनायास ही अनेक रोगों व समस्याओं से बच जाता है तथा दूसरों को भी बचा लेता है।

रसना और वासना का गहरा सम्बन्ध होता है। रसना-संयम करने से व्यक्ति वासनाओं पर भी विजय

प्राप्त कर सकता है। चूंकि वासना पर विजय प्राप्त करना बहुत दुष्कर कार्य है, इसलिए शास्त्रों में ब्रह्मचर्य को सर्वश्रेष्ठ तप और सर्वोपरि साधना कहा है। समाज में संयम व संकल्प के अभाव को तप के द्वारा पूरा किया जा सकता है। संयम और तप से साधनों, संसाधनों और खाद्यान्न का अपव्यय भी रुकता है।

'त' यानी तत्काल, 'प' यानी पवित्र, अर्थात् जो तत्काल पवित्र करे वह तप है। तप से मन शुद्ध, वचन निर्मल और आचरण उत्तम हो जाता है। आत्मा पर अनन्त काल से लगे हुए कर्मों के निर्जरित/नष्ट होने की वजह से अपार-अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है। आधि, व्याधि और उपधि का नाश होता है और समाधि-भावों की प्राप्ति होती है। तपस्वी, अजेय, ऊर्जावान, संकल्पवान, स्वस्थ, समर्थ एवं योग्य होता तथा बनता है।

तीर्थंकर भगवान महावीर ने सिर्फ अनशन (आहार-त्याग) को ही तप नहीं कहा, अपितु विनय (अहंकार का परित्याग), वैयावृत्य (सेवा), स्वयं के दोषों का प्रायश्चित्त (आत्म-आलोचना), स्वाध्याय, ध्यान आदि को भी तप कहा है। गुणों व गुणियों का विनय व सम्मान करना, अपने अहंकार को छोड़ना, उपकारीजनों तथा असहायों की सेवा-सुश्रूषा करना आदि मामूली बातें नहीं हैं। स्वाध्याय और ध्यान के द्वारा मानव बहिर्मुखी से अंतर्मुखी बनता है। शाश्वत सुखों की प्राप्ति के लिए जीवन और जगत के छोटे-छोटे क्षणिक सुखों का त्याग करना आवश्यक है। जिस प्रकार प्रचंड गर्मी के पश्चात् शीतल जल की बरसात होती है, उसी प्रकार तप के पश्चात् जीवन में सुख-शान्ति की वर्षा तथा खुशहाली की हरियाली होती है। वस्तुतः तप व्यक्ति-निर्माण से विश्व-निर्माण की प्रक्रिया का नाम है।

हम जीवन में थोड़ा-सा विवेक व सावधानी रखें तो सहज ही कई प्रकार से तप कर सकते हैं। जीवन में समस्याओं का अंबार है। आई हुई समस्याओं को समभाव से स्वीकार/सहन कर लेना भी तप ही है। हमारे निमित्त से दूसरों को अनावश्यक कष्ट या परेशानी नहीं होने देना तप की तरह है। यदि हम थोड़ी-सी गर्मी या सर्दी सहन कर सकें और पंखा या हीटर नहीं चलाएँ तो सहज ही तप हो जाएगा और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होगी। दो बाल्टी की बजाय एक बाल्टी से या थोड़े पानी से स्नान कर लेना, किसी को अपशब्द नहीं बोलना, गिरते हुए आदमी का हाथ थाम लेना, मरते हुए प्राणी की रक्षा करना आदि सत्कार्यों में भी हमारी तपस्या होती है तथा तपस्या की परीक्षा होती है।

तप के साथ तप का अहंकार नहीं होना चाहिए। क्रोध आदि कषायों से तप का वांछित फल नहीं मिलता है। हम तप से जीवन को तपाएँ-खपाएँ और जीवन में खूब शक्ति, शान्ति, ऊर्जा और तेजस्विता प्राप्त कर स्वयं का एवं सब का भला करें।

जो जला वो क्षणिक ही खीरा बना।
जो तपा वो कालजयी हीरा बना।।

"जो जीव अरिहंत देव, मोक्ष मार्ग के आराधक निर्ग्रंथ गुरु और केवलि प्ररूपित धर्म पर परिपूर्ण श्रद्धा नहीं करता, वह मिथ्यात्वी कहलाता है। ऐसे जीव को चैतन्य एवं जड़ की अवस्थाओं का परिपूर्ण विवेक नहीं होता, अतः उसकी दृष्टि विपरीत होती है। मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में रही हुई आत्मा सम्यक् मार्ग को खोजने के प्रति किंकर्तव्यविमूढ़ होती है। आध्यात्मिक धर्म कार्य के प्रति उसका सम्यक् श्रद्धा समन्वित आकर्षण नहीं होता। वह अज्ञान से संपृक्त रहती है और उस अज्ञान संपृक्त आत्मा के लिए मिथ्यात्व अवस्था में ज्ञान प्राप्त करना उसी प्रकार कठिन है जिस प्रकार भयंकर अंधेरी रात्रि के समय सघन अंधकारयुक्त कमरे में अपरिचित वस्तु को खोजना। मिथ्यादृष्टि आत्मा की दृष्टि मिथ्यात्व के कारण इतनी भ्रामक बन जाती है कि वह अज्ञान को भी ज्ञान और असत्य को भी सत्य मान लेती है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

संस्कार सौरभ

व्यस्त जीवन में सरल धर्म साधना

- ईशिता बंब, जयपुर

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम धर्म को सरल और सहज रूप से कैसे अपना सकते हैं। यह ज्ञान मैंने पूज्य चारित्रात्माओं के पावन प्रवचनों एवं जीवनचर्या से ग्रहण किया। संतों की शिक्षाओं से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज उन्हीं शिक्षाओं में से कुछ महत्वपूर्ण बातें आपके साथ साझा कर रही हूँ –

1. दान या किसी भी वस्तु का परित्याग करते समय '**वोसिरामि-वोसिरामि**' अवश्य कहें।

   चाहे वह रोजाना गौ ग्रास, भोजन के छिलके या किसी भी वस्तु का त्याग हो, यह कहने से हमारा उस वस्तु से राग समाप्त हो जाता है और उसके कारण होने वाले पाप से बच सकते हैं। यदि ऐसा नहीं किया तो वह वस्तु जब तक पृथ्वी पर रहेगी, उसमें जीव-जंतु उत्पन्न होंगे या मरेंगे और उसका समस्त पाप हमें लगेगा।

2. जल सदैव छना हुआ एवं अचित्त ही ग्रहण करें।

   यदि हम सचित्त जल (बिना छना हुआ) प्रयोग करते हैं, तो अनजाने में अनेक अप्कायिक जीवों की हिंसा कर बैठते हैं। यात्रा के दौरान भी सदैव अचित्त जल का ही उपयोग करें।

3. स्नान के लिए पानी की एक निश्चित मर्यादा रखें।

   प्रयास करें कि आधी बाल्टी से अधिक जल का प्रयोग न करें या फिर महीने में कुछ दिन स्नान का त्याग करें, क्योंकि जब हम नल का जल प्रयोग करते हैं तो हजारों लीटर की टंकी में स्थित असंख्य जीवों को पीड़ा पहुँचाते हैं। जल के अति प्रयोग से कर्मों का बंध भी बढ़ता है।

4. कहीं बाहर से आने के बाद '**इच्छाकारेणं**' अवश्य बोलें।

   यह एक त्वरित प्रतिक्रमण की भाँति कार्य करता है और मार्ग में अनजाने में हुई जीव हिंसा के लिए क्षमायाचना बन जाता है।

5. हमेशा नीचे देखकर चलने का अभ्यास करें। इससे हम कई जीवों को अभयदान दे सकते हैं। जो नीचे झुकता है, वही ऊपर उठता है।

6. रात्रि संवर करने का प्रयास करें।

   रात्रि संवर से हम नरक और तिर्यंच आयु के बंध से बच सकते हैं।

7. सोने से पूर्व 10 मिनट चिंतन करें।

   पूरा दिन क्या सही और क्या गलत किया, इसका आकलन करें। गलतियों को सुधारने का संकल्प लें, क्षमायाचना करें। 5 नवकार, 2 लोगस्स का ध्यान करें और फिर शांति से सोएँ।

8. प्रतिदिन धार्मिक पुस्तक पढ़ने का लक्ष्य रखें।

ज्ञान ही एकमात्र ऐसी संपत्ति है, जो जन्म-जन्मांतर तक हमारे साथ रहती है। इसलिए सदैव विद्यार्थी बने रहें।

9. एक दिन के पूर्ण ब्रह्मचर्य का फल 180 उपवास के बराबर होता है, तो महीने में कम से कम एक दिन पूर्ण ब्रह्मचर्य अपनाने का प्रयास करें।

10. व्यक्ति गलत हो सकता है, पर धर्म नहीं।

धर्म की निंदा से बचें, क्योंकि धर्म सभी को समान शिक्षाएँ देता है। कौन उसे कैसे समझता और अपनाता है, यह व्यक्ति पर निर्भर करता है।

हम अपने कर्मों के बंधनों के कारण शायद अभी संयम मार्ग नहीं अपना पा रहे हैं, पर इन छोटी-छोटी बातों को अपने जीवन में उतारकर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

हमारा जैन धर्म भाव प्रधान धर्म है। आप भावों से कर्मों का बंध भी कर सकते हैं और कर्मों को काट भी सकते हैं। तो क्यों न थोड़ा-थोड़ा करके अपने कर्मों को कम करने का प्रयास करें, ताकि शीघ्र संयम अंगीकार कर हम भी मोक्ष प्राप्त कर सकें।

अंत में कुछ पंक्तियों के साथ इस लेख को विराम दूँगी, आशा करती हूँ कि ये छोटी-छोटी लेकिन महत्वपूर्ण बातें आपके जीवन को बेहतर बनाने में सहायक होंगी और कर्मों के बंधनों को काटने में मदद करेंगी –

आसान नहीं है मोक्ष मार्ग पर चलना,
आसान नहीं है संयम की धूप में जलना।
आसान नहीं है महावीर बनना,
आसान नहीं है एक भव में तिर जाना।
पर आसान तो मनुष्य भव पाना भी नहीं था,
आसान तो जैन धर्म विरासत में मिलना भी नहीं था।
पर प्रयास से सब कुछ संभव है,
जीवन की नैया को डुबोना या पार लगाना
स्वयं के हाथ में है।
छोटे-छोटे कदमों से ही बड़ी मंजिलें मिलती हैं।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती हैं।

रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द — शब्द सीमा — अथवा एक पेज

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी धार्मिक अंक **वर्तमान परिस्थितियाँ और महापुरुषों के वचन (● धर्म : विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में ● धर्म : पर्यावरण सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में ● धर्म : भावी पीढ़ी के निर्माण में)** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

– श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

संस्कार सौरभ

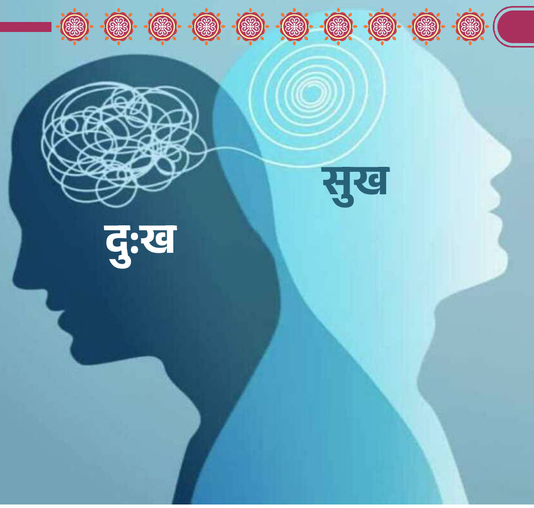

सकारात्मक सोच

- संदीप गाँधी (रुचील)

उपाध्याय प्रवर की कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं, शुरुआत उनसे ही करता हूँ –

श्रद्धान दृढ़ मेरा,
मुझ पर ही सुख निर्भर मेरा।
सुख-दुःख का कारण पर नहीं,
निज परिणति ओलख जरा।।

सुख क्या है? एक मानसिक संवेदना, जो सकारात्मक विचारों से उत्पन्न होता है।

दुःख क्या है? एक मानसिक संवेदना, जो नकारात्मक विचारों से उत्पन्न होता है।

सकारात्मक सोच से व्यक्ति कैसी भी परिस्थिति, कैसे भी व्यक्ति, कैसे भी वातावरण में सदैव प्रसन्न रह सकता है। इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं –

महासती चंदनबाला

मूला सेठानी महासती चंदनबाला को शारीरिक, मानसिक हर तरह से कष्ट देती हैं, लेकिन महासती की सोच सकारात्मक रही। हर समय, हर परिस्थिति में इसी सोच से दुःख के क्षणों को भी महासती ने सुख में परिवर्तित कर लिया। क्या-क्या नहीं हुआ महासती चंदनबाला के साथ। मूला ने ईर्ष्या के वशीभूत महासती जी के बाल काट दिए, कमरे में बंद कर दिया, तीन दिन भूखा-प्यासा रखा, गलत शब्दों से संबोधित किया, लेकिन महासती की सकारात्मक सोच थी कि ये सब मेरे ही कर्मों का परिणाम है। मूला का कोई दोष नहीं है जैसे मेरे कर्म, वैसे ही परिणाम। अब मुझे सहनशीलता, समता से कर्म काटने हैं। ऐसी उत्कृष्ट सकारात्मक सोच जो निमित्त को कभी दोष नहीं देती वो हमेशा उपादान पर चलती है। उपादान पर चलने वाला व्यक्ति दुःख में दुःखी नहीं होता क्योंकि उसकी सोच सकारात्मक होती है।

सकारात्मक सोच से महासती चंदनबाला के संचित पाप कर्म निर्जरित हुए और घर में भिक्षा के लिए प्रभु महावीर पधारे जो कि विगत 5 माह 25 दिन से अभिग्रह धारण किये हुए थे और उनका अभिग्रह महासती चंदनबाला के हाथों पूर्ण हुआ। महासती जी ने सर्वप्रथम उपकारी अपनी माता तुल्य 'मूला' का ही माना। ये होती है सकारात्मक सोच व सकारात्मक सोच का परिणाम।

सकारात्मक सोच हमेशा हमें समस्या नहीं समाधान प्रस्तुत करती है। सकारात्मक सोच से ही व्यक्ति में धैर्य की वृद्धि होती है। सकारात्मक सोच व्यक्ति को प्रतिक्रिया और शिकायत से रहित बनाती है। जो व्यक्ति जितनी सकारात्मक सोच बढ़ाता जाता है उतनी ही प्रसन्नता बढ़ाता जाता है।

हमें संकल्प लेना चाहिए कि हर समय, हर परिस्थिति, हर वातावरण में हमें सकारात्मक सोच वाला ही बनना है। इसी से हम हर समय प्रसन्न रह सकते हैं।

संस्कार सौरभ

खुशियों का खजाना है सकारात्मक सोच

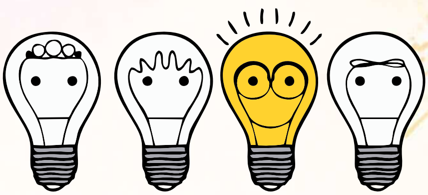

- पदमचंद गांधी, जयपुर

शास्त्रों में कहा गया है – जन्म माता-पिता की देन है। मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य है। मृत्यु किसी की जागीर नहीं, वह श्मशान की अमानत है। मनुष्य के हाथ अगर कुछ है तो वह है जन्म और मृत्यु के बीच का जीवन। व्यक्ति कैसे जीवन जीये यह उसके हाथ में है। जीवन जीना उसके विचारों, भावों एवं सोच पर निर्भर करता है। बहुत ही पुण्यवानी से हमें मनुष्य योनि, स्वस्थ मानव देह, अच्छा कुल, अच्छा वातावरण, अच्छा धर्म मिला है। इन सब में हमें आनन्द प्राप्त करना है। स्वयं को प्रसन्न, प्रफुल्लित एवं विकसित करना है। यदि इन सबकी प्रवृत्ति सकारात्मक है तो जीवन स्वर्ग है, विकासोन्मुख है, समरस है अन्यथा नरक समान है।

सकारात्मक सोच अर्थात् सकारात्मक भावनाएं, संवेदनाएं, सकारात्मक वाणी, सकारात्मक व्यवहार, सकारात्मक रिश्ते-नाते। सकारात्मक सोच का अर्थ है अपने विचारों में दूसरों के विचारों का समाविष्ट होना। सामंजस्यता एवं समन्वयता रखना, जिनमें विषमता उत्पन्न नहीं होने देना। अच्छा सोचो, अच्छा बोलो। जैसा व्यवहार एवं बर्ताव हम दूसरों से चाहते हैं वैसा ही हम भी करें। जैसे मैं सोचता हूँ वैसे ही दूसरे भी सोचते हैं। विचारों की समानता, सम्मान, उदारवादी दृष्टिकोण, बहुकोणिय दृष्टि आदि सकारात्मक विचार ही हैं। प्रभु महावीर ने इसे अनेकांतवाद और स्याद्वाद नाम दिया है। अर्थात् एक ही वस्तु को हम कितनी दृष्टियों से देख सकते हैं, कितनी बार देख सकते हैं, उसके छोटे-छोटे रूपों में देख सकते हैं, लेकिन जब समग्र दृष्टि से देखा जाता है वही पूर्णता है, सकारात्मकता है। अलग-अलग पुद्‍गलों की व्याख्या, अंगों की व्याख्या को ही सही मानेंगे तो परिणाम एकान्तवादी होंगे, सकारात्मक नहीं। आज आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्सी का जमाना है। एक ही वस्तु को कितनी दृष्टियों से देखकर वस्तु का निर्माण किया जाता है, यह अनेकान्तवाद की ही देन है। इसमें सकारात्मकता है, सोचने की उदारता है। सकारात्मक सोच दूसरों की भूलों को माफ करना, दूसरों को गले लगाना, दूसरों का सम्मान करना सिखाती है। विवादों से बचना सिखाती है। यह सिखाती है-

खुद जीएँ सुख से,
औरों को सुख पहुँचाने का प्रण हो।
हँसता खिलता हो हर चेहरा,
स्वर्ग सा जीवन हो।।

अर्थात् एक-दूसरे के प्रति ऐसा प्रेम हो जहाँ नकारात्मकता हो ही नहीं। सम्यक् सोच, सम्यक् भाव ही सकारात्मकता को जन्म देते हैं, जिससे खुशियों की महक से जीवन उन्नत बनता है। सकारात्मकता के लिए निम्न आवश्यक तत्व जरूरी है -

(1) उदारवादी दृष्टिकोण :

जीवन एक सिक्के के दो पहलुओं पर चलता है। विचारों में प्रतिकूलता एवं अनुकूलता स्वयं पर निर्भर है। विरोधी को मित्र समझना ही उदारवादिता है। दिन का महत्व रात्रि से है, सुख का महत्व दु:ख से, अमीरी का महत्व गरीबी से है। यदि इनको हम विरोधी मानेंगे तो नकारात्मकता पैदा होगी, जिससे हम दु:खी होंगे और जी भी नहीं सकेंगे। यदि केवल रात ही रात हो या दिन ही दिन हो या सुख ही सुख हो या फिर दु:ख ही दु:ख हो तो हमारा जीवन सन्तुलन में नहीं रहेगा, हम काम भी नहीं कर पाएंगे। अत: दोनों विरोधी होते हुए भी एक-दूसरे का गहरा सम्बन्ध है, एक-दूसरे के पूरक हैं। सकारात्मकता इसी का नाम है। अत: हमें विरोधी के प्रति भी सम्मान का भाव रखना है। प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदलना है। संकीर्णता के स्थान पर समग्रता उत्पन्न करना है। इसके लिए छोटा सा शब्द है **'यह भी चला जाएगा'** इस पर फोकस करना है। विरोधी तत्व ही हैं जो हमें मंजिल तक पहुँचाते हैं। उन्हें दोषी नहीं सहयोगी मानें। जैसे सोमिल ब्राह्मण द्वारा सिर पर अंगारे रखने पर भी गजसुकुमाल ने उसे सहयोगी माना। वह चाहता तो बदला ले सकता था। राजकुमार था, लेकिन निमित्त को दोष नहीं दिया। अपने परिणाम बिगड़ने नहीं दिये। कक्षा में यदि 5 लड़कियाँ और 20 लड़के हैं तो वहाँ पर भाषा का ध्यान रहता है। सभ्यता एवं शालीनता का ध्यान रहता है अन्यथा वाणी संयम, शालीनता नजर नहीं आती है। भाव यही है कि विरोधी आपको अलर्ट करते हैं, जागरुक बनाते हैं। ऐसे भावों से ही उदारता के भाव आते हैं। स्पष्ट है विरोधाभासी मूल्य एक-दूसरे के पूरक होते हैं। अत: इन्हें सकारात्मक ही समझें। आज परिवारों में संकीर्णता के कारण, स्वार्थता के कारण, एकाकी विकास की अवधारणा के कारण परिवार टूट रहे हैं। यदि उदारवादी दृष्टि हो, विरोधी को सहयोगी ही मानें तो विकृतियां नहीं आएंगी।

(2) नब्बे प्रतिशत समस्याओं का समाधान है दस प्रतिशत सकारात्मक सोच :

जीवन में सरलता, सहजता, धीरजता, मधुर एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए जरूरी है। इन्हीं से समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। सम्यक् एवं सकारात्मक सोच से ही परिवार, समाज, रिश्ते-नातों में प्रेम और सद्भावना का वातावरण रहता है। क्योंकि जहाँ विश्वास है, भरोसा है, समन्वय है, मित्रवत् वातावरण है, निन्दा-ईर्ष्या को स्थान नहीं है, वहीं आत्म-सन्तोष है, सहयोग है, सहकारिता है। वहाँ समस्याएँ स्वत: दूर हो जाती हैं। सास-बहुओं के रिश्तों में मधुरता के लिए, बिछुड़े भाइयों को मिलाने के लिए, समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए, टूटते परिवारों को बचाने के लिए एक ही मन्त्र है – **सकारात्मक सोच**।

आज घर-परिवारों की स्थिति दयनीय बनी हुई है। छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव, तनाव, ईर्ष्या के कारण नकारात्मक विचारों से परिवार बँट जाते हैं, घर टूट जाते हैं, पति-पत्नी की दूरियाँ बढ़ते-बढ़ते तलाक तक पहुँच जाती हैं। हम मात्र एक रुपये को पाने के लिए तथा उसे पूरे सौ बनाने के चक्कर में निन्यानवे रुपयों का आनन्द नहीं ले पाते हैं। जैसे ही एक रुपया जुड़ता है पुन: 99 का चक्कर शुरु होता है, जो सतत चलता है। हम आनन्द ले ही नहीं पाते। अत: जो प्राप्त है, जो वर्तमान है उसका आनन्द लेना ही सकारात्मकता है।

अत: स्पष्ट है कि जो जैसा भी है उसे स्वीकार करो, उसमें भी अच्छाई देखो, उसके प्रति प्रेम एवं उसमें गुण ढूंढो। इससे आपकी सभी समस्याएं दूर हो जाएंगी और समाधान मिल जाएगा। आज 90 प्रतिशत बच्चे अपने माँ-बाप द्वारा नकारे जा रहे हैं – तू निकम्मा है, तू काम नहीं करता, पड़ौस के बच्चों को देखो कैसे हैं? ऐसी तुलना करना व टोकना नकारात्मकता है। इसके स्थान पर बच्चों को बुस्ट करें, आप स्वयं उदाहरण बनें।

(3) सकारात्मकता परिवारों को जोड़ती है :

एक विद्वान ने कहा— **"प्रसन्नता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि तुम कौन हो? तुम्हारे पास क्या है? प्रसन्नता इस बात पर निर्भर करती है कि तुम क्या सोचते हो?"** अच्छा या बुरा होता नहीं है। व्यक्ति की सोच ही अच्छा या बुरा बना देती है। मर्यादा में रहना सकारात्मकता है, शालीनता है, आदर है। नारी परिवार

की पृष्ठ रज्जू है, वह धुरी है जिसके चारों ओर परिवार मंडराता है। प्रश्न उठता है वह नारी कैसी है? आधुनिकता की एकाकी सोच प्रवृत्ति वाली नारी परिवार को छिन्न-भिन्न कर सकती है और यदि वह सकारात्मक विचारों वाली है तो परिवार को खुशहाल बना सकती है।

गाँव का एक लड़का बड़े शहर में बड़ा आदमी बन जाता है। वृद्ध पिता को शहर में लेकर आता है और एक दिन हाथ पकड़कर खाना खिलाने बड़ी होटल में ले जाता है। वृद्ध पिता जाना नहीं चाहते लेकिन बड़े प्यार से समझाकर ले जाता है। होटल में कुर्सी पर बिठाता है। पिता के मुँह से लार भी टपकती है, उसे साफ करता है। वह जवान बेटा स्वयं अपने हाथ से खाना खिलाता है। वॉशरूम में ले जाकर हाथ-मुँह साफ करता है। जब वह जाने लगता है तब का दृश्य मार्मिक एवं रोमांचित कर देता है। एक वृद्ध आकर कहता है—''बेटा! तुम कुछ छोड़कर जा रहे हो।'' अन्य लोग देखकर दंग रह जाते हैं। पूछने वाले वृद्ध की आँखों में आँसू आ जाते हैं। होटल का माहौल बदल जाता है। युवक-युवतियाँ, जो उस पर हँस रहे थे, वे सीरीयस हो जाते हैं। समझ जाते हैं कि यह है सेवा की सकारात्मकता, संस्कारों की छाप छोड़ना। पिता की उम्र के अनुसार उनके हित पर खरे उतरना। यही सकारात्मकता है जो परिवारों को जोड़ती है। ऐसे परिवारों में तीन-चार पीढ़ी के लोग आसानी से रह सकते हैं।

(4) जीवन की ऊर्जा का उपयोग नफरत में नहीं, प्रेम में करें :

हमारे भीतर अनंत क्षमता है, शक्ति की संपदा है, आण्विक शक्ति का भंडार है। यदि उसका उपयोग सकारात्मक क्रियाओं में करें, नव सृजन में करें, जनोपयोगी उपायों में करें तो आत्मिक संतोष प्राप्त होता है। इससे विकास होता है तथा कल्याण के कार्य होते हैं। इससे प्रेम, सौहार्द्र, सहिष्णुता बढ़ती है। यदि इसी शक्ति का उपयोग नकारात्मक क्रियाकलाप जैसे– नक्सलवाद, आतंकवाद, अलगाववाद, दंगे आदि में करेंगे तो नफरत पैदा होगी, संघर्ष उत्पन्न होगा, सत्ता की लड़ाई होगी। विनाश होगा। उदाहरण है द्वितीय विश्वयुद्ध में अणुबम से जापान के नागासाकी-हिरोसीमा शहर नष्ट प्राय: हो गये थे। आज उनकी सकारात्मकता ने उनको विकास के चरम तक पहुँचा दिया है। पाकिस्तान 1947 में बना, आज उसकी नकारात्मकता ने निम्न स्तर तक पहुँचा दिया। ऊर्जा के उपयोग से विकास के रास्ते खुलते हैं और ऊर्जा के नकारात्मक उपयोग से रसातल तक पहुँच जाता है।

(5) अपने मानवीय गुणों को पहचानें :

महावीर ने कहा- हे मानव! तू सर्वशक्तिमान है, तू सर्वश्रेष्ठ है। अपने को पहचान, स्वयं का परिचय कर। अपने आत्मीय गुणों को पहचान। तू कितना निर्मल है, पवित्र है, अपने मन को मलिन मत कर। ऐसे भाव सकारात्मकता भरते हैं। खुश रहने के लिए कीमत नहीं चुकानी पड़ती। वह तो भीतर में ही है। लेकिन खुशियाँ दिखाने के लिए बहुत कुछ खर्च करना पड़ता है, जिससे नकारात्मकता हावी हो जाती है।

(6) जो भी कार्य करें आनंद व उत्साह से करें :

जीवन में हर कार्य करने के लिए, जीवन जीने के लिए उत्साह चाहिए, उमंग चाहिए। आज मल्टीटॉस्किंग का समय है। एक समय में व्यक्ति अनेक काम करना चाहता है। काम तो पूरे होते हैं लेकिन गुणात्मकता स्पष्ट नहीं होती। **'एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय'** वाली कहावत चरितार्थ होती है। अत: जो भी कार्य करें 100 प्रतिशत लगन के साथ करें। यही सकारात्मक ऊर्जा का परिणाम है। इसी से आपको रस मिलता है, शान्ति-सन्तोष का अनुभव होता है।

(7) वर्तमान में जीएँ :

वर्तमान में जीना ही सकारात्मकता है। लेकिन व्यक्ति या तो भूत में जीता है, जो दु:ख या नकारात्मकता देता है या भविष्य में जीता है, जो कल्पना एवं स्वप्नों में रमण करता है, जो पूरे नहीं होते। इन्हें पूरा करने के लिए वर्तमान ही श्रेष्ठ है। किसी ने सही कहा है–

रात सुबह का इंतजार नहीं करती,
खुशबू मौसम का इंतजार नहीं करती।
जो भी खुशी मिले उसका आनन्द लिया करो,
क्योंकि जिंदगी कल का इंतजार नहीं करती।।

(8) प्रसन्नता का मानसिक आधार है सोच :

मैंने सोचा कि मैं खुश हूँ तो मैं खुश हूँ। मैंने सोचा कि मैं दु:खी हूँ तो मैं दु:खी हूँ। खुश होना सकारात्मकता है, दु:खी होना नकारात्मकता है। अत: आपको तय करना है कि आप क्या सोचते हैं। क्योंकि जीवन वरदान भी है और अभिशाप भी। यदि वरदान मानते हैं तो पुण्य अर्जित होते हैं, मानवतावादी धर्म बढ़ता है, विश्वप्रेम की भावना बढती है। यदि अभिशाप मानते हैं तो पापक्रिया होगी, स्वार्थ, संकीर्णता, दुष्कर्म होंगे, दुनिया का बंटवारा होगा, इंसान क्रोधी एवं क्रूर बन जाएगा। अत: अपने विचारों को धनात्मक बनावें।

(9) नकारात्मक भावनाएँ व्यक्त करने की कला को समझें :

दैनिक भास्कर 15 अप्रैल, 2025 में प्रकाशित लेख में स्पष्ट किया गया है कि नकारात्मक भावनाएँ व्यक्त करना भी कला है। सही वक्त पर, सही तरह से बात रखें तो समाधान अवश्य मिलता है और रिश्तों में सम्मान बना रहता है। इसके लिए जरूरी है दूसरे पक्ष को वेटिंग अर्थात् सोचने का अवसर दें। इससे अपनी स्थिति बेहतर समझ पाएंगे। ऐसा न भी हो तो अपनी भावनाओं को लिख लें। उनसे भी नकारात्मकता सकारात्मकता में बदल सकती है। रिपोर्ट के अनुसार भावनाओं को सही तरह से व्यक्त किया जाए तो मानसिक दबाव कम होता है, दिमाग हल्का महसूस करता है। यदि गलत तरह से करें तो असर उलटा हो जाता है, तनाव ज्यादा हो सकता है। मनोवैज्ञानिक और लेखिका डॉ. जूडित जोसफ कहती है कि मनोविज्ञान की भाषा में इसे वेटिंग कहते हैं। कई लोग इसे क्रोध निकालने या शिकायत करने का जरिया मानते हैं। जबकि यह एक कला है। इसके कुछ नियम हैं। यदि आप बिना सोचे-समझे किसी पर भावनाएँ उड़ेलते हैं, सोचते हैं तो सामने वाला व्यक्ति असहज हो सकता है। इनसे रिश्तों में दरारें आ सकती हैं। अत: नकारात्मक भावना व्यक्त करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना जरूरी है –

सही व्यक्ति चुनना : जूडित कहती हैं कि वेटिंग करते समय जरूरी है कि किससे बात करें, किससे अपनी भावनाएँ साझा करें। आपको ध्यान रखना है सामने वाला कैसा है, कौन है?

अनुमति लेना जरूरी है : ओहियो युनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक जेम्स रित कहते हैं कि ग्रुप थैरेपी में वेटिंग के लिए पहले से नियम तय होते हैं लेकिन दोस्ती, परिवारों में ऐसा नहीं होता। तब उनको समझना जरूरी है कि क्या वे आपको सुनने को तैयार है। यदि उनकी प्रतिक्रिया नहीं है तो वे तैयार नहीं हैं। यदि वे सुनते हैं तो वेटिंग कारगर होती है।

प्रतिक्रिया को समझना जरूरी है : मनोवैज्ञानिक गेल साल्टज कहती है कि वेटिंग सिर्फ बात कहने का जरिया नहीं है, यह समझने, सीखने का मौका भी है। यदि आप बोलते हैं और सामने वाला सुने ही नहीं तो व्यर्थ है।

भावनात्मक बोझ न डालें : मनोवैज्ञानिक डॉ. एरिन एंजिल कहती है कि अपनी भावनाएँ साझा करें, लेकिन सामने वाले को बोझिल महसूस न करने दें। इसे संक्षिप्त एवं सकारात्मक रखें।

संतुलन बनाए रखें : अपनी बात साझा करने पर दूसरे पक्ष की प्रतिक्रिया लें। यदि आप किसी से बात करने को तैयार नहीं है तो अपनी भावनाओं को लिखना अच्छा विकल्प है। अपनी समस्याओं को स्पष्ट रूप से लिखें, समाधान पर विचार करें। यह प्रक्रिया रचनात्मक हो सकती है। इस प्रकार स्पष्ट है नकारात्मक विचार भी सही तरह से अभिव्यक्त हो, जो दूसरों को बोझिल न लगे।

(10) अन्य बातें :

उपरोक्त के अतिरिक्त क्षमा करना, अपने विचारों पर नियंत्रण रखना, आशावादी बनना, अपने व्यवसाय से प्रेम करना, दूसरों की अच्छाइयों का सम्मान करना, दूसरों से ईर्ष्या, निन्दा नहीं करना, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य एवं साहस रखना, सद्विचारों में रमण करना, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि को समझना, विनयशील बनना, दूसरों की प्रशंसा एवं धन्यवाद देना इत्यादि ऐसे गुण हैं जिनसे सकारात्मकता बढाई जा सकती है।

यही खुशहाल जिन्दगी का खजाना है। अत: अच्छा सोचें, खुश रहें, औरों को भी खुशहाल बनावें।

अनुप्रेक्षा

स्वाध्याय आराधना और ध्यान साधना के परिप्रेक्ष्य में

- डॉ बी रमेश गादिया (जैन), बेंगलुरु

जैन आगम शास्त्रों के अनुसार स्वाध्याय तप के पांच भेद बताए गए हैं। यथा- वाचना, पृच्छना, परिवर्त्तना, अनुप्रेक्षा और धर्म कथा। इसमें अनुप्रेक्षा का अर्थ किया गया है कि आवृत्ति करते समय चित्त को शून्य न रख कर पाठ के अर्थ परमार्थ की ओर उपयोग रखना। अथवा स्वतंत्र रूप से शास्त्र के अर्थ का चिंतन करना अनुप्रेक्षा स्वाध्याय है। इसी तरह कर्म निर्जरा, ध्यान साधना के विभिन्न भेद-प्रभेद किए गए हैं।

जैन दर्शन में ध्यान के मुख्यतया दो भेद बताए गए हैं- **पहला-** आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान, ये अशुभ ध्यान कहे गए हैं, **दूसरा-** धर्मध्यान और शुक्लध्यान, ये शुभ ध्यान कहे गए हैं। अशुभ ध्यान के आर्त्त और शुक्ल ध्यान के विभिन्न प्रकार और उनके लक्षण बताए गए हैं। चूंकि यह शोध आलेख शुभ ध्यान में अनुप्रेक्षा पर आधारित है। अत: उसी पर ध्यान केंद्रित किया गया है। जैसे स्वाध्याय तप आराधना में अनुप्रेक्षा का विवेचन किया गया है। उसी तरह धर्म ध्यान के आलंबन में वाचना, पृच्छना, परिवर्त्तना और अनुप्रेक्षा का वर्णन किया गया है। स्वाध्याय-तप-आराधना और ध्यान-तप-साधना में थोड़ा-सा अंतर बताया गया है। जहां स्वाध्याय आराधना में अनुप्रेक्षा की बात कही गई है, वहां ध्यान तप साधना में वाचना आदि के साथ-साथ धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएं कही गई हैं। यथा- अनित्य अनुप्रेक्षा, अशरण अनुप्रेक्षा, एकत्व अनुप्रेक्षा और संसार अनुप्रेक्षा। बहुत से साधकों की मान्यता है कि स्वाध्याय-तप-आराधना और ध्यान-तप-साधना में जो अनुप्रेक्षा की बात कही गई है, दोनों एक ही है। इसी शोध अनुसंधान पर यह आलेख लिखा गया है। वास्तव में, स्वाध्याय-तप-आराधना में अनुप्रेक्षा का अर्थ, किसी आगम शास्त्र के पाठ का चिंतन-मनन करना (अर्थ परमार्थ की ओर उपयोग को लगाना) होता है, जबकि ध्यान-तप-साधना में अनित्य आदि चार भावनाओं का पहले चिंतन-मनन करके उनकी अनुभूति करना होता है। इसके लिए साधक को, श्रुतमयी प्रज्ञा, चिंतनमयी प्रज्ञा और अनुभूतिमयी प्रज्ञा को समझना नितांत आवश्यक है। श्रुतमयी प्रज्ञा में साधक पहले आगम शास्त्रों की वाचना, पृच्छना, परिवर्त्तना आदि करता है। फिर चिंतनमयी प्रज्ञा में उन आगम शास्त्रों पर गहराई से चिंतन-मनन करता है। यहां तक साधक, स्वाध्याय आराधना में लीन होता है। जब ध्यान साधना में साधक उतरता है तब अनुभूति के क्षेत्र में सूक्ष्मता और गंभीरता से ध्यानस्थ होता है। यह बहुत कठिन ध्यान साधना है। डॉ. साध्वी श्री प्रियदर्शना जी के

शोध ग्रंथ में **'जैन साधना पद्धति में ध्यान साधना'** में भावना और अनुप्रेक्षा में अंतर बताते हुए कहा कि अनुप्रेक्षा में पुनः पुनः तत्वों का गहराई से चिंतन किया जाता है, जबकि भावना में इतनी गहराई नहीं होती। आगे उन्होंने फरमाया कि आगम कथित आज्ञा, अपाय आदि ध्यान प्रकारों से मन विचलित होने पर अनित्य आदि वैराग्यजनक अनुप्रेक्षाओं की शरण ली जाती है। आगम कथित चार अनुप्रेक्षाएँ हैं –

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ तं जहा- असरणाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, एगाणुप्पेहा, संसारणुप्पेहा

आज जैन समाज में इस पर स्वाध्याय आराधना बहुत गहराई से की जाती है, लेकिन इस पर ध्यान साधना न के बराबर है।

काल के प्रवाह से आज जैन समुदाय में ध्यान साधना विलुप्त-सी हो गई है। जागरूक जैन साधक इस दिशा में गहराई से अध्ययन कर समाज के सामने स्वाध्याय आराधना के साथ-साथ ध्यान साधना को संघ-समाज के सामने प्रस्तुत करेंगे, इन्हीं मंगल शुभ भावनाओं के साथ अपने शोध आलेख को विराम देता हूँ। जिनशासन विरुद्ध प्ररूपना हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं और किसी को ठेस पहुंची हो तो आत्मिक क्षमायाचना।

भक्ति रस

आत्म–तुला

- संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

इस दुनिया में सब संध्या!
अपना गणित चलाते हैं।
अपने मन के तराजू में,
बस सबको तौलते जाते हैं।।

कितना वजन राग–द्वेष का,
रखा है हमारे तराजू में ओह!
कितना मोह! कितना लोभ!
कितनी माया!
कितना अहंकार का भार रखा है,
हमने अपने तराजू में।।

और हम बेभान बने,
उसी में तौलते रहते हैं सबको।
कौन सही है, कौन गलत?

गुणा–भाग में लगे रहते बरसों।
ज्ञानी कहते दूसरों की,
तुला पर न खुद को तोलो।
न किसी के प्रमाण–पत्र पर,
खुद को प्रामाणिक समझो।।

निंदा की किसी ने तुम्हारी,
तो न निंदित खुद को मानो।
प्रशंसा के शब्दों को तो चेतन,
गुरुचरणों में समर्पित कर डालो।।

आत्म–तुला, आत्म–तराजू,
सदा रखो अपने पास।
ईमानदारी से खुद को तोलो,
न मानो इसकी उसकी बात।।

मानव जन्म मिला है हमको,
न खेलना इससे दाँव।
तिरण–तारण का साधन है यह तन,
डूबना है या फिर तैरना,
यह सोचना हमारा काम।।

संस्कार सौरभ

करणी सागर रो पाणी पी, गुरुवर विद्वान बणीया

- कमला देवी सांड, देशनोक

बाल संतो ने देखो कांई, शूरवीर अणगार बणीया।
कैसा उत्कृष्ट संयम पाले, गुरु रे आदेशां पर चाले।
कर दिया तन-मन ने कुर्बान, गुरु री आज्ञा पाले।।
हो म्हानै देशाणे रो लाल, प्यारो-प्यारो लागै।
हो म्हानै नाना गुरु रो राम, प्यारो-प्यारो लागै।।
मन प्रफुल्लित है, प्रफुल्लित हैं चारों दिशाएँ,
आवो इस भव्य वेला में,
हम भी मिलकर कुछ गुनगुनाएँ।
नमन उस रात को, जिसने प्रभात को जन्म दिया।
नमन उस मात को, जिसने राम को जन्म दिया।।

धन्य है मारवाड़ की पावन पुण्यधरा 'देशनोक', जहाँ गुरु राम ने जन्म लिया। धन्य बनी रत्नकुक्षिणी गवरा माँ, जिन्होंने आपश्री को जन्म देकर अपने आँचल को कृत-कृत्य किया। धन्य बने वे शिक्षक, जिन्हें आपश्री को पढ़ाने का सौभाग्य मिला। आपश्री ने अल्पवय की अवस्था को आध्यात्मिकता से भर दिया, क्योंकि तप आपकी प्रतीक्षा कर रहा था। त्याग-प्रत्याख्यान के घर में आपके स्वागत की तैयारियाँ हो रही थीं, तभी तो ब्रह्मवेला में राम उठ-जाग जा किसी अदृश्य-शक्ति का आह्वान सुनकर *'समयं गोयम! मा पमायए'* की तरह जागृत होकर वीतराग के राही बन गए। संयम इंतजार कर रहा था आप जैसे साधक को पाने के लिए। आपश्री 22 वर्ष की अल्पायु में ही **'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'** हेतु गुरुचरणों में समर्पित हो गए। धन्य बने पूज्य आचार्य श्री नानेश आप जैसे अनमोल शिष्य-रत्न को पाकर। उस समय किसी ने परिवार ने ऐसा सोचा भी नहीं होगा कि ये राम आने वाले समय में हुक्मेश संघ शासन के नौवें पाट पर सुशोभित होंगे। लगभग कई साल लगातार गुरुचरणों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करते हुए गुरु के गुण, गुरु की शक्ति-भक्ति आपश्री ने धीर, वीर, गंभीर, विनय, विवेक, सरलता, नम्रता से अद्भुत गुणों को बँटोरा, जिनकी चमक-दमक से आज संपूर्ण साधुमार्गी जैन संघ व समाज दैदीप्यमान हो रहा है। जैसे चक्रवर्ती सम्राट अपनी-अपनी चतुरंगिणी सेना से सुशोभित होते हैं, वैसे ही आप चतुर्विध संघ में सुशोभित हो रहे हैं। आपश्री के चरण-स्पर्श कर कई क्षेत्रों की माटी चंदन बन महक उठी। गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि लगभग 16 राज्यों का विचरण करते-करते आपश्री जी का आगामी चातुर्मास आपकी जन्मभूमि देशनोक में होना संभावित है। आचार्य पद हर किसी को नहीं मिलता है। ठाणांग सूत्र में वर्णित है कि जिसके जीवन में विलक्षणा विशेषताएँ होती हैं, वे ही इस पद के अधिकारी होते हैं।

भक्तगण आपकी सरलता, तेजस्वी, ओजस्वी प्रवक्ता के रूप में विशिष्ट आचार्य के दर्शन करते हैं। सभी अपनी-अपनी दृष्टि से आपके गुणों का दर्शन करके गुणी भी बन सकते हैं। जैसे लड्डू या बीकानेर का रसगुल्ला कहीं से भी तोड़कर खाया जाए, वह मीठा ही लगेगा।

जल में निर्मलता, चंदन में शीतलता देखी है।
सागर में गंभीरता, पर्वत में सरलता देखी है।।
हर एक में कोई न कोई खासियत होती है।
लेकिन सारी विशेषताएँ, हमने गुरु राम में देखी हैं।।

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इस पंचम आरे में ऐसे संघनायक की छत्र-छाया मिली है। आपके जीवन के मंगल दीपक की ज्योति, श्रद्धा, ज्ञान की बात, कर्म की ज्योति से वह शुभ दीप हमारे भीतर भी प्रज्वलित हो।

हर एक दिवस, वर्ष मनाने का मौका मिले हर बार।
जिनशासन के गुरु राम को, वंदन शत-शत बार।।

73वें जन्मोत्सव पर आपके मंगलमय, स्वस्थ जीवन की शुभकामनाओं के साथ।

संस्कार सौरभ

सम्यक् तप एक उत्कृष्ट मंगल

- गणेशलाल डूंगरवाल, चित्तौड़गढ़

तप भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक जीवन का प्राण है। सभी भारतीय दर्शनों का जन्म तपस्या की गोद में ही हुआ है। तथापि जैनेतर दर्शनों में तप के लक्ष्य और स्वरूप के संबंध में मतैक्य का अभाव रहा है। कहीं विशेष शक्तियों को प्राप्त करने के लिए तप का विधान है तो कोई मध्यमार्गी होने से तप को चित्त-शुद्धि के लिए आवश्यक मानते हुए भी इससे निर्वाण नहीं मानते।

लक्ष्य

जैन तप साधना का महान लक्ष्य है- विशुद्ध आत्मस्वरूप को प्रकट करना। कर्मों के आवरण को पूर्णतया हटाए बिना यह लक्ष्य प्राप्त करना संभव नहीं है। अतः प्रभु महावीर ने सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र के साथ तप को भी मोक्षमार्ग के अभिन्न अंग के रूप में प्ररूपित किया है। (उत्तराध्ययन सूत्र, 28/2) 14 पूर्वों के ज्ञाता आचार्य शय्यंभव स्वामी ने भी अहिंसा एवं संयम के साथ तप को उत्कृष्ट मंगल रूपी धर्म का अभिन्न अंग बतलाया है। (दशवैकालिक सूत्र, 1/1) वस्तुतः नवीन कर्मों का आगमन तो संवर से रुक जाता है, लेकिन पूर्व संचित के कर्मों की सत्ता को भस्म करने के लिए सम्यक् तप का अवलंबन लेना ही होता है। प्रभु फरमाते हैं- **''करोड़ों भवों में संचित कर्म तप से क्षीण हो जाते हैं।''** (उत्तराध्ययन सूत्र, 28/6) आचार्य उमास्वाति ने तप से संवर और निर्जरा दोनों बताए हैं। (तत्वार्थ सूत्र, 9/3) ऐसा इसलिए कि सम्यक् तप के आचरण से आश्रव स्वतः रुक जाते हैं। तप को **'संयम का कवच'** भी कहा गया है। ऐसा इसलिए कि तप के बिना संयम सुरक्षित व स्थिर नहीं रह सकता।

स्वरूप

अन्य मतावलंबियों द्वारा किए जाने वाले पंचाग्नि आदि हिंसक तप-अनुष्ठान सम्यक् तप नहीं है। अतः वे उत्कृष्ट मंगल रूप भी नहीं हो सकते हैं। प्रभु ने सम्यक् तप से स्वरूप की विस्तृत विवेचना करते हुए **'तपोमार्गगति'** नामक अध्ययन में (उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 30) इसके दो भेद बतलाए हैं- बाह्य एवं आभ्यंतर। बाह्य तप-अनुष्ठानों में अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या, रस परित्याग, कायाक्लेश व प्रतिसंलीनता को सम्मिलित किया है। आभ्यंतर तपों में प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (ममत्व/कषाय त्याग) को शामिल किया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बाह्य तपों का उद्देश्य आभ्यंतर तपों की प्राप्ति ही है। अंततोगत्वा, आभ्यंतर तपों से वीतरागता में वृद्धि होती है। प्रभु महावीर अंतिम देशना में फरमाते हैं— **''जो साधक दोनों प्रकार के**

(बाह्य एवं आभ्यंतर) तप का सम्यक् आचरण करता है, वह शीघ्र ही समस्त संसार से विमुक्त हो जाता है।'' (उत्तराध्ययन सूत्र, 30/37)

अर्थ एवं महत्व

सामान्य अर्थ में इंद्रिय विषयों के निग्रह (निरोध) को तप कहते हैं। विशिष्ट अर्थ में *'कर्मदहनात्तप'* अर्थात् कर्मों को तपाकर भस्म कर देने के कारण इसे तप की संज्ञा दी गई है। उत्तराध्ययन सूत्र, 30/1 के अनुसार, **''जिस पद्धति से भिक्षु (साधक) राग-द्वेष से अर्जित पाप कर्मों का क्षय करता है, वह तप है।''** इससे यह फलित होता है कि एकांत कर्म निर्जरा की दृष्टि से किया गया तप ही **'सम्यक् तप'** है।

''तप का अर्थ केवल शरीर दमन नहीं, वरन् आत्मदमन भी है।'' क्रोधादि कषायों से वासित चित्त की प्रवृत्तियों का निरोध करना आत्मदमन है। इससे यह फलित होता है कि तपस्या का मापदंड वृत्ति विजय है। जिसने अपनी इच्छाओं को जितने अंश में कम किया है, वह उतने ही अंश में तप का आराधक है और इसीलिए कहा गया है- *''इच्छानिरोधस्तपः''*।

ममत्व के त्याग को वास्तविक तप कहा गया है। ऐसा इसलिए कि मोहनीय कर्म कर्म-शत्रुओं का राजा है। इसके हारते ही विजय निश्चित हो जाती है। विशेष रूप से, शरीर और प्राणों का ममत्व तो तपस्या से ही छूटता है।

प्रभु महावीर का साढ़े बारह वर्षों का पूरा साधनाकाल स्वाध्याय, आत्मचिंतन, ध्यान और कायोत्सर्ग में ही बीता और इस काल में से साढ़े ग्यारह वर्ष तो वे निराहार ही रहे। चार ज्ञान के धारी गौतम गणधर बेला-बेला पारणा करते थे। वर्तमान में प्रभु के ही 82वें पाट पर विराजे तरुण तपस्वी आचार्य श्री रामेश भी पिछले 50 वर्षों में उत्कृष्ट बाह्य एवं अभ्यंतर तपों के आलंबन से वीतरागी सरीखे लग रहे हैं। उन्हीं के शिष्य बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. बेले-बेले की तपस्या करते हुए विनय तप की पराकाष्ठा को छू रहे हैं। उत्कृष्ट तप के ऐसे कई उदाहरण आगमों में समाए हुए हैं। 'अंतकृद्दशांग सूत्र' तो उत्कृष्ट तप साधना को ही समर्पित आगम है। उत्कृष्ट तप से उसी भव में विशुद्ध आत्मदशा को प्राप्त 90 महापुरुषों का व्यक्तिशः विस्तृत विवरण इसमें उपलब्ध हैं। 'आवश्यक सूत्र' भी ध्यान, कायोत्सर्ग तथा प्रायश्चित तप की विधियों से परिपूर्ण है।

तपस्या विवेक

तप की विवेकपूर्ण आराधना हेतु निम्न बिंदु ध्यान रखने योग्य हैं –

(1) लक्ष्य पर दृढ़ता

दशवैकालिक सूत्र, 9/4 तप आराधना के लक्ष्य को स्पष्ट कर यह निर्देशित करता है कि इस लोक व परलोक में भौतिक सुखों की लालसा अथवा यश, कीर्ति, पूजा, महिमा आदि के लिए तप न करें। केवल आत्मिक सुख में अभिवृद्धि हेतु कर्म निर्जरा के लक्ष्य पर अडिग रहें। ऐसे तप ही सम्यक् होकर उत्कृष्ट मंगलकारी सिद्ध होते हैं। सांसारिक लालसा से किए जाने वाले तप **'बाल तप'** कहलाते हैं।

(2) सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता

सम्यग्दृष्टि द्वारा किए जाने वाले विवेकपूर्ण तप-अनुष्ठानों से ही कर्मों की महानिर्जरा संभव है। मिथ्यादृष्टि द्वारा किए जाने वाले तप **'अज्ञान तप'** कहलाते हैं। एक सम्यग्दृष्टि जैसे-जैसे अपने सम्यक्त्व की प्रगाढ़ता बढ़ाते हुए व्रतों या महाव्रतों के पालन के आधार से गुणस्थानों के पायदान चढ़ता है, वैसे-वैसे उसके कर्मों की निर्जरा भी असंख्येय गुणा बढ़ती जाती है।

(3) आडंबर रहितता

तप-अनुष्ठानों के दौरान एवं इनकी पूर्णता पर आरंभ-समारंभ से बचें, ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करें, स्वाध्याय व आत्मस्वरूप के चिंतन में रत रहें। आत्मा के

समीप वास करना ही उपवास या अनशन आदि का वास्तविक स्वरूप है।

(4) स्वयं आंकलन करें

तप आराधना दोषपूर्ण रही या निर्दोष? क्रोधादि कषायों में कमी आ रही है या नहीं? ममत्व घट रहा है या नहीं? इन मापदंडों पर आपकी सुखद् अनुभूति आपको और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।

(5) साधुता का लक्ष्य धरें

प्रभु महावीर उद्घोषित करते हैं कि एक उपवास में साधु जितने कर्म खपाता है, उतने कर्म नैरयिक जीव हजारों वर्षों में भी नहीं खपा सकते। अत: श्रावक तप-अनुष्ठानों के दौरान साधुता की भावना भाकर अल्पकाल के लिए ही सही, साधुपन का लक्ष्य रखें। उपवास युक्त पौषध करें। अंतिम समय संथारा-संयम की भावना भाएँ।

(6) तपन को समभाव से सहें

जैसे बिना अग्नि की तपन के सोने की शुद्धता की चमक प्रकट नहीं होती, वैसे ही बिना तपाग्नि के आत्मिक आभा प्रकट नहीं होती। अत: कर्मों की होली जलने दें और इसकी तपन को आत्मिक आनंद की अनुभूति से शांत करते रहें।

तप में सूर्य के समान तेजस्विता होती है। तप के तेज से आत्मा की तेजस्विता भी शरीर के अंग-अंग से झलकने लगती है। जैसे सूर्य के तपने से समूचा सृष्टि तंत्र ठीक प्रकार से चलता है, वैसे ही आध्यात्मिक (संयमी) जीवन का तंत्र भी तप के द्वारा संचालित होता है। पुरुषार्थ-पराक्रम के फूल तथा शाश्वत सुखानंद रूपी फल तप की तेजस्विता से ही प्राप्त होते हैं। अत: सदैव सम्यक् तप की आराधना विवेक से करें। यही उत्कृष्ट मंगल रूप धर्म का आधार है।

भक्ति रस

निष्काम भक्ति

- ललित कटारिया, सुपल

प्राणीमात्र ही भाई-बहन, मात-पिता हर जीव।
करुणा जिस घट में बसे, वही बनते हैं शिव।।
भक्ति जिस घट होत है, मंत्रमुग्ध सदा रहता।
जहाँ बसे भक्ति हृदय में, उससे कुछ नहीं कहता।।
भक्ति भीतर से होती, ठोर पड़े न सूझ।
भक्त की भक्त ही जानता, पहेली बड़ी अबूझ।।
दिल दिमाग जिसके न होवे, वही भक्त है होते।
समर्पणा एक तरफा हो, आनंद वही है पाते।।
भक्ति ही खींच लेती है, भगवान को भक्त के पास।
प्रतिपल सुमिरण हृदय में, बनता भक्ति से ही खास।।
भक्त हृदय भक्ति करे, देखे न दिन और रैन।
भक्ति बिन कुछ न सूझे, बिन भक्ति बेचैन।।
भक्ति के वशीभूत भक्त, पहाड़ चढ़ जाए बड़ा।
समुंदर तैर ले भक्ति सू, अग्नि में हो जाए खड़ा।।
भक्ति की शक्ति, होती बड़ी गजब।
जिस प्रति होवे भक्ति, देखे न मजहब।।
अवगुण भक्त न जोवता, अवगुण को गुण जान।
निष्काम भक्ति भक्त की, साहिब पर ही ध्यान।।
अमीरी-गरीबी जो देखे, भक्ति नहीं रहे वहाँ।
भक्ति बड़ी अनमोल है, रहे वहीं प्रेम जहाँ।।
निष्काम भक्ति में भक्त, भावों से ऊँचा चढ़े।
आत्मा निर्मल पवित्र हो, आगे ही आगे बढ़े।।
मीरा हनुमान शबरी, गौतम या हो मुनि राजेश।
हृदय में निष्काम भक्ति, नहीं किसी से द्वेष।।
भक्ति ऐसा अमृत प्यारे, भव-भव के पाप दे गला।
वर्तमान आनंद में बीते, अनंत काल तक हो भला।।

संस्कार सौरभ

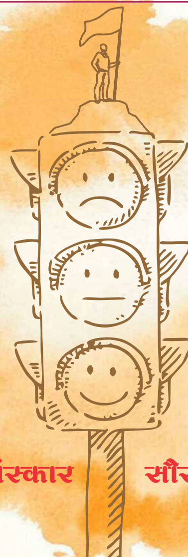

सकारात्मकता

आनंदमय जीवन का सोपान

- डॉ. इंद्रा जैन, उदयपुर

मानव ही संसार में वह श्रेष्ठ प्राणी है जो अपने जीवन के प्रतिक्षण का उपयोग अपने हित, आनंद, कल्याण या कामना पूर्ति के लिए कर सकता है। सभी प्राणी सुख ही चाहते हैं किंतु जीवन सुख-दुख का मेला है। प्रत्येक सफल और सुखी व्यक्ति के जीवन का एक ही रहस्य है कि उसने समय को किस तरह उपयोग में लिया। जो जीवन में इस कला को जान लेता है वह सदैव अपनी ऊर्जा का उपयोग सही दिशा में करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

सकारात्मकता एक भावना है। जैन धर्म दर्शन का तो कर्म सिद्धांत भावना के महत्व को बहुत उच्च स्थान प्रदान करता है। हम दान, सेवा, तप जो भी क्रिया कर रहे हैं, उन सभी का फल भावनाओं की तरतमता पर आधारित है।

भावे भावना भाइये, भावे दीजिए दान।
भावे धर्म आराधना, भावे पद निर्वाण।।

नवकार मंत्र का जाप सभी करते हैं लेकिन सकारात्मक भाव से जाप करने से सर्प की फूल माला बन जाती है और विष भी अपना प्रभाव नहीं दिखा पाता। एक बार सामूहिक भोज के पश्चात् सभी लोग बीमार हो गए लेकिन एक व्यक्ति स्वस्थ रहा। खोज करने पर पता चला कि वह नवकार मंत्र सच्ची श्रद्धा के साथ बोलने के पश्चात् ही भोजन ग्रहण करता है। यह तो अभी इसी युग की बात है। उसे कुछ नहीं हुआ। यह सकारात्मक भाव का परिणाम है।

तुलसीदास जी ने भी कहा है, **'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी'**। सकारात्मक विचार रखने का प्रयास आपके व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन ला सकता है।

सकारात्मकता से -

1. आपका मन प्रसन्न रहेगा। जब आप किसी के प्रति दुर्भावना नहीं रखेंगे तो दु:खी होने के अवसर समाप्त हो जाएँगे।
2. आप निर्भय हो जाएँगे। आपको समाज, परिवार, रिश्तेदारी किसी के विषय में कुछ सोचने-विचारने का भय नहीं रहेगा।
3. आत्मबल मजबूत बनेगा। सकारात्मक सोच आपके मनोबल को श्रेष्ठ बनाएगी।
4. आप सदाचारी बन जाएँगे। आपका आचरण सत्य और निष्ठा की ओर स्वमेव बढ़ता चला जाएगा।
5. आप मानवीय करुणा से ओत-प्रोत होंगे। जब मन में किसी के प्रति बुरे विचार नहीं रहेंगे तो आपके मन में सदैव दूसरों के प्रति करुणा भाव रहेंगे।
6. आप श्रेष्ठ धार्मिक मूल्यों की ओर अग्रसर होंगे। धीरे-धीरे आपकी रुचि धर्म मार्ग पर बढ़ती

चली जाएगी।

सकारात्मक भाव लाने के लिए हमें प्रयास करने की आवश्यकता है। सर्वप्रथम तो ऐसे लोगों से दूरी बनाएं जो जीवन में निराशा से ही घिरे रहते हैं। ऐसे लोगों को गिलास आधा खाली ही नजर आता है। आधे भरे हुए से भी एक बार प्यास तो बुझ सकती है। यह उन्हें जल्दी समझ नहीं आता।

समकित के पाँच लक्षण बताते समय भी कहा जाता है, पर पाखंडी से दूरी बनाए रखो। कारण वही है –

काजल की कोठरी में कितने ही जतन करो,
काजल की एक रेख लागे पर लागे है।

अर्थात् संगति का असर किसी न किसी रूप में जरूर होता है।

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि।
वावन्न-कुदंसण-वज्जणा, य सम्मत्तसद्दहणा।।

– उत्तरा. अ. 28, गा. 28

अर्थात् स्वयं परमार्थ का परिचय (जीवादि पदार्थों को जानना) करो, जिन्होंने परमार्थ को भली-भाँति देखा है उनकी पर्युपासना। जिसका सम्यक् दर्शन नष्ट हो गया है उसका तथा मिथ्यादृष्टियों का वर्जन करना। यही सम्यक्त्व की श्रद्धा है। इसी से सम्यक् दर्शन में स्थिरता आती है।

अपने धर्म दर्शन विचारों पर दृढ़ आस्था होनी चाहिए। साथ ही मिथ्यादृष्टि से दूर रहने के आग्रह का यही तात्पर्य है कि नकारात्मकता से दूरी बनानी होगी।

योगशास्त्र तो यह सिखाता है कि यदि आप कोई शुभ कार्य करना प्रारंभ कर रहे हैं तो अपनी श्वास को भी क्षणभर के लिए रोककर रखिए। निःश्वास यानी श्वास छोड़ना नकारात्मक ऊर्जा का पर्याय होता है। सकारात्मक सोच के साथ सांस अंदर भरकर सफलता की शुभ भावना के साथ किसी कार्य को प्रारंभ करना चाहिए।

विज्ञान भी मानता है कि व्यक्ति के विचार ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। हम जैसा सोचते हैं, धीरे-धीरे वही हमारे आचरण में आता है और हमारा कर्म क्षेत्र विचारों के अनुकूल बनता चला जाता है। अतः यदि जीवन की प्रत्येक कठिनाई को सही दिशा दी जाएगी तो हम आनंदमय जीवन की ओर बढ़ते जाएंगे। सकारात्मक सोच, व्यवहार और कार्य प्रगति पथ के पाथेय हैं। हम सभी सकारात्मक सोच की ओर अग्रसर हों, यही शुभ भावना है।

मुंड भाव में ऊपरी मुंडन नहीं, पाँच इंद्रियों व मन का मुंडन करना है। औरंगजेब ने किया था बाह्य मुंडन। सभी मूर्तियों में से किसी के कान काटे, किसी की नाक काटी और किसी का और कोई अंग खंडित किया, किसी भी मूर्ति को अखंड नहीं रहने दिया। प्रभु ने कहा है — ''पाँच इंद्रियों के विषयों को मुंडना है।'' आकर्षक दृश्यों पर चक्षु का आकर्षण नहीं बने। इसी प्रकार अन्य इंद्रियों का भी उनसे संबंधित वस्तु के प्रति आकर्षण न बने। मन को अशुभ विचारों से मोड़ें। वचन को भाषा समिति से समित करें। कहा भी है — ''साधु सोहंता अमृतवाणी।'' इसी प्रकार काया को भी संवृत्त करें। नग्न भाव और मुंड भाव से हमारे जीवन में अमृत बूँदें बरसेंगी, फिर मरण की स्थिति नहीं बनेगी। मरण वह होता है जो इंद्रियों की गुलामी में हो।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

गुरुचरण विहार समाचार

संघशक्ति की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।
दृढ़ संयम की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार।।

गंगाशहर-भीनासर में समवसरण, दीक्षा व वर्षीतप पारणा की अपूर्व छटा

युगनिर्माता, परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में

'अक्षय संयम महोत्सव'

मुमुक्षु अंशिका जी सुराणा एवं मुमुक्षु स्नेहा जी सुराणा की जैन भागवती दीक्षा 20 अप्रैल को संपन्न

मुमुक्षु लीलमचंद जी सुराना, मुमुक्षु गौरव जी नाहटा, मुमुक्षु निकिता जी संकलेचा, मुमुक्षु प्रियंका जी सेठिया, मुमुक्षु मुस्कान जी सेठिया, मुमुक्षु श्रुति जी गांधी की जैन भागवती दीक्षा (4 घोषित एवं 2 गुप्त) अक्षय तृतीया 30 अप्रैल को संपन्न

मुमुक्षु मयंक जी सोनावत, मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत एवं मुमुक्षु रेखा जी सोनावत की जैन भागवती दीक्षा 4 जून को बीकानेर के लिए घोषित

अक्षय तृतीया प्रसंग पर 114 वर्षीतप पारणे सानंद संपन्न

साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. के 30 उपवास (मासखमण) संपन्न

श्री गौतम मुनि जी म.सा. का उदयरामसर एवं साध्वी श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा. का चातुर्मास जेठाना के लिए घोषित

श्री जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर, जिला बीकानेर।

जिनशासन की शान हैं, गुरु राम उनका नाम है।
वर्तमान के वर्धमान हैं, हम भक्तों के भगवान हैं।।

जिनकी उत्कृष्ट संयम साधना की गूँज देश-विदेश में हो रही है, ऐसे युगनिर्माता युगपुरुष, मानवता के मसीहा, साधना के शिखर पुरुष, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, गुणशील संप्रेरक, व्यसनमुक्ति के प्रणेता, नानेश पट्टधर, जगत उद्धारक आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर अनेक दिव्यात्माएँ श्रीचरणों में समर्पित होने के लिए लालायित हैं।

मारवाड़ क्षेत्र में दीक्षाओं की धूम मची हुई है। जवाहराचार्य की पुण्यभूमि गंगाशहर-भीनासर में 20 अप्रैल को **मुमुक्षु सुश्री अंशिका जी सुराणा** एवं **मुमुक्षु सुश्री स्नेहा जी सुराणा (दिल्ली/देशनोक)** की जैन भागवती दीक्षा संपन्न होने के बाद **30 अप्रैल** को **मुमुक्षु श्री लीलमचंद जी सुराना**, **मुमुक्षु श्री गौरव जी नाहटा**, **मुमुक्षु सुश्री निकिता जी संकलेचा**, **मुमुक्षु सुश्री प्रियंका जी सेठिया**, **मुमुक्षु सुश्री मुस्कान जी सेठिया**, **मुमुक्षु सुश्री श्रुति जी गांधी** की जैन भागवती दीक्षा हजारों के जनसमूह की उपस्थिति में उल्लासमय वातावरण में संपन्न हुई। वहीं **4 जून** को बीकानेर के लिए माता एवं दो पुत्रों- **मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी**-विनीत जी सोनावत, **मुमुक्षु मयंक जी सोनावत** व **मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत** (हैदराबाद/भीनासर) की दीक्षा की घोषणा होते ही मारवाड़-दक्षिण अंचल सहित पूरे देश में खुशी की लहर दौड़ गई। **संयम शतम में अब तक 58 दीक्षाएँ और युवाचार्य पद के बाद अब तक 431 दीक्षाएँ संपन्न हो चुकी हैं।** यह आचार्य भगवन् का अद्भुत अतिशय है। गंगाशहर-भीनासर में चातुर्मास जैसा ठाट लगा हुआ है। चतुर्विध संघ धर्मतप की आराधना में इस भीषण गर्मी में भी श्रद्धा, भक्ति भावों से तत्पर है।

साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. के 30 उपवास गुरुकृपा से पूर्ण हो चुके हैं। अनेक चारित्रात्माओं के तपस्याएँ जारी हैं। **सुश्रावक विजय कुमार जी सांड का 35वाँ मासखमण** इस पुण्यधाम में पूर्ण होने जा रहा है। **श्री गौतम मुनि जी म.सा.** का 2025 का चातुर्मास **उदयरामसर** के लिए एवं **साध्वी श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा.** का चातुर्मास **जेठाना** के लिए घोषित हुआ है। **वर्षीतप के 114 पारणे भी सानंद संपन्न हुए।** वर्षीतप आराधक भाई-बहनों का श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगाशहर-भीनासर एवं अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा स्वागत व बहुमान किया गया। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

धर्म को जीना बहुत कठिन

16 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। *'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान, सदा हो मन में इनका ध्यान'* एवं *'राम गुरु महाराज आपकी जय-जय हो'* गीतों का मधुर ध्वनि में संगान के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना में देव-गुरु की भक्ति की गई। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को धर्म का मर्म बताते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''धर्म को हमने जितना सरल समझा है, उतना सरल है नहीं। हमें आसान इसलिए लग रहा है कि हमें इस धर्म में जन्म से मिला है। हम धर्म के ईर्द-गिर्द घूम रहे हैं। हमारे भीतर में धर्म है। धर्म को जीना बहुत कठिन है। दशवैकालिक सूत्र में धर्म की परिभाषा में कहा गया है, धर्म दो प्रकार का होता है - **द्रव्य** और **भाव**। आत्मा का लक्षण जानना और देखना है। पाँच इंद्रियों के विषय अस्थिर धर्म हैं। चेतना का धर्म ज्ञान, दर्शन, चारित्र धर्म है। धर्म में रमेंगे तो स्थिरता होगी। धर्म के आधार के बिना मन की स्थिरता संभव नहीं है। धर्म की आराधना से मन दृढ़ हो जाता है। जितनी आत्माएँ मोक्ष गई हैं वे स्थिर थीं। स्थिर आत्माएँ ही मोक्ष जाएंगी, अस्थिर नहीं जाएंगी। हम जहर पी रहे हैं या अमृत? क्रोध, मान, माया, लोभ आदि जहर हैं। जहर से संवेदना शून्य हो जाती है।''

'सुज्ञानी जीवा तज देना विष को उत्तम रीत है' की चौपाई के माध्यम से नई-नई प्रेरणा आचार्य भगवन् ने धर्मप्रेमी जनता को दी।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने *'धन्य घड़ी धन भाग म्हारे घर आया अणगार'* गीत के साथ सुपात्रदान की महिमा प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि पहले तीर्थंकर भगवान ने असि-मसि-कृषि के बारे में बताया एवं कुलकरों ने सारी व्यवस्था संभाली।

नौ वर्ष के रक्षित सुराणा ने तेला तप की आराधना की। अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी जनों ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। सभा में **मुमुक्षु स्नेहा जी सुराणा, दिल्ली, मुमुक्षु अंशिका जी सुराणा, दिल्ली, मुमुक्षु प्रियंका जी सेठिया-गंगाशहर** ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

'राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश' अभियान के तहत आदर्श विद्या मंदिर, सेठ चम्पालाल बांठिया स्कूल में नैतिक शिक्षा, व्यसनमुक्ति व संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए। परम गुरुभक्त श्री धर्मचंद जी बम्बकी, बेंगलुरु/लसानी के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

शुभ संकल्प सूत्र शिविर में श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने महिलाओं को विशेष मार्गदर्शन दिया। विद्वान डॉ. सुरेश जी आचार्य, बीकानेर ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

जैन धर्म का मूल है अहिंसा

17 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। भोर की मंगलमय प्रार्थना में *'म्हारे नैनों में आओ बस जाओ महावीर'* एवं *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* गीतों के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल के विशाल प्रांगण में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतदेशना में फरमाया कि "जैन धर्म की मूल नीति अहिंसा है। सर जगदीशचंद्र बसु ने पृथ्वी, जल, वनस्पति में जीव की उत्पत्ति प्रमाणित की है। किसी भी जीव को नहीं मारना। सभी जीवों की रक्षा करना ही अहिंसा की परिपूर्णता नहीं है। अपने जीने-मरने का भय समाप्त हो जाना ही अहिंसा की परिपूर्णता है। सामायिक की कमाई, प्रतिक्रमण की पूंजी नहीं रहे तो मूंजी का मूंजी।

काम, क्रोध है विष रूप, क्षमा अमृत जान,
क्षमा तारे एक जन्म, काम क्रोध बिगाड़े हजार,
सुज्ञानी जीवा तज देना विष को उत्तम रीत है।

भौतिक जहर एक जन्म का बिगाड़ करता है किंतु क्रोध, मान, माया, लोभ जन्म-जन्मातर तक रुलाने वाले हैं। हमें हमेशा समभाव में रमण करना चाहिए।"

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने पंच-परमेष्ठी की वंदना *'जयगान हो, जयगान हो, अरिहंत का जयगान हो'* गीत के संगान के पश्चात् फरमाया कि मान को मृदुता (कोमलता) से जीतो। व्यक्ति जब तक झुकता नहीं है तब तक वह उठता नहीं है। भगवान ने नवकार मंत्र का प्रारंभ **'नमो'** से किया है। नमो का मतलब है नमना। जो जितना झुकेगा वो उतना बढ़ेगा। *'रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा, ऐसा दो आशीष कि फिर न लें जन्म दुबारा'* गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने 27 अप्रैल को पक्खी पर्व के अवसर पर भाइयों में 250 एवं बहनों में 500

प्रतिक्रमण करने का आह्वान किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'म्हारा गुरुवर सा देश-विदेश में ज्ञान क्रिया का डंका बजावे'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। बालिका आदर्श विद्या मंदिर में **'राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश'** अभियान के तहत नैतिक शिक्षा, व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

मन को नियंत्रित करना संयम है

18 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। भाव-भक्ति से ओत-प्रोत प्रभु एवं गुरुभक्ति प्रार्थना के पश्चात् चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आयोजित धर्मसभा को अपनी पावन वाणी से धर्म गंगा में सराबोर करते हुए शास्त्रज्ञ परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने फरमाया कि "धर्म अहिंसा संयम तप रूप है। धर्म दो प्रकार का है - **लौकिक** एवं **लोकोत्तर**। जो आत्मकल्याण में सहायक होता है, जो मर्यादा में बंधा रहता है वह लोकोत्तर धर्म है। अहिंसा के बाद संयम है। अहिंसा नहीं है तो संयम होगा ही नहीं। संयम मात्र वस्त्र परिवर्तन नहीं है अपितु मन परिवर्तन है। मन का बदलाव होना चाहिए। संयम आश्रव को बंद करने का द्वार है। कर्म जिस मार्ग से आ रहे हैं उस मार्ग को बंद करना संवर है। मन को नियंत्रित करना संयम है। कैसी भी परिस्थिति आए सहन करने की क्षमता भीतर में प्रकट करनी चाहिए। सहना, सहना, जब तक जीवन तब तक सहना। मन जब आर्त्तभाव में चला जाता है तो मन कमजोर पड़ जाता है। जहाँ अहिंसा है, वहाँ भय, आसक्ति दूर हो जाती है। निस्पृह भावों में वृद्धि होती है तो मन सुदृढ़ हो जाता है। जैसा बीज बोओगे वैसा फल पाओगे। राग-द्वेष पतला करो तभी निर्वाण होगा।"

भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक प्रत्याख्यान ग्रहण किये। शासन दीपक श्री हर्षित मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-15 का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

संयम से आने वाले कर्मों का क्षय होता है

मुमुक्षु बहनों का शानदार अभिनंदन

19 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। आज के दिन का पावन शुभारंभ मधुर भक्ति गीतों के साथ प्रार्थना के माध्यम से किया गया। धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की अमृतदेशना के अंशों से अभिषिक्त करते हुए तरुण तपस्वी आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि "गौतम गणधर को पक्का विश्वास था कि उनकी जिज्ञासा, कौतूहल का समाधान उन्हें प्रभु महावीर से मिल जाएगा। उनकी जिज्ञासा थी कि संयम से जीव को क्या लाभ होता है? प्रभु महावीर ने फरमाया कि अनाश्रव, आने वाले कर्मों का रास्ता बंद हो जाता है। भीतर रहे हुए कर्मों को काटने के लिए 12 प्रकार के तप करने चाहिए। सभी

तप अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं। एक तप है कायोत्सर्ग अर्थात् काया से अलगाव। यह काया मेरी नहीं है। इससे सिर्फ संबंध स्थापित किया है। यह एक दिन छूटेगी, साथ नहीं जाएगी। यह निरंतर अभ्यास से संभव है। हमने मन का उपयोग किसलिए किया? मन एक क्षण में सद्गति में ले जाता है और दूसरे ही क्षण दुर्गति में ले जाता है। मन की गति तीव्र होती है। बहुत बार हमारा मन दूसरों की तरफ लगा रहता है। सोचो मैं क्या कर रहा हूँ? अच्छा कर रहा हूँ या बुरा? यह जागरण होगा तो चर्या का बोध होगा। दुर्गति की तरफ ले जा रहे मन को रोकना होगा। हमारा मन जंप करता है। क्यों नहीं रोक पाते मन को? हम जागृत नहीं, सजग नहीं। किस रास्ते जा रहे हैं इसका ध्यान नहीं। जन्म हमारे हाथ में नहीं है, पर जीवन जीना हमारे हाथ में है। कर्मों को बदलने वाली हमारी आत्मा है। यदि आत्मा ही सोई है तो कर्म हावी हो जाएंगे।''

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने *'अहो-अहो मेरे भगवन्, सुहाने दर्शन हो'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संसार में सच्चा सुख नहीं है। कामभोग क्षणिक सुख और लम्बे काल तक दु:ख देने वाले हैं। कोई शरण देने वाला नहीं है। एक मात्र देव, गुरु, धर्म की शरण ही सच्चा शरणा है।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहनों सुश्री अंशिका जी व सुश्री स्नेहा जी सुराणा अपने परिजनों एवं दिल्ली संघ सहित उपस्थित थीं।

श्री हेमंत मुनि जी म.सा., श्री लाघव मुनि जी म.सा., श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा., श्री अनन्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा रतलाम से 700 कि.मी. का विहार कर गुरुचरणों में पधारे। परम गुरुभक्त रामलाल जी बरड़िया, पांचू (नोखा) के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

मुमुक्षु बहनों का शानदार अभिनंदन, स्वागत में उमड़ा जनसैलाब

संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।
धन्य-धन्य-धन्य कह रहा है मन।।

सांसारिक सुख-वैभव, भोग व आधुनिक साधनों को ठोकर मारकर रामेश शासन में कठोरतम त्याग एवं संयम के मार्ग की ओर अपने जीवन को समर्पित करने वाली सगी बहनों **मुमुक्षु सुश्री अंशिका जी सुराणा** (18 वर्ष) एवं **मुमुक्षु सुश्री स्नेहा जी सुराणा** (14 वर्ष), दिल्ली/देशनोक सुपुत्री नरेन्द्र जी-जयश्री जी सुराणा एवं परिजनों का श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ एवं गंगाशहर-भीनासर के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, आरुग्गबोहिलाभं सहित अनेक संस्थाओं व संघों द्वारा शानदार स्वागत-बहुमान किया गया। इतनी लघुवय में कठोर संयम मार्ग की ओर कदम बढ़ाने वाली इन बहनों के स्वागत के लिए जनसैलाब उमड़ पड़ा। मिलेनियम होटल में आयोजित इस गरिमामय समारोह का आगाज समता बहू मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। स्वागत गीत समता महिला मंडल ने सुमधुर स्वरों में प्रस्तुत किया।

स्वागत भाषण में संघ अध्यक्ष ने कहा कि गंगाशहर-भीनासर संघ पर महापुरुषों की कृपादृष्टि सदैव रही है। इस विराट दीक्षा आयोजन हेतु सुराणा परिवार व दीक्षार्थी बहनों के आदर्श त्याग की जितनी सराहना की जाए उतनी ही

कम है। मुमुक्षु बहनों का परिचय देते हुए महेश नाहटा ने महापुरुषों के अतिशय का जिक्र किया। अभिनंदन पत्र का पठन दीक्षा व्यवस्था संयोजक ने किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि रामेश शासन में दीक्षाओं का ठाठ लग रहा है। पुण्यशाली आत्माएँ ही महान वीतराग पथ पर अग्रसर होती हैं। सुराणा परिवार व गंगाशहर-भीनासर संघ बधाई के पात्र हैं।

मुमुक्षु बहन अंशिका जी सुराणा ने अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित मोक्षार्थी शिविर में जाने का सौभाग्य मिला। जीवन के सच्चे उद्देश्य की जानकारी मिली और इस दिशा में आगे बढ़ने का पक्का मन बना लिया। परिजनों के सुसंस्कार एवं प्रेरणा अद्वितीय रही। महापुरुषों और परिजनों के उपकार को कभी भुला नहीं पाऊँगी। अपनी संतानों को एक बार आरुग्गबोहिलाभं में भेजने का लक्ष्य रखें। जिस उद्देश्य से संयम ग्रहण करने जा रही हूँ उसमें सफल होने में आप सबके आशीर्वाद की मंगलकामना करती हूँ।

मुमुक्षु स्नेहा जी सुराणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि मोक्षार्थी शिविर के प्रसंग पर दीदी को भीलवाड़ा में आयोजित शिविर में छोड़ने जाने का प्रसंग बना। वहाँ पूज्य आचार्य भगवन् के दर्शन, मांगलिक श्रवण की। आपश्री जी के वात्सल्य भावों के कारण मेरा भी इस मार्ग पर बढ़ने का मन बन गया। परिवारजनों, माता-पिता का बहुत सहयोग रहा।

मुमुक्षु बहनों व परिजनों का स्वागत संघ अध्यक्ष, मंत्री, महिला समिति अध्यक्ष सहित उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा शॉल, माला, कूंकू, चावल से किया गया। हर कोई इस लघुवय में मुमुक्षु बहनों द्वारा किये गये त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा था।

वीर पिता नरेन्द्र जी सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि सुराणा परिवार से पूर्व में कोरोना काल में मंगल मुनि जी म.सा. गुरुचरणों में समर्पित हुए और अब ये मेरी दोनो सुपुत्रियाँ दिव्य वीतराग पथ की ओर अग्रसर हो रही हैं। आज मुझे हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। आप भी अपनी संतानों को श्रेष्ठ संयम मार्ग की ओर बढ़ाने तथा स्वाध्यायी सेवा देने हेतु अवश्य प्रेरित करें। वो दिन धन्य होगा जब हम भी संसार के जंजाल से मुक्त होंगे। सभा का संयोजन करते हुए संघ मंत्री ने *'संसार खारो लागे, वैराग प्यारो लागे'* गीत प्रस्तुत किया। सामूहिक नवकार मंत्र जाप एवं मंगलपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल द्वारा चौबीसी एवं भजनों का कार्यक्रम एवं ओघा बंधाई कार्यक्रम जय-जयकारों व मंगल गीतों के साथ सम्पन्न हुआ। नोखा, देशनोक, बीकानेर, पांचू, दिल्ली के महिला मंडलों ने शानदार गीतों की प्रस्तुति दी।

दो सगी बहनें चलीं संयम पथ की ओर

दीक्षा आत्मा को संस्कारित करने का विकल्प है - आचार्य भगवन्

दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कार्य संयम है - उपाध्याय प्रवर

20 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। युगनिर्माता, आगमज्ञाता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में दो सगी बहनों **मुमुक्षु सुश्री अंशिका जी सुराणा** एवं **मुमुक्षु सुश्री स्नेहा जी सुराणा** की जैन भागवती दीक्षा अपार जनसमूह की उपस्थिति में सौल्लास सम्पन्न हुई। समवसरण-सा अद्भुत दृश्य देखकर हर कोई नतमस्तक एवं हर्षित नजर आ रहा था।

आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर को अपलक निहार कर श्रद्धालुजन आपश्री के पावन दर्शनों से स्वयं को निहाल कर रहे थे। प्रारंभ में श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने सामूहिक नवकार मंत्र जाप करवाया।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए संयम पथ के मार्गदर्शक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''दीक्षा आत्मा को संस्कारित करने का विकल्प है। आज तक आत्मा कुसंस्कारों से पीड़ित रही। वे संस्कार रुलाने वाले बने हैं। प्रशंसा पाना, धन कमाना आदि का आत्मकल्याण की दिशा में कोई महत्व नहीं है। हमें स्वयं प्रसन्न रहना है। दूसरे द्वारा प्रशंसा करने से मिलेगा क्या? यदि भीतर प्रशंसा व्याप्त नहीं है तो बाहर की प्रशंसा का कोई मूल्य नहीं है। एक करोड़ के चैक पर हस्ताक्षर नहीं हो तो उस चैक का कोई मूल्य नहीं है। यात्रा हेतु लक्ष्य बनाकर चलना चाहिए। लक्ष्य क्या है? प्रसन्नता प्राप्त करना, समाधि प्राप्त करना। मेरा जीवन शांति, समाधि में रहे, यह इस जीवन का लक्ष्य है। जो सदा प्रसन्नता में रहता है उसके लिए मोक्ष नजदीक है। कषाय करने से प्रसन्नता नहीं मिल पाएगी। क्षमा भाव विकसित करना होगा।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्य तेजस्वी वाणी में फरमाया कि **''साधना अर्थात् समय को सार्थक करना। समय का सर्वश्रेष्ठ नियोजन क्या है? तीर्थंकर भगवान की वाणी में कहें तो क्षण की सार्थकता संवर की आराधना है। संयम दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कार्य है। आत्मा के शिखर तक पहुँचने का मार्ग है संयम। हम भी हिम्मत करके संयम मार्ग की ओर आगे बढ़ें। भाव संयम आत्मधारक होता है। सुराणा परिवार धर्मनिष्ठ परिवार है। इस परिवार से पूर्व में मंगल मुनि जी म.सा. दीक्षित हो चुके हैं और अब सुराणा परिवार की दो वीर बालाएँ संयम पथ को अपनाने हेतु तत्पर हो रही हैं।''**

हे प्रभु मेरी एक पुकार, मैं भी बन जाऊँ अणगार।
छोड़ के सारे पाप अठारह, मैं भी बन जाऊँ अणगार।।

गीत की पंक्तियाँ जैसे ही आचार्य भगवन् के श्रीमुख से उच्चरित हुई सम्पूर्ण सभा आत्मविभोर हो गई।

प्रात: 7 बजकर 3 मिनट पर बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने दीक्षा विधि प्रारंभ की। मुमुक्षु बहनों को दीक्षा की तैयारी हेतु पूछा तो दोनों वीर बहनों ने शीघ्र ही संयम का स्वर्ण पथ प्रदान कर संसार के जंजालों से मुक्ति प्रदान करने का निवेदन किया। वीर सुराणा परिवार, गंगाशहर-भीनासर संघ एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों तथा उपस्थित अपार जनमेदिनी से दीक्षा की स्वीकृति हेतु पूछने पर सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा अनुमोदना का लाभ लिया। मुमुक्षु बहनों ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए सभी से क्षमायाचना की।

आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से सम्पूर्ण पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर तीन करण तीन योग से प्रत्याख्यान करवाकर नवकार महामंत्र के पंचम पद **'नमो लोए सव्वसाहूणं'** पर आरूढ़ किया। सम्पूर्ण सभा जय-जयकार से गूँज उठी। श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री लाघव मुनि जी म.सा. एवं श्री मयंक मुनि जी म.सा. आदि संतों ने *'अहो संयम अहो संयम'* गीत प्रस्तुत कर वातावरण में संयम रस घोल दिया।

परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने जैसे ही नए नामकरण में **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामअंशिका श्री जी म.सा.** एवं **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामस्नेहा श्री जी म.सा.** के नामों की घोषणा की तो पूरी सभा **'राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाट है'**, **'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'** आदि स्वरों से गूँजने लगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) ने केशलुंचन का कार्य संपन्न किया। आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने *'सौंपा चरणों में जीवन सारा'* गीत का संगान कर सभी को भावुक कर दिया।

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने *'रोम-रोम से निकले गुरुवर नाम तुम्हारा'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जिनशासन के चाँद-सितारे आचार्य भगवन् व साधु-साध्वी निरंतर चमक रहे हैं। रामेश शासन में आत्मीयता, विनय, सेवा, वात्सल्य भरपूर हैं। वीर पिता नरेंद्र जी सुराणा ने कहा कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से मेरी ये दोनों सुपुत्रियाँ पावन चरणों में समर्पित हुईं। आगे भी ऐसी कृपा हम सब पर बनी रहे। हम अपने बच्चों को सप्ताह में कम से कम एक बार चारित्रात्माओं के दर्शन अवश्य करवाएँ। संयम शतम में अपना योगदान दें। स्वाध्यायी सेवा देने के लिए भी तत्पर रहें। वीर सुराणा परिवार, दिल्ली/देशनोक ने *'सुराणा री लाडलियां थांनै सौंपी हां, थे सोरा राखजो'* अत्यंत भावपूर्ण गीत गुरुचरणों में प्रस्तुत किया।

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज दीक्षा के पावन प्रसंग पर 41 संत एवं 85 सतियाँजी विराजमान हैं। उनके दर्शन-वंदन करने का लक्ष्य रखें। प्रतिदिन 1 सामायिक, माह में 2 संवर आदि करने सहित कई नियम लोगों ने ग्रहण किए। घर में किसी की दीक्षा की भावना बने तो अंतराय नहीं देने का संकल्प भी कई भाई-बहनों ने लिया।

संघ मंत्री ने *'दीक्षा री छाई है बहार भीनासर नगरी में'* गीत प्रस्तुत करते हुए त्याग-पच्चक्खाण की प्रेरणा की। इस विराट दीक्षा महोत्सव को महेश नाहटा ने अलौकिक, अविस्मरणीय बताया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, आई.पी.एस. दीपा जैन सहित देश-विदेश से हजारों की संख्या में श्रद्धालु भाई-बहनों ने उपस्थित होकर दीक्षा की अनुमोदना की। विराट दीक्षा महोत्सव को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, सकल जैन समाज, गंगाशहर-भीनासर का सराहनीय योगदान रहा। यह दीक्षा महोत्सव त्रिवेणी संगम के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया है।

नकलीपन दिखाने की आदत बहुत खराब है

21 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात: मंगलमय प्रार्थना *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* व *'उठ भोर भई, टुक जाग सही'* गीतों के साथ की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**अपने अवगुणों या दुर्गुणों को छिपाना और गुणों को हाईलाइट करना मार्केटिंग स्ट्रेटेजी है। लेकिन तीर्थंकर भगवान फरमाते हैं कि तुम दुर्गुणों को सामने रखो और सद्गुणों को पीछे रखो। परन्तु हमारा उद्देश्य तो दूसरों को आकर्षित करने, वाहवाही लूटने का रहता है। तुम आलोचना करो, अपने गुणों को प्रकट मत करो। कोई दूसरा मेरे कारण धोखा नहीं खाए। आचार्य भगवन् के जीवन में पारदर्शिता है। उन्होंने माया-कपट के पर्दे को फाड़ डाला है। आमजन की नकलीपन दिखाने की आदत बहुत खराब है, जिसमें पारदर्शिता, शुद्धता, सरलता, स्पष्टता होगी तो वह व्यक्ति लंबी दौड़ में आगे बढ़ता है। जो भीतर से शांत और सरल है उसे भय नहीं है और जो नकली और आर्टिफिशियल है उसे भीतर में भय बना रहेगा। अवगुणों को देखकर उन्हें सतत पुरुषार्थ से निकालना है। दुर्गुणों को छिपाना नहीं हैं, उन्हें मिटाना है। स्वयं की समाधि, शांति और भीतर की प्रसन्नता के लिए।**''

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि मन को वश में करना बहुत दुष्कर है। जो मन को वश में कर लेता है वह मुक्ति का वरण कर लेता है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर मनोविजेता हैं।

वचन से आदमी की पहचान होती है

22 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात: मंगलमय प्रार्थना *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* व *'तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण'* से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए दया व करुणा के साथ कृपानिधान आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''संयम तीन प्रकार का होता है- मन, वचन और काया का संयम। हाथ में संयम, पाँव में संयम, वाणी में संयम। इससे हमारे मन के संयम की झलक मिल सकती है। हमारी बोली हमारे भीतर का चित्रण एवं हमारी उच्चता और नीचता को प्रकट करती है। वचन से आदमी की पहचान हो जाती है। वचन बहुमूल्य रत्न के समान होते हैं। अहंकार की भाषा चुभने वाली होती है। उसमें नम्रता, कोमलता नहीं होती। संयम हमें सभ्यता, संस्कृति की तरफ ले जाने वाला बनाता है।'' *'सुज्ञानी जीवा तज देना विष को उत्तम रीत है'* चौपाई भाग से नई-नई प्रेरणाएँ आचार्य भगवन् ने प्रदान कीं।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि ''**श्रीमद् सूत्रकृतांग सूत्र में भगवान ने फरमाया है कि दु:ख स्वयं के द्वारा कृत हैं। मेरे आसपास की दुनिया मेरे दु:ख की जड़ नहीं है। यदि दु:ख को देखना शुरू कर दें तो हमारे हजारों दु:ख प्रकट हो जाएँगे। मैंने जो किया है उसी का दंड मुझे मिल रहा है। जब कोई घटना घटे तो हमारे मन में दूसरों का चित्र नहीं उभरे। इसका अभ्यास करें।**''

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि कोई भी कार्य करने से पहले हम सोचें व चिंतन जरूर करें। बच्चों को ए-वन बनाना है तो हमें ए-वन बनना पड़ेगा।

महापुरुषों के दर्शनार्थ एवं विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन हेतु विश्व हिंदू परिषद् बीकानेर क्षेत्र के विजय जी कोचर, भंवर जी लिंबा, महावीर जी जैन, दिलीप जी शर्मा, बलदेव जी पंचारिया, जयचंदलाल जी डागा, मेघराज जी बोथरा, हरिकिशन जी व्यास, अशोक जी पड़िहार, जीतू जी, टेगचंद जी बरड़िया आदि उपस्थित हुए।

दूसरों को हीन समझना अहंकार की पहचान है

23 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। भोर की पावन बेला में प्रभु एवं प्रभु भक्ति स्वरूप मंगल प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर के पावन संदेशों से धर्म की राह बताते हुए परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''संयम भीतर पैदा होता है तो जीवन में बदलाव आएगा, अन्यथा जीवन में बदलाव आना मुश्किल है। ज्ञान नहीं पचे तो अहंकार पैदा होता है। ज्ञान का एक्शन आत्मा को शक्तिशाली बनाता है और ज्ञान का रिएक्शन अहंकार बढ़ाता है। उससे आत्मा कमजोर होगी। श्रुत का लाभ हो तो ज्ञान, जाति, आचरण, बुद्धि, तपस्या का गर्व नहीं होगा। गर्व किसी बात का नहीं करना चाहिए। गर्व का परिणाम हमें कितने भवों तक रुलाएगा, इसका पता ही नहीं है। दूसरों को हीन समझना अहंकार की पहचान है। दूसरों के दुर्गुण, कमजोरी को देखकर अहंकार जिंदा रहता है। हमारी आँख गुण की है या अवगुण की? हमारा मन क्या देखता है? ऊँचाइयाँ या गिरावट, बुराइयाँ या अच्छाइयाँ? हमें अपना सुधार करना चाहिए।

दूसरों को सुधारने की जिम्मेदारी हमारी है ही नहीं। सिर्फ कर्तव्य दृष्टि का पालन करें। इससे सामने वाले का भला हो तो अच्छा और नहीं हो तो हमारा कुछ बिगड़ा नहीं। अब मुझे क्रोध नहीं करना है। क्रोध छोटा भी है तो छोटा नहीं समझना। क्रोध को पनपने देंगे तो एक दिन बड़ा रूप ले लेगा। हम अपने दुर्गुणों को देखें और एक दुर्गुण हटाने का प्रयत्न कर दिया तो हमारा जीवन बदलना शुरू हो जाएगा।''

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार का सुख सच्चा सुख नहीं है। संयम में सच्चा सुख है। संयम भाव से जीवन की दशा और दिशा बदल जाएगी। पहले जीवन से गलत सोच निकालें।

परम गुरुभक्त कुंदनमल जी मिन्नी, भीनासर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. के 26 उपवास की घोषणा जैसे ही आचार्य भगवन् ने की सम्पूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी। सप्ताह में एक उपवास करने का नियम महावीर जी मिन्नी ने लिया। आज क्रोध नहीं करने का नियम सभा में उपस्थित सैकड़ों भाई-बहनों ने लिया।

सुख, संतोष में है

24 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। पक्षियों के मधुर कलरव के साथ उदित सूर्य की साक्षी में प्रात:कालीन प्रार्थना से जीवन धन्य बनाने के पश्चात् प्रवचन स्थल पर चतुर्विध संघ की उपस्थिति में विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। इस धर्मसभा में नमस्कार का महत्व प्रतिपादित करते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''जिसका मन सदा धर्म में लगा रहता है उसको देवता भी नमस्कार करते हैं। जहाँ वंदना को मान और प्रतिष्ठा का हेतु बना लेते हैं वहाँ वंदना करने वाला तो तिर जाता है, लेकिन जिसको वंदना की जाती है वह नहीं तिरता है। मुनि को विचार करना चाहिए कि मेरा लक्ष्य आत्मा को तारना है। मान-प्रतिष्ठा से ऊपर उठने से आत्मा का उत्थान होगा। हम अपने आप में संतुष्ट बनें। संतुष्टि कब मिलेगी? जब अपने आप में ही संतुष्ट रहेंगे। दूसरे से तुलना नहीं करना कि मेरे पास उसके जितना धन आ जाए तो संतुष्टि हो जाए। इसका कोई मापदंड नहीं है। सुख, संतोष में है जितना सोने से लगाव है उतना अन्न से नहीं है। धन से कोई सुखी नहीं हुआ है और न होगा। श्रावक संतुष्ट होता है और संतोषी होता है। आनंद श्रावक ने नियम ले लिया था कि जितना है उतने से आगे धन नहीं बढ़ाना। मेरे दु:ख का कारण मैं ही हूँ। मैं अहंकारी हूँ। बात-बात में दूसरों से झगड़ लेता हूँ। हमारी नजर सही हो जाए तो सब सही हो जाए। जीवन का अमृत वात्सल्य व क्षमा है। क्षमा और समभाव से जीवन आनंद से भर जाता है। व्यक्ति गुस्सा करता है तो एक पाउंड खून जल जाता है। अत: गुस्से का सदासर्वदा के लिए त्याग करें।''

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अभयदान दानों में सबसे बड़ा दान है। इस दान को एकमात्र मुनि ही संपूर्ण रूप से दे सकता है। श्रावक सबसे उत्कृष्ट दान सुपात्रदान दे सकता है। सुपात्रदान देने में अहोभाव होना चाहिए।

आर.एस.एस. के गंगाशहर-भीनासर क्षेत्र के प्रमुख पदाधिकारी एवं सदस्यों ने गुरुदर्शन का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। विभिन्न तप-त्याग के पच्चक्खाण हुए। शासन दीपिका साध्वी श्री कृतज्ञा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

धर्म-गुरु, दृष्टि देते हैं

25 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति का अद्भुत नजारा देखने को मिल रहा है। आराध्य देव आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। विद्यापीठ के विशाल प्रांगण में प्रवचन श्रवण करने हेतु श्राविका-श्राविकाओं सहित आबाल-वृद्धों की उपस्थिति देखते ही बनती है। लगभग सभी श्रावकों ने सामायिक वेशभूषा में एवं श्राविकाएँ ने महिला समिति की केशरिया गणवेश में गुरुचरणों में उपस्थित होकर भगवान महावीर की अमृतवाणी श्रवण करने का लाभ लिया। प्रवचन के समय उपस्थित होने वाले अद्भुत दृश्य का पावन दर्शन जिस किसी ने भी किया है, वो अपने आपको धन्य-धन्य मान रहा है।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में भक्त और भगवान के बीच की कड़ी जोड़ते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**गुरु अनेक प्रकार के हैं। कोई विद्या गुरु, कोई कला गुरु। आज की दुनिया में गुरुओं की कमी नहीं है। यह विभिन्न गुरुओं से भरी हुई है। दुनिया में जितने भी धर्म गुरु हैं वे हमें दृष्टि देते हैं, जिससे हमारा जीवन बदलता है। गुरु हमें नजर देते हैं और भीतर के सोचने के तरीकों को बदलते हैं। जीवन क्या चीज है? हमारे साथ कैसा हो रहा है इससे जीवन नहीं बनता। हमारे में क्या हो रहा है ये बड़ी तात्विक बात है। हमारा जीवन एक्शन का परिणाम नहीं रिएक्शन का परिणाम है। आत्मा लापरवाही करती है तो मोह को मौका मिल जाता है। हमारे साथ क्या हो रहा है इसकी चिंता न करना। हमारे में क्या हो रहा है इसका चिंतन करना। इससे हमारा विकास होगा।**''

श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने अपने भावोद्‌गार में फरमाया कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनय को बढ़ाते रहना चाहिए। अरिहंत भगवान, गुरु भगवन्, उपाध्याय प्रवर की विनय-भक्ति करने से तीर्थंकर गोत्र बांधा जा सकता है। गुरु और गुरूर एक साथ नहीं रह सकते। गुरूर को खत्म करने के लिए गुरु की शरण में आना पड़ता है। हमारी साधना कुछ पाने के लिए नहीं अपितु सब कुछ खोने के लिए होनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री कृतज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का गुरुचरणों में पधारना हुआ। नीदरलैंड, यूरोप, एम्सटर्डम से आगत परम गुरुभक्त अरिहंत जी बोथरा, तृप्ति जी बोथरा ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

बिना पुरुषार्थ के उपलब्धि नहीं

26 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात:काल दिन का शुभारंभ प्रभु एवं गुरुभक्ति भजनों का प्रार्थना में संगान कर किया गया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी अमृतदेशना में गुरु महिमा का प्रतिपादन करते हुए फरमाया कि ''**गुरु का उपदेश हमें सच्चे सुख का रास्ता बताता है। उसे प्राप्त करना असंभव नहीं है। दुषमा आरे में रहने वाला अपूर्व सुख का अनुभव करने में समर्थ है। सुख की झंकार चल रही है। उन सभी का रस आत्मसात् करना भीतर की शक्ति के बलबूते की बात है। आज भी महान सुख का अनुभव करना संभव है। बिना पुरुषार्थ के उपलब्धि नहीं होती। जितनी ऊँचाइयाँ उतना ही संघर्ष। भीतर के सुखों को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता है। आत्मा का स्वभाव सिद्धत्व का है। साधना में त्राटक विधि होती है। दृश्य त्राटक, ध्वनि त्राटक। अभ्यास करो तो कोलाहल के बीच भी आवाज सुन सकते हैं। ब्रह्मचर्य वह अमृत तत्व है, जिससे तीक्ष्ण दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्मचर्य की साधना आत्मा में प्रवेश करने की साधना है।**''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने *'जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में'* गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संयम जीवन में आत्मरमण करेंगे तो सुख-समाधि की प्राप्ति होगी। हमें संसार में उलझना नहीं अपितु सुलझना है। ब्रह्मचर्य सर्वश्रेष्ठ है। इंद्रियों के प्रति जब आसक्ति घटेगी तब ब्रह्मचर्य का पालन होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने *'धन्य जिनवाणी गुरुवर'* एवं साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री जागृति श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रियता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने *'जिनवाणी रो मेह बरसावण उपाध्याय जी पधारिया हो'* गीत प्रस्तुत कर सभी को आनंद विभोर कर दिया। साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. के त्रि-मासखमण तप के उपलक्ष्य में विभिन्न सुसंकल्प हुए। भोजन करते समय ऊपर से नमक न लेने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। गंगाशहर एवं बीकानेर निवासी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, जैन महासभा-बीकानेर के अध्यक्ष विनोद जी बाफना, महामंत्री मेघराज जी बोथरा, सी.ए. इंदरमल जी सुराणा, चंपकमल जी सुराणा सहित अनेक प्रबुद्धजनों ने महापुरुषों के दर्शन कर सेवा का लाभ लिया।

गुरु-आज्ञा अविचारणीय होती है

27 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। रविवार के पावन प्रसंग पर समता शाखा में समता आराधना करने हेतु प्रात:काल से ही हजारों चरण स्थानक की ओर अग्रसर हो रहे थे। हर कोई आचार्य प्रवर द्वारा फरमाए गए इस विशेष आयाम के आयोजन में उपस्थित होकर आचार्य भगवन् के सान्निध्य में समता आराधना कर अपना जीवन धन्य बनाने का आतुर नजर आ रहा था। सभी ने एक साथ समता शाखा की आराधना कर धर्म की अंतर्गूंज का अनुभव किया। आचार्य भगवन् ने कृपावर्षण करते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया।

जवाहर विद्यापीठ के विशाल प्रांगण में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी के लिए आज यह प्रांगण छोटा प्रतीत हो रहा था। लोग दूर तक बैठ पूर्ण तन्मयता के साथ गुरुमुख से अमृतवाणी का लाभ ले रहे थे। प्रशांतमना, परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपने श्रीमुख से दिव्यवचनों में जन-जन का जीवन उत्कर्ष की ओर अग्रसर करते हुए फरमाया कि ''संयम आत्मा की उत्कृष्ट साधना है। 22 तीर्थंकरों के समय कोई निश्चित पौशाक नहीं थी। किसी भी रंग का वस्त्र पहना जा सकता था। संयम में वेश की सुंदरता नहीं देखी जाती है। संयम की सुंदरता होनी चाहिए। पौशाक केवल संयम की उपयोगिता के लिए है। 10 प्रकार का यति धर्म संयम का प्रतीक है। उससे संयम के फूल खिलेंगे। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि तत्व संयम से विजातीय तत्व हैं। इनसे बचना है। इन पर रोक लगाने की आवश्यकता है। अगर रोक नहीं लगाएंगे तो खतरा है। मान अधम गति की ओर ले जाता है। मान का प्रभाव चलेगा तो सद्गति नहीं होगी। मानी, अभिमानी का मनोबल कभी मजबूत नहीं होगा। मान से विनय दूर हो जाता है। विनय से जो आनंद आता है वह मान से कभी नहीं आता है। जिसको झुकना नहीं आता वो कभी आनंद नहीं ले पाएगा। इंद्रभूति गौतम बड़े विद्वान थे। ज्ञान का गर्व और घमण्ड भी था कि मेरे जैसा दूसरा विद्वान मिलना भी मुश्किल है। भगवान महावीर से बोध पाने के बाद वे समर्पित हो गए। भगवान की आज्ञा को धर्म मान लिया और चिंतन किया कि अपना कुछ भी नहीं है। गुरु-आज्ञा अविचारणीय है। साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. के आज 30 की तपस्या है। वे आज्ञा शिरोधार्य करके चलने वाली साध्वी हैं। पिछली बार सान्निध्य में रखना था, पर अन्यत्र भेजना पड़ा तो भी कोई शिकायत नहीं। इनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। संयम सिद्धि को दिलाने वाला है।

जीवन के आँगन में बाग खिलाना है।'' चौपाई के माध्यम से समभाव की साधना की प्रेरणा आचार्य भगवन् ने दी।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने *'जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में'* संयम गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है। इसमें तप, संयम में विशेष पुरुषार्थ करना चाहिए। अप्रमत्त साधना की ओर कदम बढ़ाएं।

साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. की काया दुबली-पतली है। इस भीषण गर्मी में मासखमण तपस्या कर म.सा. ने अपनी आत्मा को भावित कर शासन का गौरव बढ़ाया है। *'तपस्या पावन करती है, तपस्या मन को हरती है'* भाव गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. ने तेला, अठाई, पंद्रह, एक साल तक एकांतर तप, बेले-बेले की तपस्या कर गुरुकृपा से जीवन को तपमय बना लिया है। संघ मंत्री ने *'तपस्या की छाई है बहार'* गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. के मासखमण तप के उपलक्ष्य में तपस्या, त्याग-प्रत्याख्यान कर भाई-बहनों ने तप की अनुमोदना की।

परम गुरुभक्त विनीत जी गांग, जावद इस तपती धूप में 550 कि.मी. की गुरुदर्शन पदयात्रा कर गुरुचरणों में उपस्थित हुए। श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगाशहर-भीनासर द्वारा उनका आत्मीय बहुमान किया गया। पक्खी प्रतिक्रमण में भाइयों में 513 एवं बहनों में 988 प्रतिक्रमण हुए।

इच्छा और परिग्रह का बढ़ना दुःख है

28 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। *'श्री राम गुरु गुण गाना है'* एवं *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* गीतों की मधुर स्वरलहरी के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति का आनंद लिया। तत्पश्चात् चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आयोजित विशाल धर्मसभा को धर्म के मर्म से पावन करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु भव्य जीवों को पार लगाने वाले होते हैं। गुरु, इच्छा करने वालों की इच्छाओं का छेदन करने वाले होते हैं। हमारे सारे दुःखों का केन्द्र बिन्दु इच्छाओं की पैदाइश एवं आकर्षण व इच्छा पूर्ति के लिए प्रयत्न करना है। इच्छा पूरी होने पर खुशी, इच्छा पूरी न होने पर दुःख। एक इच्छा की पूर्ति होने पर दूसरी इच्छा की पैदाइश। हमारे सारे दुःख इसी से जुड़े हुए हैं। बहुत कम लोग इच्छा को जीतने वाले होते हैं, ज्यादातर तो इच्छा पूर्ति करने वाले होते हैं। इच्छाओं का बढ़ना यानी परिग्रह का बढ़ना। परिग्रह पकड़ है, मूर्च्छा है, आसक्ति है। परिग्रह का त्याग इच्छाओं का त्याग है। इच्छा और परिग्रह का बढ़ना दुःख है। इच्छा, परिग्रह का कम होना सुख है। ज्ञान तब तक पंगु है जब तक आचरण की गति नहीं मिलती। भीतर की मजबूती से ज्यादा दिखावा कम होना चाहिए। क्या मैं जीवनभर इच्छाओं की पूर्ति के लिए दौड़ता रहूंगा? यह प्रश्न स्वयं से पूछना चाहिए। इच्छाओं की अंधी दौड़ में दौड़ता हुआ जीवन कभी सुखी नहीं हो सकता। जितनी बड़ी इच्छा, उतना बड़ा दुःख। दुःखों के पहाड़ को पार करना चाहते हैं तो इच्छाओं को पार करना होगा।''**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार में फँसाने का कार्य अधिकांश माता-पिता करते हैं। विरले माता-पिता ही संयम मार्ग में अपनी संतानों को आगे बढ़ाते हैं। दीक्षा में अंतराय नहीं देना चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। **मुमुक्षु लीलमचंद जी सुराना**, धमतरी, **मुमुक्षु गौरव जी नाहटा**, रोड़ अतरिया, **मुमुक्षु प्रियंका जी सेठिया**, दिल्ली एवं **मुमुक्षु मुस्कान जी सेठिया**, दिल्ली सभा में शोभायमान थे।

आज्ञा में ही धर्म है

29 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात:कालीन दैनंदिनी के अनुसार प्रार्थना में *'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'* एवं *'तपोनिधि राजेश मुनि की जय'* भक्ति गीत प्रस्फुटित हुए। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया

भगवान महावीर के पावन उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से आयोजित प्रवचन सभा में परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "**'आणाए मामगं धम्मं'** अर्थात् मेरा धर्म आज्ञा में है। माता-पिता की आज्ञा का पालन करना लौकिक धर्म हो सकता है, किंतु लोकोत्तर नहीं। तीर्थंकरों की आज्ञा के अनुरूप धर्म है। धर्म के नाम पर हिंसा भी हिंसा ही रहेगी। भगवान की आज्ञा धर्म के संवर में है। आत्मा को कोई रोक नहीं सकता। चारों तरफ से पैक कर देने पर भी आत्मा बाहर निकल जाएगी। भगवान के रास्ते पर चलते रहोगे तो आगे का रास्ता खुलता जाएगा और मंजिल मिल जाएगी। **'मैं कौन हूँ और मुझे कहाँ जाना है'** बस यही हमारे ध्यान में रहना चाहिए। विरले होते हैं जो कीचड़ से कमल की तरह खिलते हुए निकलते हैं। भगवान की आज्ञा में सदैव चलते रहो। भगवान की आज्ञा में चलकर सारे कर्मों का घात करके शुद्ध, बुद्ध और मुक्त बनो।" दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प सभा में उपस्थित हजारों लोगों ने लिया।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने *'इस दुखिया संसार में सब उलझन ही उलझन है'* संयम गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि वो बुद्धि किस काम की, जिससे जन्म-मरण बढ़ता रहे। शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहन सुश्री प्रियंका जी सेठिया, गंगाशहर ने सुंदर भाव समर्पित किये। धर्मपरायणा प्रेम बाई चिप्पड़, प्रतापगढ़ के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर शांति व संदेश प्राप्त किया। सभा में मुमुक्षु भाई-बहनों व परिजनों तथा देश-विदेश से आए हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

मुमुक्षु भाई-बहनों का शानदार अभिनंदन एवं वरघोड़ा

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण।
धन्य-धन्य कह रहा है हर मन।।

सांसारिक वैभव, आधुनिक सुख-सुविधाओं, घर-परिवार आदि सबका मोह छोड़कर त्यागमय वैराग्य का पथ अपनाने वाले मुमुक्षु भाई-बहनों का शानदार अभिनंदन व वरघोड़ा श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता युवा संघ, समता बालिका मंडल, जैन सभा एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन व दोनों सहयोगी शाखाओं सहित आरुग्गबोहिलाभं आदि अन्य अनेक संघों व संस्थाओं द्वारा किया गया। बाँठिया पैलेस में आयोजित भव्य समारोह का शुभारंभ समता बहू मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत गीत समता महिला मंडल ने प्रस्तुत किया। स्वागत उद्बोधन में स्थानीय संघ अध्यक्ष ने कहा कि महापुरुषों की कृपा से हमारे गंगाशहर-भीनासर संघ को अक्षय संयम महोत्सव का पावन अवसर प्राप्त हुआ। दीक्षार्थी भाई-बहन व परिजन बधाई के पात्र हैं, जो जिनशासन एवं आचार्य श्री रामेश की गौरव गरिमा में चार चांद लगा रहे हैं। अभिनंदन पत्र का पठन संघ सुश्रावक ने किया। मुमुक्षु भाई-बहनों का परिचय एवं आचार्य भगवन् के अतिशय का प्रस्तुतिकरण महेश नाहटा ने किया।

मुमुक्षु भाइयों ने अपने भावोद्‌गार में कहा कि संसार छोड़ने योग्य, संयम लेने योग्य एवं मोक्ष प्राप्त करने योग्य

है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की निर्मल संयम साधना से प्रभावित होकर हम इस संयम मार्ग वीतराग पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। जिन-आज्ञा और गुरु-आज्ञा का हम सदैव पालन करेंगे। सभी के उपकारों के प्रति हम कृतज्ञ हैं। अपनी संतानों को आरुग्गबोहिलाभं एवं अभिमोक्षम् शिविर आदि में भेजने का लक्ष्य रखें।

मुमुक्षु भाई लीलमचंद जी सुराना एवं **मुमुक्षु भाई गौरव जी नाहटा** का स्वागत-बहुमान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं उपस्थित अन्य पदाधिकारियों ने तिलक, माला, शॉल एवं अभिनंदन भेंट कर किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मुमुक्षु आत्माओं के उज्ज्वल संयमी जीवन की मंगलकामना की।

संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे।
गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए।

संयम गीत की स्वरलहरी से सम्पूर्ण सभा गूंज उठी। महिला मंडल अध्यक्ष ने कहा कि सिंह की भाँति दीक्षा लेकर सिंह की तरह ही पूर्ण वीरता से पालना। समता बालिका मंडल गंगाशहर-भीनासर ने संयम भावों से ओत-प्रोत संवाद नाटिका प्रस्तुत की। देश के अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने बहुमान सभा में उपस्थित होकर गौरव बढ़ाया। सभी सम्प्रदाय के प्रमुखों ने मुमुक्षुओं का आत्मीय बहुमान किया।

मुमुक्षु लीलमचंद जी सुराना, **मुमुक्षु गौरव जी नाहटा**, **मुमुक्षु मुस्कान जी सेठिया** का भव्य वरघोड़ा श्री जैन जवाहर विद्यापीठ से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए पुनः विद्यापीठ पहुँचा। मुमुक्षु भाई-बहन आकर्षक रथों में सवार होकर हाथ जोड़े हुए सभी का अभिवादन स्वीकार रहे थे। मार्ग में अनेक स्थानों पर दीक्षार्थी भाई-बहनों के आदर्श त्याग को देखकर जनता अचंभित होते हुए गुरु अतिशय के आगे नतमस्तक हो रही थी। सम्पूर्ण मार्ग **'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की'**, **'जग में सुंदर दो ये नाम, जय गुरु नाना जय गुरु राम'**, **'संयम जीवन सार है, बाकी सब बेकार है'** सहित अनेकानेक जयकारों व नारों से गूंज रहा था। ओघा बँधाई कार्यक्रम भी नवकार जाप एवं भक्ति गीतों के साथ सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन तेले की लड़ी गतिमान है।

'अक्षय संयम महोत्सव' के अंतर्गत
6 जैन भागवती दीक्षाएँ सम्पन्न

गुरुचरण शरण में मुझे वास चाहिए
मुझे नाम और गुरु दोनों राम चाहिए

मुमुक्षु रेखा जी सोनावत (39 वर्ष), मुमुक्षु मयंक जी सोनावत (15 वर्ष) एवं मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत (13 वर्ष) की जैन भागवती दीक्षा 4 जून को बीकानेर के लिए आगारों सहित घोषित

114 वर्षीतप पारणे संपन्न, कतिपय चातुर्मासों की घोषणा

इस अवसर पर 41 + 2 नवदीक्षित कुल 43 साधु जी एवं 85 + 4 नवदीक्षित कुल 89 साध्वी जी सहित 132 ठाणा की उपस्थिति का नवीन कीर्तिमान स्थापित

30 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। गुरुकृपा से त्रिवेणी संघ- गंगाशहर-भीनासर-बीकानेर क्षेत्र अक्षय संयम महोत्सव प्राप्त कर निहाल हो गया। चतुर्विध संघ का ठाट, दीक्षा का ठाट व

तपस्या का ठाट बस देखते ही बनता था। पूर्व में 4 दीक्षाएँ घोषित थी और सम्पन्न हुई 6 दीक्षाएँ। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के इस अद्भुत अतिशय को देखकर जनता आश्चर्यचकित हो नतमस्तक हो गई। अक्षय तृतीया पर 114 वर्षीतप पारणे सम्पन्न हुए। भीनासर/हैदराबाद निवासी **मुमुक्षु बहन रेखा जी सोनावत** धर्मपत्नी विनीत जी सोनावत, **मुमुक्षु मयंक जी सोनावत** सुपुत्र विनीत जी सोनावत, **मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत** सुपुत्र विनीत जी सोनावत की जैन भागवती दीक्षा **4 जून 2025** को **बीकानेर** के लिए जैसे ही घोषित हुई, सम्पूर्ण सभा **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है'** आदि संयमीय जयनादों से गूँज उठी। इसी बीच श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास उदयरामसर, साध्वी श्री ज्योतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास जेठाना के लिए फरमाया गया।

परम कृपालु, दयानिधान, सिरीवाल प्रतिबोधक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 58 वर्षीय **मुमुक्षु लीलमचंद सुराना** जी सुपुत्र श्री नेमीचंद जी-जनक बाई सुराना, धमतरी, 16 वर्षीय **मुमुक्षु गौरव जी नाहटा** सुपुत्र प्रमिला देवी-दिलीप जी नाहटा, रोड अतरिया, 27 वर्षीय **मुमुक्षु प्रियंका जी सेठिया** सुपुत्री दीपक जी-बसंती देवी सेठिया, गंगाशहर-भीनासर, 25 वर्षीय **मुमुक्षु मुस्कान जी सेठिया** सुपुत्री विजय जी-नीता जी सेठिया, गंगाशहर-भीनासर/कोलकाता की जैन भागवती दीक्षा पूर्व में घोषित थी। चारों ही मुमुक्षु आत्माओं का विशाल सभा प्रांगण में जय-जयकारों के साथ आगमन हुआ। थोड़ी ही देर में जैसे ही तत्काल दीक्षा लेने हेतु दो मुमुक्षु आत्माओं 28 वर्षीय **मुमुक्षु निकिता जी संकलेचा** सुपुत्री मैना देवी-भंवरलाल जी संकलेचा, बेरला-सेमरा एवं 22 वर्षीय **मुमुक्षु श्रुति जी गांधी** सुपुत्री प्रवीण जी-जयश्री जी गांधी, सूरत-देवगढ़ का सभा में धवल वस्त्र धारण कर पदार्पण हुआ। जनता संयम भावों से परिपूरित हो गई। हर कोई इनके दृढ़ संयम भावों को नमन करते हुए जय-जयकार कर अपने आपको पावन करने लगा। इस प्रकार देखते ही देखते 4 के स्थान पर 6 दीक्षाएँ संपन्न होने की ओर अग्रसर थी।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-41 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा 85 सभा में शोभायमान थे। कुल 126 चारित्रात्माओं की नयनाभिराम उपस्थिति श्रावक-श्राविकाओं को गद्गद् कर रही थी। हर कोई एक साथ इन सभी चारित्रात्माओं के दर्शन कर अपने आपको धन्यातिधन्य मान रहा था। यह अद्भुत नजारा जिसने भी देखा वह अभिभूत हो गया।

प्रारंभ में श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने 14 पूर्वों का सार महामंत्र नवकार का सामूहिक जाप करवाया। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने प्रात: 6:40 बजे उपस्थित सभी मुमुक्षुओं की दीक्षा विधि प्रारंभ की। सर्वप्रथम दीक्षार्थी भाई-बहनों ने दीक्षा की तैयारी के बारे में पूछने पर सभी मुमुक्षुओं ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से शीघ्र चरणों में स्थान देने का निवेदन किया। तत्पश्चात् संघ पदाधिकारियों, सदस्यों एवं उपस्थित जनसमूह से दीक्षा की आज्ञा हेतु पृच्छा पर सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा की पूर्ण अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा के पावन प्रसंग का लाभ लिया। मुमुक्षुओं ने जान-अनजाने में हुई भूलों के लिए चतुर्विध संघ से क्षमायाचना की।

आचार्य भगवन् ने प्रात: 6:51 बजे तीन बार करेमि भंते के पाठ से मुमुक्षु भाई-बहनों को सम्पूर्ण सावद्य योगों, पापकारी क्रियाओं का तीन करण तीन योग से त्याग करवाकर नवकार महामंत्र के पंचम पद **'नमो लोए सव्वसाहूणं'** पर आरूढ़ किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने नवीन नामकरण इस प्रकार घोषित किया –

- **मुमुक्षु श्री लीलमचंद जी सुराणा.................. नवदीक्षित संत श्री रामलयन मुनि जी म.सा.**
- **मुमुक्षु श्री गौरव जी नाहटा......................... नवदीक्षित संत श्री रामगिरी मुनि जी म.सा.**
- **मुमुक्षु सुश्री निकिता जी संकलेचा................ नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनीति श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु सुश्री प्रियंका जी सेठिया.................... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रीति श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु सुश्री मुस्कान जी सेठिया.................... नवदीक्षिता साध्वी श्री राममति श्री जी म.सा.**
- **मुमुक्षु सुश्री श्रुति जी गांधी......................... नवदीक्षिता साध्वी श्री रामस्मृति श्री जी म.सा.**

नामकरण की घोषणा के साथ ही सभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने जय-जयकारों के साथ संयम की पूर्ण अनुमोदना की। *'जयवंता-जयवंता'* गीत की स्वरलहरी से सभी ने अपने मन को पावन किया। नवदीक्षित संतों के केशलुंचन का कार्य परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर तथा नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं के केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विशाल सभा को संबोधित करते हुए युगनिर्माता, अहिंसा के पक्षधर परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''एक वर्ष तक ऋषभ भगवान भिक्षा के लिए भटकते रहे परंतु धैर्य में कोई कमी नहीं आई। मैं अपने धैर्य का त्याग नहीं करूँगा, चाहे कैसी भी परिस्थिति आ जाए। धैर्य टिका रहेगा तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी। ऋषभ भगवान का जीवन चरित्र सुनना सरस लगता है। साधु को निर्दोष आहार ही लेना चाहिए। **जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन।** अक्षय तृतीया आत्मकल्याण के लिए अबूझ मुहूर्त हो गया है। श्रेयांस कुमार के हाथों से ऋषभदेव भगवान का पारणा इक्षुरस से संपन्न हुआ। अक्षय तृतीया भगावन के पारणे से अमर हो गया। 18 पापों का त्याग करने से जीव हलका हो जाता है। संयम में 18 पापों का त्याग होता है। भव्यात्माएँ संयम पथ पर अग्रसर होती हैं।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपने ओजस्वी अमृतवाणी में फरमाया कि ''**सुख की अभिलाषा सभी जीवों को होती है। असली सुख की पहचान करने की भूल व्यक्ति को पतन की तरफ ले जाती है। सच्चा सुख, शुद्ध आत्मा का सुख संयम है। संयम यानी चंचल मन को शांति और समाधि देना है। सच्ची दिशा में आगे बढ़ना संयम है। गुरु का उपदेश आत्मकल्याण के लिए है। बाहर के सुखों से दूर हटना संयम है। सांसारिक सुख नाशवान है।**''

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज रामेश शासन में 101 संत एवं 330 सतियाँ जी, कुल 431 दीक्षाएँ युवाचार्य बनने के बाद आचार्य भगवन् के मुखारविंद से हुई हैं। संयम शतम में 100 में से 58 दीक्षाएँ संपन्न हो चुकी हैं। रामेश शासन में कई कीर्तिमानों का आपने उल्लेख किया। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना की महिमा का बखान किया। मुमुक्षुओं का जीवन परिचय आपश्री जी ने दिया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार बंधन है। आत्मा इन बंधनों से मुक्त होना चाहती है। स्वतंत्रता सबका मन चाहता है। इस दिशा में भागीरथी पुरुषार्थ की जरूरत है। अभी वर्तमान में रामेश शासन में 86 संत एवं 415 सतियाँ जी, कुल 501 संत-सतियाँ जी जिनशासन को दैदीप्यमान कर रहे हैं।

आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने *'अरिहंतों की वाणी की साची लागी है, सिद्ध प्रभु से मिलने की चाहत जागी है'* गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री लाघव मुनि जी म.सा. आदि संतों ने *'धन्य है वो पल दिवस और वो घड़ी संयमी बना जाऊँ'* संयम गीत फरमाया।

साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा., साध्वी श्री जितयशा जी म.सा., साध्वी श्री जागृति श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने *'देते गुरु राम को आज बधाई, संयम की बजी आज शहनाई'* सुंदर बधाई गीत प्रस्तुत किया।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने *'नाता जोड़ लिया, गुरु से नाता जोड़ लिया'* गीत प्रस्तुत कर वीर पिता की भूमिका पर प्रभावी प्रकाश डालते हुए फरमाया कि दीपक जी ने दीक्षा के लिए कभी मना नहीं किया।

साध्वी श्री रामकेतु श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संसार का सुख क्षणिक है और संयम का सुख शाश्वत है। बेगूँ में आचार्य भगवन् के छठे आरे का वर्णन सुनकर मुझे संसार असार लगने लगा।

साध्वी श्री भवपार श्री जी म.सा. ने फरमाया कि संयम लेकर ही सिद्ध बना जा सकता है।

नीता जी सेठिया ने कहा था कि मेरा इच्छा थी कि मेरी कोई संतान दीक्षा ले। एक बार में ही आज्ञा दे दी। जब हमारी डोर गुरुचरणों में है तब ही हम ऊँचाई को प्राप्त कर सकते हैं।

साध्वी श्री सुविराज श्री जी म.सा. ने ब्यावर के दीक्षा प्रसंगों का उल्लेख करते हुए गुरु महिमा का जिक्र किया।

साध्वी श्री जयामि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि मेरा ये परिवार 7 स्टार नहीं, मल्टीस्टार है। गुरु के हाथ अपनी संतानों को सौंपने वाले ही सच्चे माता-पिता हैं, सच्ची गुरु सर्मपणा है। 25 साल तक पाला-पोसा, बड़ा किया, अब कह रहा है कि दीक्षा लेनी है। क्या इससे पैरों तले जमीन रहेगी? लेकिन दीपक जी ने कहा कि बेटा! तूने मेरा सपना पूरा कर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री गुणसुंदरी जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री ललिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया जी म.सा., साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति एवं बधाई गीत प्रस्तुत किए।

मुमुक्षु भाइयों ने *'दुर्लभ चरण शरण में मुझे वास चाहिए, मुझे नाम और गुरु दोनों राम चाहिए'* गीत प्रस्तुत किया। मुमुक्षु बहनों ने *'संयम की महिमा क्या है, जी करके दिखा देना'* गीत प्रस्तुत किया।

सभा का संयोजन करते हुए संघ मंत्री ने अक्षय संयम महोत्सव में 114 वर्षीतप आराधक भाई-बहनों के नाम का उल्लेख किया। पूरी सभा हर्ष-हष, जय-जय की ध्वनि से गूँज उठी। महेश नाहटा ने मुमुक्षु एवं तपस्वी आत्माओं से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। अनेक भाई-बहनों ने आगे भी वर्षीतप जारी रखने का संकल्प किया। दीक्षा की अनुमोदना में, दीक्षा में अंतराय नहीं देने तथा अपनी संतानों को **'अभिमोक्षम् 2.0'** शिविर में भेजने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। बाँठिया पैलेस में वर्षीतप आराधक भाई-बहनों का बहुमान श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन संघ, गंगाशहर-भीनासर एवं अन्य कई संस्थाओं द्वारा किया गया। पारणे सानंद संपन्न हुए।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, गंगाशहर-भीनासर आदि की धर्मनिष्ठा, सेवाभक्ति सराहनीय रही। **'अक्षय संयम महोत्सव'** इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया है।

आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं अन्य चारित्रात्माओं का **बीकानेर** में **18 मई से 3 जून** तक **'अभिमोक्षम् 2.0'** शिविर एवं **4 जून** को बीकानेर में ही आयोजित दीक्षा महोत्सव में पधारना संभावित है। पूरे बीकानेर-मारवाड़ अंचल में अपूर्व हर्षोल्लास का वातावरण है।

तपस्या सूची

साधु-साध्वी वर्ग

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. - तेला
साध्वी श्री रामध्वनि श्री जी म.सा. - 30 उपवास (मासखमण)

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	वीर पिता नरेंद्र जी वीर माता जयश्री जी सुराणा-दिल्ली, सुगनचंद जी पुगलिया-चेन्नई/भीनासर, बाबूलाल जी बोथरा, आसकरण जी माली, ओम जी सेठिया, कमल जी लूणिया, राजू जी बाँठिया, विजय जी बैद, सुरेंद्र जी बैद, विनोद जी सेठिया, महेंद्र जी डागा, सुरेंद्र जी डागा-इस्लामपुर, शिखरचंद जी किरण देवी सेठिया, सरोज जी सेठिया, मांगीलाल जी जैन, जयचंद जी सेठिया-झझ्रू, नरेंद्र जी विनोद देवी संकलेचा-नागौर, देवचंद जी पींचा, महेंद्र जी डागा, अनिल जी चोरड़िया, कन्हैयालाल जी सुराणा, गणेशमल जी सांड, मैना देवी बरड़िया, कमल जी लूणिया, मांगीलाल जी खाबिया, पांचीलाल जी सेठिया-बेंगलुरु, शिखरचंद जी विमला देवी सिपाणी-गंगाशहर, धनपत जी कोठारी-बीकानेर, शांतिलाल जी निर्मला देवी सेठिया-लुधियाना, दिनेश जी सोनी जयपुर, शुभकरण जी चंदा देवी कातेला, किरण जी जतन जी सिपानी, केवलचंद जी नाहटा-रोड अतरिया, ताराचंद जी लीला देवी सेठिया
उपवास	विजय कुमार जी सांड-देशनोक - **15 उपवास में मासखमण के प्रत्याख्यान**, **21 -** झमकु बाई भूरा, **15 -** वीर पिता हनुमानमल जी पारख, **9 -** प्राची जी कोचर, **अठाई -** शीला देवी मिन्नी, रक्षित जी सुराणा (9 वर्षीय), कमल जी पटवा, कांता जी बांठिया, कीर्ति जी सेठिया, भूमि जी नाहटा, मोनालिसा जी छल्लाणी
वर्षीतप प्रत्याख्यान	शांतिलाल जी बोथरा, सुरेंद्र जी डागा-इस्लामपुर, इंद्रा जी मेहता-बड़ीसादड़ी, आशा जी कोठारी-बेलगाँव
गाथा का स्वाध्याय	**सवा लाख -** लूणकरण जी सुराणा, कमला देवी सुराणा

-महेश नाहटा

आत्मा की व्याख्या करते हुए कहा है- **'अतति सततं ज्ञानगुणोपलब्धिं करोति इति आत्मा'** अर्थात् जो ज्ञानगुणों की निरंतर उपलब्धि करती है, वह आत्मा है। यहाँ **'अत्'** धातु जो गमनार्थक है, वह ज्ञानार्थक भी है क्योंकि जितनी भी गत्यर्थक धातुएँ होती हैं, वे ज्ञानार्थक भी होती हैं। अतः फलितार्थ यह है कि ज्ञान द्वारा यथाशक्ति, यथायोग्य पदार्थों को जानने वाली आत्मा है। आत्मा और ज्ञान का तादात्म्य संबंध है। इसलिए आत्मा का अस्तित्व रहने पर ज्ञान का अस्तित्व अवश्य ही रहता है। यही कारण है कि किसी भी आत्मा में ज्ञान का सर्वथा अभाव नहीं हो सकता। नंदीसूत्र में कहा है कि कर्मों का प्रगाढ़ आवरण रहने पर भी ज्ञान का अनंतवाँ भाग सभी जीवों में सदैव उद्घाटित रहता है। इसलिए प्रत्येक जीव को सुख-दुःख की अनुभूति होती है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

मुमुक्षु सुश्री निकिता जी संकलेचा

संक्षिप्त परिचय

निवासी	:	सेमरा, बेरला (छ.ग.)
जन्म तिथि	:	9 दिसंबर, 1996
वैराग्यकाल	:	लगभग 1 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	एम.कॉम. (पूर्वार्द्ध)
धार्मिक अध्ययन	:	प्रतिक्रमण, दशवैकालिक सूत्र 1, 2, जैन सिद्धांत बत्तीसी, श्रीमद् भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े, लघुदंडक, जीवधड़ा
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1 से 5
पदयात्रा	:	लगभग 200 कि.मी.
दीक्षा प्रसंग	:	30 अप्रैल 2025, गंगाशहर-भीनासर (राज.)

पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री मुकुनचंद जी-गोदिया बाई संकलेचा
पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री भंवरलाल जी-मैना बाई संकलेचा
चाचाजी-चाचीजी	:	स्व. श्री निर्मल जी-रेखा जी, मनीष जी-मोनिका जी संकलेचा
भाई-भाभी	:	योगेश जी-एकता जी, पीयूष जी-महक जी, नीरज जी, अमन जी, शुभ जी संकलेचा
बहन-बहनोई	:	खुशबू जी-शशांक जी बोथरा, कु. लघु संकलेचा
भतीजी, भतीजा	:	कु. रुचिका, भविक कुमार संकलेचा
भुआजी-फूफाजी	:	स्व. श्रीमती अंछी बाई-घेवरचंद जी बेगानी, चंदा बाई-खेमचंद जी चोपड़ा, बींदा बाई-स्व. श्री प्रकाशचंद जी कुचरिया, कंवरी बाई-स्व. श्री राजमल जी डागा, पायल जी-निर्मल जी बाफना
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री बंशीलाल जी-प्रेमलता जी गोलछा
मामाजी-मामीजी	:	संजय जी-सुशीला जी, योगेश जी-ऊषा जी, खुमेश जी-रितु जी गोलछा
मौसीजी-मौसाजी	:	राधा जी-सुभाष जी गांधी, मोहनी जी-टीकम जी बोहरा, चांदनी जी-दिलीप जी डागा, तारा जी-धनराज जी बुरड़, सरला जी-संतोष जी बरड़िया, सुनीता जी-आवेश जी संचेती

मुमुक्षु सुश्री श्रुति जी गांधी

संक्षिप्त परिचय

निवासी	: सूरत (गुजरात)
जन्म तिथि	: 10 अक्टूबर, 2003
वैराग्यकाल	: लगभग 4 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	: बारहवीं
धार्मिक अध्ययन	: पुच्छिसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 1 व 11वाँ अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, अष्ट प्रवचन माता, भिक्षा के 110 दोष, 67 बोल, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, कर्म प्रज्ञप्ति 1 से 4 अध्याय, भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े व अन्य थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	: आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षाएँ	: जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग-1, 2, जैन सिद्धांत भूषण, कोविद
तपाराधना	: बेला, तेला, अठाई
पदयात्रा	: लगभग 400 कि.मी.
दीक्षा प्रसंग	: 30 अप्रैल 2025, गंगाशहर-भीनासर (राज.)

पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	: स्व. श्री भंवरलाल जी-पारस देवी गांधी
पिताजी-माताजी	: प्रवीण जी-जयश्री जी गांधी
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	: दिनेश जी-शोभा जी गांधी
चाचाजी-चाचीजी	: राजेश जी-सुनीता जी, विनोद जी-तारा देवी गांधी
भाई-भाभी	: हार्दिक जी-सोनाक्षी जी, आयुष, जिगर, प्रमोद, विशाल, विपुल, नीरव, भावेश, चेतन
बहनें	: रिया, रचना, भूमिका
भुआजी-फूफाजी	: गौतम जी-स्नेहलता जी भटेवरा, भरत जी-रीटा जी भटेवरा, विमल जी-शशि जी बोलिया
नानाजी-नानीजी	: स्व. शोभालाल जी-लक्ष्मीबाई सहलोत
मामाजी-मामीजी	: गुलाबचंद जी-निर्मला जी, रमेशचंद जी-मधु जी, गौतम जी-स्व. श्रीमती सुनीता जी, अनिल जी- अरुणा जी, चंद्रेश जी-यशोदा जी, भावेश जी-सोनम जी, संजय जी सहलोत
मौसी जी-मौसा जी	: कला बाई-धर्मचंद जी दक, सोरम जी-चांदमल जी मांडोत, राणी जी-करणमल जी बाबेल, रेखा जी-गौतम जी मांडोत, कल्पना जी-ललित जी चौपड़ा
परिवार से दीक्षित	: स्मृतिशेष श्री कंवरचंद जी म.सा. (संसारपक्षीय बड़े नानाजी), स्मृतिशेष श्री भूपेंद्र मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय मामाजी), स्मृतिशेष साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा. (संसारपक्षीय भुआ नानीजी), स्मृतिशेष साध्वी श्री सुमनलता जी म.सा. (संसारपक्षीय मौसीजी), साध्वी श्री प्रकृति श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय मौसीजी), साध्वी श्री रामनेमि श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहन)

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु श्री मयंक जी सोनावत

मूल निवासी	:	भीनासर, जिला बीकानेर (राजस्थान)
प्रवासी	:	हैदराबाद (तेलंगाना)
जन्म तिथि	:	12 नवंबर, 2009
वैराग्यकाल	:	लगभग 2 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	10वीं उत्तीर्ण
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 1-4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का पहला अध्ययन कंठस्थ, गमक, लघुदंडक, जीवधड़ा, गति-आगति एवं अन्य थोकड़ों का अध्ययन
पदयात्रा	:	लगभग 350 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि	:	4 जून, 2025, बीकानेर

मुमुक्षु श्री हार्दिक जी सोनावत

मूल निवासी	:	भीनासर, जिला बीकानेर (राजस्थान)
प्रवासी	:	हैदराबाद (तेलंगाना)
जन्म तिथि	:	22 जून, 2012
वैराग्यकाल	:	लगभग 2 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	7वीं उत्तीर्ण
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 1-3 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र कुछ गाथाएँ कंठस्थ, श्रमण प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी तथा कुछ थोकड़ों का अध्ययन
पदयात्रा	:	लगभग 350 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि	:	4 जून, 2025, बीकानेर

पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	:	स्व.श्री मोतीलाल जी-स्व.श्रीमती मखु देवी सोनावत
दादाजी-दादीजी	:	स्व.श्री देवचंद जी-सुशीला देवी सोनावत
पिताजी-माताजी	:	विनीत जी-मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी सोनावत
बड़े पिताजी-माताजी	:	विनोद जी-निर्मला जी, विकास जी-प्रमिला जी सोनावत
भाई, बहन	:	मेहुल, वैभव, कुणाल, सक्षम, हर्ष, खुशी, लिपि, काव्या, सिद्धि
नानाजी-नानीजी	:	शांतिलाल जी-जेठी देवी बैद
मामाजी-मामीजी	:	प्रदीप जी-मीतू देवी, पवन जी-मंजू देवी बैद

मुमुक्षु
श्री मयंक जी सोनावत

मुमुक्षु
श्री हार्दिक जी सोनावत

विशेष : आपके साथ ही आपकी माताजी मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी सोनावत की दीक्षा भी संभावित

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी सोनावत

मूल निवासी	:	भीनासर, जिला बीकानेर (राजस्थान)
जन्म तिथि	:	22 अगस्त, 1985
वैराग्यकाल	:	लगभग 2 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम.
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, श्रमण प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, गति-आगति, कुछ अन्य थोकड़े
धार्मिक परीक्षाएँ	:	1 से 4
पदयात्रा	:	लगभग 100 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि	:	4 जून, 2025, बीकानेर

पारिवारिक परिचय

दादाससुरजी-दादीसासजी	:	स्व.श्री मोतीलाल जी-स्व.श्रीमती मखु देवी सोनावत
ससुरजी-सासजी	:	स्व.श्री देवचंद जी-सुशीला देवी सोनावत
धर्मसहायक	:	विनीत जी सोनावत
जेठजी-जेठानीजी	:	विनोद जी-निर्मला जी, विकास जी-प्रमिला जी सोनावत
पुत्र	:	मुमुक्षु मयंक जी, मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत

पीहर पक्ष

दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री सच्चियालाल जी-अणदी देवी बैद
पिताजी-माताजी	:	शांतिलाल जी-जेठी देवी बैद
भाई-भाभी	:	प्रदीप जी-मीतू जी, पवन जी-मंजू जी बैद
भतीजा, भतीजी	:	मेहुल, कुणाल, लिपि, काव्या, सिद्धि बैद
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री जतनलाल जी-जमना देवी कोठारी
मामाजी-मामीजी	:	मूलचंद जी-पुष्पा देवी, मोहनलाल जी-सरला देवी, विजयराज जी-कुसुम देवी, हड़मानमल जी-सुधा देवी कोठारी

विशेष : आपके साथ ही आपके दोनों पुत्रों- **मुमुक्षु श्री मयंक जी सोनावत** एवं **मुमुक्षु श्री हार्दिक जी सोनावत** की दीक्षा भी संभावित

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री नेहा जी डोसी

निवासी	:	डौंडीलोहारा, जिला बालोद (छत्तीसगढ़)
प्रवासी	:	बालेसर (राजस्थान)
जन्म तिथि	:	3 जुलाई, 1996
वैराग्यकाल	:	लगभग 1 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम. प्रथम वर्ष
धार्मिक अध्ययन	:	पुच्छिंसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 1 से 4, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का 11वाँ अध्ययन, उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ, जैन सिद्धांत बत्तीसी, अष्ट प्रवचन माता, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, 102 बोल का बासठिया
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं, शिविर- अभिमोक्षम्, उन्नयन, मोक्षार्थी, मुमुक्षु
तपाराधना	:	तेला, पाँच, नौ, बारह
पदयात्रा	:	लगभग 200 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि	:	4 जून, 2025, बीकानेर

पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	:	स्व. श्री तखतमल जी-स्व. श्रीमती बिदामी बाई डोसी
दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री प्रेमराज जी-स्व. श्रीमती तारा देवी डोसी
पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री महेंद्र जी-निर्मला जी डोसी
बड़े पिताजी-बड़ी माताजी	:	गुलाबचंद जी-पारस बाई, फूलचंद जी-पुष्पा जी, अनोपचंद जी-ज्योति जी, रिखबचंद जी-मधु जी डोसी
चाचाजी-चाचीजी	:	विनोद जी-अनिता जी डोसी
भाई-भाभी	:	दिनेश जी-सुनीता जी, कमलेश जी-पूनम जी, प्रफुल्ल जी-पूनम जी, अरुण जी-ममता जी, अमित जी-भारती जी, सौरभ जी-अनिशा जी, नितिन जी-ममता जी, राहुल जी डोसी
बहन-बहनोई	:	समता जी-तरुण जी बाघमार, साधना जी-रमेश जी भंडारी, श्रद्धा जी-सौरभ जी सांखला, स्वीटी जी-नितेश जी बोथरा, सुमन जी-नितिन जी बरड़िया, डिंपल जी-रमेश जी नाहटा, मेघा, भाविका, भूमिका डोसी
भुआजी-फूफाजी	:	सुशीला जी-सुरेशचंद जी बैद, मंजू जी-धर्मचंद जी बाफना
भतीजा, भतीजी	:	स्नेहा, सेजल, स्पर्श, शौर्य, तनिष्क, हर्ष, वान्या, आदि, यौगिक, आगम डोसी
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री लूणकरण जी-अमोनी देवी दुग्गड़
मामाजी-मामीजी	:	पारसमल जी-रेखा जी दुग्गड़
मौसीजी-मौसाजी	:	स्व. श्रीमती कमला बाई-सोहनराज जी चौपड़ा, चंपा बाई-रेखचंद जी गुलेच्छा, राधा जी-सुभाषचंद जी छाजेड़, आशा जी-केशरीचंद जी डोसी, मोहनी जी-मोहनलाल जी टाटिया, किरण जी-प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल, लता जी-अशोकचंद जी बोहरा, अनिता जी-महेंद्र जी तलेसरा

मुमुक्षु सुश्री साक्षी जी भंसाली

संक्षिप्त परिचय

निवासी	:	डौंडीलोहारा, जिला बालोद (छत्तीसगढ़)
जन्म तिथि	:	30 नवंबर, 1998
वैराग्यकाल	:	लगभग 2 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम. फाइनल
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 4, पुच्छिंसु णं, उववाई सूत्र की 22 गाथाएँ, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े, भगवती सूत्र के थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, जैन सिद्धांत बत्तीसी
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं, **शिविर-** उन्नयन, मुमुक्षु, मोक्षार्थी, आरोहणा
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1-3, श्रुत आरोहक प्रथम, 50 थोकड़ा, तत्व का ताला ज्ञान की कुँजी का थोकड़ा
तपाराधना	:	15, 11, एकासना का मासखमण
पदयात्रा	:	लगभग 300 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि	:	4 जून, 2025, बीकानेर

पारिवारिक परिचय

दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री चंपालाल जी-स्व. श्रीमती सुंदर देवी भंसाली
पिताजी-माताजी	:	लूनकरण जी (राजू)-ललिता जी भंसाली
बड़े पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री दीपचंद जी-स्व. श्रीमती धन्नी देवी, स्व. श्री टोडरमल जी-संतोष देवी, भागचंद जी-ऊषा देवी भंसाली
चाचाजी	:	स्व. श्री संजय जी, स्व. श्री संतोष कुमार जी भंसाली
भाई-भाभी	:	प्रेमचंद जी-जूली जी, नरेंद्र जी-राखी जी, विजय जी-तारिका जी, अमित जी-नीता जी, मुकेश जी-दिव्या जी, सुमित जी-सोनम जी, रजत जी-जूही जी, जयंत जी-मुस्कान जी, राहुल जी भंसाली
बहन-बहनोई	:	विद्या जी-राजेश जी पारख (दुर्ग), वीणा जी-विनय जी चोपड़ा (मुंगेली), ज्योति जी-निखिल जी ओस्तवाल (खैरागढ़), आयुषी भंसाली
भुआजी-फूफाजी	:	ढेला बाई-स्व. श्री महावीर जी संचेती (दुर्ग), निर्मला देवी-नरेंद्र जी बरड़िया (धमतरी)
भतीजा, भतीजी	:	अरिहंत, आर्ची, डाली, अंतरा, लाडो, आन्या, हार्दिक, अनंत, चहल, लवीश, आदिश, लव्या, चैत्य, नेहल
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री शांतिलाल जी-पतासी बाई नाहर (नांदगाँव)
मामाजी-मामीजी	:	राजेश जी-कंचन देवी, हुलास जी-अनिता देवी, नरेश जी-इंद्रा देवी नाहर
परिवार से दीक्षित	:	श्री प्रमोद मुनि जी म.सा., श्री रामसौरभ मुनि जी म.सा., साध्वी श्री सुवृष्टि श्री जी म.सा., साध्वी श्री शारदा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री लक्षिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री यशस्वी श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनस्वी श्री जी म.सा. (साधुमार्गी संप्रदाय), साध्वी श्री चंद्रकांता श्री जी म.सा. (देवलोक), साध्वी श्री अंजना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुधा श्री जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

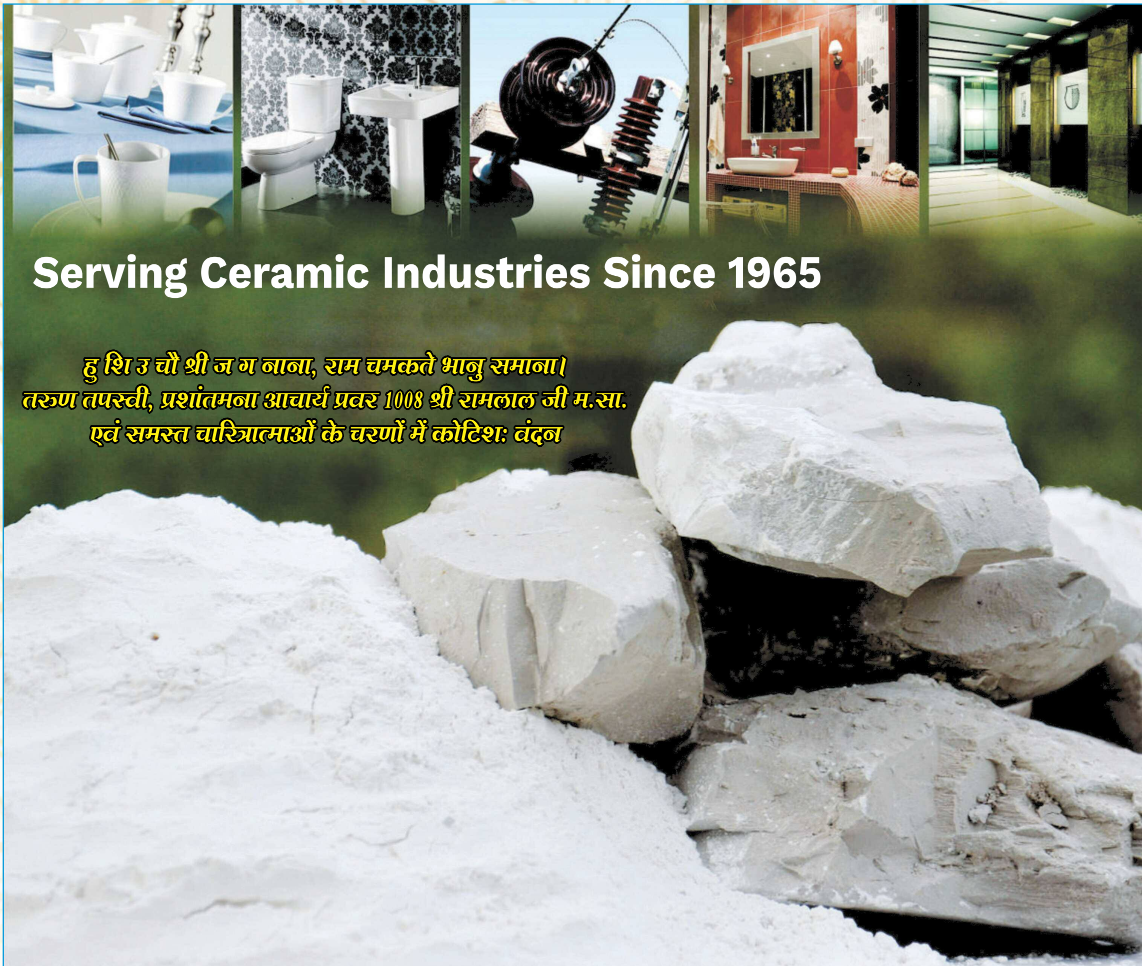

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

PRESENTING
SIPANI CITY
A 70 ACRE TOWNSHIP - MADAPPANAHALLI VILLAGE, ANEKAL TALUK, BENGALURU.

YOUR DREAM HOME, A NEW LIFE FOR MANY.

90% OF PROFIT GOES TO CHARITY.

70 ACRES OF EVERYTHING YOU NEED - HOMES, HEALTHCARE, EDUCATION & MORE!

1 CLUSTER - 1 HIGH RISE APARTMENT
Land area -10 acres 31 guntas

2 CLUSTER - 2 HIGH RISE APARTMENT
Land area 14 acres 30 guntas

3 CLUSTER - 3 HIGH RISE APARTMENT
Land area 5 acres 10 guntas

4 CLUSTER - 4 HIGH RISE APARTMENT
Land area 10 acres 12.2 guntas

5 CLUSTER - 5 HIGH RISE APARTMENT
Land area 16 acres 14.37 guntas

6 06 - EWS HOUSING
Land area 2 acres 4.77 guntas

7 COMMERCIAL / OFFICE
Land area 6 acres 17.63 guntas

8 SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 4, 5 & 6
Land area 1 acres 21.20 guntas

9 PLAYSCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 1
Land area 0.54 acres 21.55 guntas

10 HOSPITAL - IN CA SITE OF LAND CLUSTERS 2 & 3
Land area 1 acres

Sipani City - A Township Promoted by Sipani Properties

"An Ode of Humanity..."

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ		9602026899
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ		7231933008
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)		8535858853

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्रीसंघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केंद्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना अवश्य देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.: 7073311108 (WhatsApp)

संघ में आपके सहयोग एवं सदस्यता की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने व ऑनलाइन भुगतान करने हेतु नीचे दिए लिंक पर क्लिक करें।

https://donorportal.sadhumargi.com/login

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
52 RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond® Duroflex
Diamond® DUROLON

DURO RING
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact

LEAK PROOF

NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO
IS 15778 : 2007 CM/L NO : 2526149

ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE

cftri CERTIFIED

UV STABILIZED

LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

@absjainsangh
www.facebook.com/HOSadhumargi

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,650

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261